शिवना साहित्य समागम- सीहोर लिटरेचर फ़ेस्टिवल
तथा अलंकरण समारोह पर विशेष सामग्री इस अंक में

RNI NUMBER :- MPHIN/2016/67929
ISSN NUMBER : 2455-9717

शिवना साहित्यिकी

शोध, समीक्षा तथा आलोचना की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
वर्ष : 11, अंक : 41, अप्रैल-जून 2026
मूल्य 50 रुपये

सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल

शिवना साहित्य समागम

शिवना सम्मान समारोह की तस्वीरें

संरक्षक एवं सलाहकार संपादक
सुधा ओम ढींगरा

संपादक
पंकज सुबीर

कार्यकारी संपादक एवं क़ानूनी सलाहकार
शहरयार (एडवोकेट)

सह संपादक
शैलेन्द्र शरण, आकाश माथुर

डिज़ायनिंग
सनी गोस्वामी, सुनील पेरवाल, शिवम गोस्वामी

संपादकीय एवं प्रकाशकीय कार्यालय
पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
दूरभाष : +91-7562405545
मोबाइल : +91-9806162184 (शहरयार)
ईमेल- shivnasahityiki@gmail.com

ऑनलाइन 'शिवना साहित्यिकी'
http://www.vibhom.com/shivnasahityiki.html
फेसबुक पर 'शिवना साहित्यिकी'
https://www.facebook.com/shivnasahityiki
एक प्रति : 50 रुपये, (विदेशों हेतु 5 डॉलर $5)
सदस्यता शुल्क
3000 रुपये (पाँच वर्ष), 6000 रुपये (दस वर्ष)
11000 रुपये (आजीवन सदस्यता)
बैंक खाते का विवरण-
Name: Shivna Sahityiki
Bank Name: Bank Of Baroda,
Branch: Sehore (M.P.)
Account Number: 30010200000313
IFSC Code: BARB0SEHORE

संपादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक, अव्यावसायिक। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर माह में प्रकाशित होगी। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सीहोर (मध्य प्रदेश) रहेगा।

शिवना प्रकाशन

शिवना साहित्यिकी

शोध, समीक्षा तथा आलोचना की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 11, अंक : 41, त्रैमासिक : अप्रैल-जून 2026
RNI NUMBER :- MPHIN/2016/67929
ISSN : 2455-9717

आवरण तथा
आयोजन के छायाचित्र
राहुल पुरविया

स्वत्वधिकारी एवं प्रकाशक पंकज कुमार पुरोहित के लिए पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001 से प्रकाशित तथा मुद्रक जुबैर शेख़ द्वारा शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, जोन 1, एम पी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश 462011 से मुद्रित।

इस अंक में

संपादकीय

अकेले चले थे कारवाँ बनता गया
शहरयार / 3

व्यंग्य चित्र / काजल कुमार / 5

शिवना साहित्य समागम- 'सीहोर लिटरेचर फ़ेस्टिवल 2026' पर विशेष सामग्री

संस्मरण

फाग के रंग-रस से भरा आत्मीय आयोजन : शिवना साहित्य समागम
मनीषा कुलश्रेष्ठ / 6

सच में पीहर / आराधना तिवारी / 8

क़स्बे में शब्दों का वसन्त : शिवना साहित्य समागम
विनय उपाध्याय / 9

सीहोर का उभरना / स्मृति आदित्य / 10

रपट

फाग और लोक संस्कृति की तान से गूँजा शिवना साहित्य समागम
आकाश माथुर / 11

एक यात्रा, अनगिनत मुलाकातें, बेशुमार यादें
नैवेद्य पुरोहित / 13

प्रतिक्रियाएँ

शिवना साहित्य समागम पर अतिथियों की प्रतिक्रियाएँ
प्रज्ञा पांडे, गोविन्द शर्मा, दिव्या माथुर, ममता सिंह, पल्लवी त्रिवेदी, मुकेश नेमा, अरुण सातले, डॉ. विजय सक्सेना, लीलाधर मंडलोई, प्रेम जनमेजय, गौतम राजऋषि, शैली खड़कोतर, शिखा वार्ष्णेय, मोहन वर्मा, देवमाल्य बैनर्जी / 16

'वामा' इंदौर सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ
ज्योति जैन, डॉ. दीपा मनीष व्यास, डॉ. गरिमा संजय दुबे, पद्मा राजेंद्र, तनुजा चौबे, डॉ. यशोधरा भटनागर, अर्चना मंडलोई, वैजयंती दाते, अमिता मराठे, इंदु पाराशर, अमर खनूजा चड्ढा, डॉ. रेखा मंडलोई 'गंगा', प्रीति मकवाना, रश्मि चौधरी, अंजना सक्सेना, वृंदा उइके, शैला अजबे, आशा मुंशी, अवंति श्रीवास्तव / 22

'लिटरेचर क्लब देवास' के सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ
मनीष वैद्य, मनीष शर्मा, अमेय कान्त, रश्मि शर्मा, संजय जोशी, कृपाली राणा, मीनाक्षी दुबे, सुमन कुमावत, शिल्पी जैन, नीलम दुबे, शांतनु बेहरे, संदीप भटनागर, शर्मिला ठाकुर, बिंदु तिवारी / 34

केंद्र में पुस्तक

एक पुराना मौसम लौटा
समीक्षक : डॉ. मधु संधु, ज्योति जैन, स्मृति आदित्य, पारुल सिंह
लेखक : शहरयार / 42

पुस्तक समीक्षा

लीला
समीक्षक : दीपक गिरकर
लेखक : लक्ष्मी शर्मा / 47

सुर
समीक्षक : आशा दुबे
लेखक : नीलिमा शर्मा / 49

पंगा
समीक्षक : दीपक गिरकर
लेखक : दिव्या माथुर / 52

अपने समय के साक्षी
समीक्षक : नीरज दइया
लेखक : नंद भारद्वाज / 54

टेसू लेके ही टरे
समीक्षक : दीपक गिरकर
लेखक : रेखा राजवंशी / 57

सपने मरते नहीं
समीक्षक : डॉ. मधु संधु
लेखक : तेजेन्द्र शर्मा / 59

बीज और आकाश
समीक्षक : सृष्टि उपाध्याय
लेखक : ममता सिंह / 61

अपने अपने बुर्ज ख़लीफ़ा
समीक्षक : दीपक गिरकर
लेखक : जयंती रंगनाथन / 63

पुस्तक आलोचना

उम्मीद की तरह लौटना तुम
समीक्षक : तिलक राज कपूर
लेखक : पंकज सुबीर / 65

शोध आलेख

समकालीन कथा साहित्य में पंकज सुबीर का योगदान
डॉ. अमित कुमार / 70

शिवना साहित्यिकी

शोध, समीक्षा तथा आलोचना की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 11, अंक : 41,

त्रैमासिक : अप्रैल-जून 2026

संपादकीय

'शिवना साहित्य समागम' अकेले चले थे, कारवाँ बनता गया

शहरयार
शिवना प्रकाशन, पी. सी. लैब,
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र.
466001,
मोबाइल- 9806162184
ईमेल- shaharyarcj@gmail.com

जब दिल की बातें शब्दों का रूप लेती हैं, तो 'शिवना साहित्य समागम' जैसे यादगार आयोजन बनते हैं। पिछली 28 फ़रवरी और 1 मार्च को हुआ यह समागम केवल लेखकों और विचारकों की भीड़ नहीं थी, बल्कि एक परिवार में कैसे शुभ कार्य होते हैं उसका अनूठा उदाहरण है। जिसमें पूरा परिवार एक साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़ा था। चाहे वे लेखक हों या ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की बेटीयाँ हों या मंच के पीछे खड़ा हमारा शिवना परिवार। यह शब्दों का एक ऐसा त्यौहार था जिसने हर किसी के मन को छू लिया। कार्यक्रम की शुरुआत जब दीप जलाकर हुई, तो पूरे सिद्धपुर सभा मंडप का माहौल भक्ति और ज्ञान की रोशनी से भर गया। ऐसा लग रहा था मानों दीपक ने सभी को उर्जा से लबरेज़ कर दिया हो।

जैसे-जैसे आयोजन की तारीख़ नज़दीक आ रही थी, मेरे भीतर एक अजीब सी बेचैनी पनपने लगी थी। आलम यह था कि आँखों से नींद कोसों दूर थी और अगर आँख लगती भी, तो सपनों में भी बस आयोजन की तैयारियाँ ही चलती रहतीं। इतनी घबराहट होना लाज़मी भी था, क्योंकि सीमित संसाधनों के साथ हम पहली बार इतना बड़ा आयोजन कर रहे थे। मन के किसी कोने में यह डर लगातार बना रहता था कि कहीं कोई चूक न हो जाए, कहीं किसी अतिथि के सत्कार में कोई कमी न रह जाए।

लेकिन कहते हैं न कि जब इरादे नेक हों, तो राहें खुद-ब-खुद बन जाती हैं। मेरा परिवार इस मज़बूती और मुस्तैदी के साथ मेरे साथ खड़ा रहा कि पता ही नहीं चला कि वे दो दिन कब और कैसे गुज़र गए। परिवार... पूरा 'शिवना परिवार' जिसने इस आयोजन को अपना मानकर कँधे से कँधा मिलाया। यह कार्यक्रम पूरी तरह से लिटरेचर पर केंद्रित करने की कोशिश की थी। शायद इसीलिए यह व्यवसायिक नहीं था। क्योंकि, शिवना प्रकाशन परिवार का रिश्ता अब व्यावसायिकता की सीमाओं को लाँघ चुका है। आज कई लेखिकाओं के लिए यह एक प्रकाशन गृह कम और उनका 'अपना मायका' ज़्यादा है। यहाँ आकर जो सुकून और सम्मान मिलता है, वह किसी के घर लौटने जैसा ही है। जब इस बार समागम में आने का स्नेहिल 'आदेश' दिया, तो उसमें अधिकार भी था और प्रेम भी। उस पुकार में ऐसी आत्मीयता थी कि सभी लेखिकाएँ अपनी व्यस्तताओं को छोड़कर ऐसे खिंची चली आईं, जैसे "कोई बेटी अपने मायके की चौखट चूमने के लिए बेकरार हो।"

सीमित संसाधनों से शुरू हुआ यह आयोजन कब इतना बड़ा हो गया पता नहीं चला। 'मज़रूह सुल्तानपुरी' ने सही कहा है "लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया" एक छोटे से बुलव्वे (शुभ कार्य के लिए हमारे यहाँ बुलव्वा फ़िरता है) पर देखते-देखते सौ से ज़्यादा साहित्यकार इस आयोजन में शामिल होने देश विदेश से सीहोर आ पहुँचे। इतने बड़े आयोजन को सफल बनाना कोई आसान काम नहीं था। हमारी टीम पिछले कई महीनों से दिन-रात एक कर रही थी। मेहमानों के रुकने से लेकर, खाने में क्या नया हो, शुरुआत कैसे हो, सामपन कैसे हो, चर्चा के विषयों को चुनने तक, हर छोटी बात पर बारीकी से ध्यान दिया जा रहा था। टीम के हर सदस्य ने एक परिवार की तरह काम किया, तभी हम इस कार्यक्रम को बिना किसी रुकावट के पूरा कर पाए।

समागम के लिए बनाई गई अयोजन समिति जिनके नाम हमने अपने प्रेम-अधिकारों का प्रयोग कर, ले लिये थे। जिसमें सुधा ओम ढींगरा जी, यतीन्द्र मिश्र जी, मनीषा कुलश्रेष्ठ जी, यशपाल शर्मा जी, ज्योति जैन जी, अखिलेश राय जी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनकी उँगली थामकर यह आयोजन सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता गया और एक यादगार पड़ाव पर पहुँचा।

हम उन सभी प्रतिष्ठित अतिथियों के आभारी हैं, जिन्होंने शिवना का निमंत्रण और सम्मान स्वीकार कर इस आयोजन की शोभा बढ़ाई। इस समागम की सफलता उन सभी के नाम है, जिन्होंने इसके पीछे निस्वार्थ भाव से कार्य किया। मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह समागम सफलता की सीढ़ियों को पार कर आज इस

संपादकीय

यह कलाओं का कठिन समय है, ऐसे में समावेशी उत्सवों का आयोजन करना ही होगा। जहाँ केवल साहित्य की ही बात न हो, बल्कि जहाँ दूसरी कलाएँ भी उपस्थित हों, जहाँ लोक-जीवन और लोक-संस्कृति की भी झलक दिखाई दे। साहित्य बिना लोक के अधूरा है, उसी तहर साहित्य के उत्सव भी बिना लोक-संस्कृति के अपूर्ण हैं, अधूरे हैं।

गरिमामय मुकाम तक जा पहुँचा है। आपके अनुभव और सुझावों ने ही हमें वह दिशा दी, जिससे हम संसाधनों की कमी को जज़्बे से पूरा कर पाए।

मैं उन सभी सम्मानित सदस्यों का भी विशेष धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने शिवना का यह सम्मान और निमंत्रण स्वीकार कर हमें कृतज्ञ किया। मंच पर आपकी उपस्थिति ने न केवल इस आयोजन की शोभा बढ़ाई, बल्कि नए लेखकों को एक नई प्रेरणा भी दी। आपकी उपस्थिति ही वह ऊर्जा थी जिसने इन दो दिनों को यादगार बना दिया।

क्रिसेंट ग्रुप ऑफ़ होटल्स तथा उसके ओनर श्री अखिलेश राय, वामा साहित्य मंच इंदौर, देवास लिटरेचर क्लब, ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल, ब्लू बर्ड स्कूल सीहोर, स्मार्ट सिटी हॉस्पिटल भोपाल, विस्तार न्यूज़ भोपाल, दूरदर्शन भोपाल, माय एफएम भोपाल, आईएनडी24 न्यूज़ चैनल भोपाल सभी का बहुत धन्यवाद।

समागम के उन दो दिनों में प्रकृति भी अपना रंग बदल रही थी। फागुन की सुगबुगाहट बढ़ गई थी और हवाओं में एक अनजानी सी मस्ती घुलने लगी थी। इस फागुनी माहौल को और भी यादगार बनाने के लिए हमने कार्यक्रम का समापन 'फाग गायन' के साथ किया। जब ढोल और मंजीरों की थाप पर फाग के स्वर गूँजे, तो पूरा सिद्धपुर सभा मंडप झूम उठा। वह केवल एक गायन नहीं था, बल्कि वह खुशी थी उस सफल आयोजन की, जो हमने एक परिवार बनकर पूरा किया था। फागुन की उस सुरीली शाम के साथ जब विदाई की बेला आई, तो आँखें नम थीं पर दिल सुनहरी यादों से भरा हुआ था।

समागम भले ही समाप्त हो गया है, लेकिन इसकी गूँज और यहाँ से मिले विचार लंबे समय तक हमारे भीतर बने रहेंगे। हमने सीखा कि साहित्य केवल पन्नों पर नहीं, बल्कि लोगों के दिलों और रिश्तों में बसता है। संसाधन सीमित हो सकते हैं, पर यदि परिवार और मित्रों का साथ हो, तो कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होता।

शिवना का यह कारवाँ रुकने वाला नहीं है। यह तो बस एक पड़ाव था, मंज़िल अभी और आगे है। उन सभी का पुन: धन्यवाद जिन्होंने इस सपने को सच करने में अपना योगदान दिया।

इस अंक में शिवना साहित्य समागम- सीहोर लिटरेचर फ़ेस्टिवल की सामग्री द्वारा आधे से अधिक स्थान ले लिये जाने के कारण इस अंक हेतु आई हुई अधिकांश समीक्षाएँ नहीं ली जा सकी हैं। ये सारी हमारे पास सुरक्षित कर ली गई हैं तथा ये सारी समीक्षाएँ अगले अंक में ली जाएँगी। इस अंक में इनको नहीं ले सकने हेतु हम क्षमाप्रार्थी हैं। संपादक मंडल अपने उन सभी समीक्षकों के, आलोचकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता है, जो पत्रिका के लिए निरंतर समीक्षाएँ, आलोचनाएँ, शोध-आलेख भेज रहे हैं। इस निरंतरता के कारण ही हम पत्रिका के वर्तमान स्वरूप को बरकरार रख पा रहे हैं। इस अंक में शिवना साहित्य समागम पर विशेष सामग्री दी जा रही है। दो दिवसीय उत्सव को आप तक पहुँचाने का यह प्रयास है।

पत्रिका के बनते समय ही दुखद समाचार आया कि हिन्दी फ़िल्म संगीत की महत्त्वपूर्ण गायिका आदरणीय आशा भोसले जी का देहावसान हो गया है। आशा जी का जाना सिने-संगीत के श्रोताओं के लिए एक अपूरणीय क्षति है। आशा जी की देह भले ही अब नहीं है किन्तु उनके गाए हुए गीत अमर हैं तथा कई सदियों तक श्रोताओं के कानों में अपने माधुर्य की मिश्री घोलते रहेंगे। उनके गाए हुए गीत अब हमारी एक अनमोल सुरीली धरोहर हैं। शिवना परिवार, शिवना साहित्यिकी, विभोम स्वर की ओर से आदरणीय आशा भोसले जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

आपका ही

शहरयार

व्यंग्य चित्र-

काजल कुमार
kajalkumar@comic.com

(संस्मरण)

फाग के रंग-रस से भरा आत्मीय आयोजन : शिवना साहित्य समागम

मनीषा कुलश्रेष्ठ

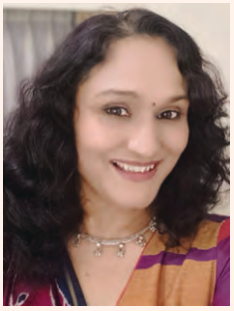

मनीषा कुलश्रेष्ठ
मकान नंबर 10, गली नंबर 18,
सड़क नंबर 19, सेंट्रल पार्क,
नॉर्थ एवेन्यू बी, वाटिका इन्फ़ोटेक सिटी
जयपुर, राजस्थान 302026
मोबाइल- 9911252907
ईमेल- manishakuls@gmail.com

जनवरी में ही सीहोर से बुलावा या गया था, मनुहार पाती संग। बल्कि 'शिवना साहित्य समागम' की आयोजन समिति में साधिकार पंकज ने शामिल कर लिया था। शिवना प्रकाशन तथा ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के आयोजित अनेक सार्थक कामों और आयोजनों की यह अगली कड़ी था। 28 फरवरी और एक मार्च दो हज़ार छब्बीस को सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल यानि शिवना साहित्य समागम का आयोजन था। मैं अट्ठाईस फरवरी को ही सुबह-सुबह चैन्नई से भोपाल पहुँची थी, भोपाल एयरपोर्ट से सीहोर जाते हुए प्रिय लेखक और कवि यतीन्द्र मिश्र का साथ मिल गया तो समय का पता ही नहीं चला। सीहोर का रास्ता भी मनोरम और हरियाली से भरा है। सीवन नदी के तट पर स्थित बसा यह शहर, विंध्य पर्वतमाला के उत्तरी किनारे पर बसा है। पहले 'सिद्धपुर' के नाम से जाना जाने वाला यह शहर प्राचीन ऐतिहासिक महत्त्व के मंदिरों का केंद्र है। मौसम में फगुनाहट घुली हुई थी।

हम पहुँचे इंदौर भोपाल बायपास पर स्थित क्रिसेन्ट रिसॉर्ट एंड क्लब के मनमोहक परिसर में। एक बार पहले भी मैं शिवना के एक आयोजन में यहाँ ठहर चुकी थी। यह जगह और सुंदर हो गई थी अब, अधिक सुविधाओं से सम्पन्न। पहुँचे तो पंकज सुबीर ने आत्मीयता से स्वागत किया, क्योंकि साहित्योत्सव का उद्घाटन शीघ्र ही होना था तो हम अपने कमरों में तैयार होने भागे। रास्ते में आत्मीय मित्र-परिचित मिलते रहे। सबसे संक्षिप्त अभिवादन के साथ क्षमा माँगी। सीहोर साहित्योत्सव की सजावट और गहमा-गहमी मुझे बहुत उत्साहित कर रही थी, एक तरफ़ रेस्तराँ में नाश्ता चल रहा था, दूसरी तरफ़ चाय-कॉफी, पोस्टर्स के साथ पुस्तकों का मेला। कॉलेजों के बच्चे वॉलेंटियर बने दौड़-भाग कर रहे थे। लड़कियाँ रँगोली बना रही थीं। जैसी कि मालवी संस्कृति की विशेषता है, आत्मीय आवभगत। हर कोई आपकी सहायता को तत्पर।

शिवना के आयोजन मेरे लिए आत्मीय आयोजन होते हैं, पंकज सुबीर, शहरयार सहित शिवना परिवार का हर सदस्य जिस तरह हर अतिथि का स्वागत कर रहे थे, हर व्यक्ति उस स्नेह-संक्रमण से ग्रसित हुए बिना नहीं रह सकता था। माँ सरस्वती के मंदिर में अर्चना के साथ उद्घाटन हुआ, सभी गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित किए। जाने क्यों इन साहित्यिक औपचारिकताओं में भी एक नयापन महसूस हो रहा था।

समय से सत्र आरंभ हुए, मैं खुले सभागार में ही बतौर श्रोता बैठ गई। सिद्धपुर सभामंडप में पहले दिन पहला सत्र था- धर्म और साहित्य का अंतर्संबंध, इस विषय पर मैं यतीन्द्र को सुनना चाहती थी, मगर हमारे सबके प्रिय संचालक विनय उपाध्याय के संचालन का आकर्षण भी काम नहीं था। विनय जी ने बहुत जिज्ञासा जगाने वाले सवाल किए। यतीन्द्र और डॉ. विकास दवे तो शानदार वक्ता हैं हीं, मेरे लिए चकित करने वाला वक्तव्य रहा जगतगुरु पंडित अजय पुरोहित जी का। वे सटीक वैज्ञानिक उदाहरणों के साथ गीता उल्लेखित अनश्वर आत्मा और अनश्वर ऊर्जा की अवधारणा पर बात कर रहे थे। यहाँ धर्म का अर्थ एकदम संकीर्ण नहीं था, तमाम तरह के धर्म और दर्शनों के साथ साहित्य के अंतर्संबंध पर बात हुई, मैहर घराने के संस्थापक उस्ताद बाबा अलाउद्दीन ख़ान की माँ सरस्वती के प्रति आस्था से लेकर सूफ़ीज़्म पर यतीन्द्र हमेशा की तरह अनूठा बोले। तीन चार जगह एक से एक सत्र चल रहे थे, अब कहाँ जाया जाए? अगला सत्र साहित्य और सिनेमा पर था और मंच पर थे फिल्म अभिनेता यशपाल शर्मा फ़िल्म निर्देशक इरफ़ान ख़लील ख़ान और प्रतिभा सुमन शर्मा, संचालन आकाश माथुर और अंकुर परसाई कर रहे थे। मैं सत्र का आनंद ले रही थी कि मेरा बुलावा आ गया- ब्लू बर्ड स्कूल के बच्चों के साथ एक सत्र था। बच्चे कमाल की तैयारी के साथ आए थे। मंच पर मेरे साथ यतीन्द्र मिश्र, यशपाल जी उनकी पत्नी प्रतिभा जी, युवा लेखक शायर कर्नल गौतम राजऋषि भी थे। हमारे सामने थीं लेखक बनने को लेकर बच्चों की जिज्ञासाएँ। बच्चे जितना सीखते हैं उतना सिखा जाते हैं।

मेरा ध्यान जिस सत्र ने आकर्षित किया वह था 'थर्ड जेंडर का जीवन संघर्ष' इसका संचालन पारुल सिंह और पंखुरी पुरोहित ने किया। इस सत्र में महामंडलेश्वर संजना सखी दर्शकों से मुख़ातिब थीं। उनका जीवन, उनके संघर्ष, प्रताड़नाएँ वे सब खुल कर साझा कर रही थीं कि

कैसे उन्हें घर से निकाल दिया गया, भाई ने बाहर का रास्ता दिखाया, माँ ने भी हाथ जोड़ लिए इसे याद करते हुए वे कहती हैं, "वह मेरे जीवन का सबसे दुखद पल था। लेकिन आज वही मेरे लिए सुखद भी है, क्योंकि अगर वो पल न होता तो मैं आज यहाँ नहीं होती।"

थर्ड जेंडर को लेकर समाज में स्वीकृति और जागरूकता की अब भी कितनी ज़रूरत है। पारुल तो मँझी हुई संचालक हैं ही, युवा पंखुरी पुरोहित के संचालन और सवालों ने मुझे चकित किया कि आज की युवा पीढ़ी इतनी जागरूक है तो एक समय आएगा जब जेंडर्स को लेकर भेदभाव इस समाज से कम ज़रूर हो जाएगा।

तीनों सभागारों में वैचारिक और साहित्यिक मंथन चल रहे थे, वहीं समानांतर विविध शहरों से आए साहित्यिक मित्र एक दूसरे के सैशन में बैठने के साथ फुरसत निकाल कर यहाँ-वहाँ बैठकी कर रहे थे। चाय पर गप-शप। हर सैशन में तो हुआ नहीं जा सकता था मगर मेरा प्रयास था की अपनी रुचि के सैशन ज़रूर सुनूँ। 'दुष्यंत के बाद की हिन्दी ग़ज़ल' एक ऐसा ही सैशन था। गौतम राजऋषि, इक़बाल मसूद, पवन कुमार, बद्र वास्ती को सुनना एक अनुभव था। 'उपन्यासों का बदलता शिल्प' सैशन भी कमाल का था, जिसमें डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, संतोष चौबे जी और मुकेश वर्मा जी के लेखकीय अनुभवों से श्रोता लाभान्वित हुए। इस सत्र का संचालन आख़िर दो समकालीन लोकप्रिय लेखक जो कर रहे थे - मनीष वैद्य और ममता सिंह। वहीं एक सभागार में ओपन माइक चल रहा था। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के निशुल्क कंप्यूटर कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही स्थानीय और आस-पास के क्षेत्रों से आई छात्राओं ने कविताएँ, संस्मरण कहानियाँ सुनाईं।

स्वादिष्ट लंच का ज़िक्र किए बिना बात पूरी नहीं हो सकती, मालवी भोजन और बहुत दिनों बाद मिले मित्रों से गप-शप यादगार बन गई। दिन कहाँ बीता पता न चला। शाम के वक़्त जब दिन ढल रहा था, भोपाल से मित्रगण आने लगे, पल्लवी त्रिवेदी, अनुलता राज नायर, मुकेश नेमा जी... हम सब बैठे

बतिया रहे थे उधर क्रिसेंट रिसोर्ट के लीज़ो बैंक्विट हॉल में शिवना प्रकाशन के सम्मान समारोह की तैयारियाँ चल रही थी। शिवना और ढींगरा फ़ाउण्डेशन से जुड़े इन सम्मानों की अपनी प्रतिष्ठा है। ये महज़ पुरस्कार नहीं, एक आत्मीय ज़िम्मेदारी भी है, निरंतर बेहतर लिखने की। इस बार सम्मानित लेखकों की सूची का अपना प्रभामंडल था, श्री लीलाधर मंडलोई (अंतर्राष्ट्रीय शिवना सम्मान 2025), श्री प्रभात रंजन (अंतर्राष्ट्रीय शिवना सम्मान 2024), श्री मनीष वैद्य (अंतर्राष्ट्रीय शिवना सम्मान 2024, श्री मुकेश नेमा (शिवना कृति सम्मान 2025), सुश्री स्मृति आदित्य (शिवना कृति सम्मान 2025), श्री प्रवीण कक्कड़ (शिवना कृति सम्मान 2024), सुश्री रश्मि कुलश्रेष्ठ (शिवना नवलेखन पुरस्कार 2024) सुश्री शुभ्रा ओझा (शिवना नवलेखन पुरस्कार 2024) श्री कृष्णा घाडगे (अवार्ड ऑफ़ एक्सिलेंस)। हॉल बहुत सुंदर सजा था, मंच पर विराजमान थे ज्ञान चतुर्वेदी जी, संतोष चौबे जी, यशपाल जी और मित्र यतीन्द्र मिश्र। मंच संचालन स्वयं पंकज सुबीर कर रहे थे और सभागार में उपस्थित हर व्यक्ति अभिभूत महसूस कर रहा था। सम्मान समारोह आरंभ हुआ और एक के बाद एक सम्मान के बाद तालियों की गड़गड़ाहट गूँजती रही। पुरस्कृत लेखकों की प्रसन्नता में दर्शक भी शामिल थे। सभी फागुनी रंगों के साफों से सज्जित थे। यहाँ तक कि पुरस्कृत लेखिकाएँ भी। मोहक दृश्य था।

हमारे पीछे युवा भगौरिया नर्तक सजे-धजे बैठे थे, उनकी पोशाकें इतनी आकर्षक थीं की सब उनके साथ फ़ोटो खिंचवाने का मोह नहीं छोड़ पा रहे थे। अंगरखे, घाघरे लूगड़े, चाँदी के जेवर, रंगीन फूँदने और साफ़े। सम्मान समारोह समाप्त हुआ। सम्मानित लेखकों के फोटोग्राफ हुए। तभी ढोल बज उठा। अनूठी धज वाले भगौरिया नर्तक-नर्तकियाँ कमाल की लय के साथ पहले धीमे पद संचालन के साथ नाचना आरंभ हुए। सभी अतिथि हरे लॉन में चले आए और नाच का आनंद लेने लगे। कुछ मुझ-सी व्याकुल आत्मा वाले लोग भी वहाँ थे, जिन्हें ढोल बजने पर स्थिर नहीं रहा जाता पाँव ख़ुद-ब-ख़ुद उठ जाते हैं। जहाँ ऐसे लोग इंतज़ार करते हैं कि कोई उन्हें नाचने के लिए खींच कर ले जाए, हम ख़ुद उठ जाते हैं। देखा-देखी बहुत से लोग मैदान में उतर आए, वहाँ देखकर कोई नहीं कहा सकता था कि साहित्य के लोग रूखे-सूखे होते हैं। वहीं समानांतर भोजन प्रेमी लोग मालवी बाफलों और बाटी का आनंद ले रहे थे। माहौल में साहित्य-संगीत और सांस्कृतिक वैभव छलक रहा था। कितने साहित्योत्सवों में जाते हैं हम सब लेकिन इस छोटे शहर 'सीहोर' में शिवना प्रकाशन और हम सबके प्रिय लेखक पंकज सुबीर ऐसा अविस्मरणीय आयोजन करके एक मिसाल बना देंगे यह किसने सोचा था? भोपाल की लेखक बिरादरी तक सीहोर के इस उत्सव के आनंद में डूबी थी। मैं तो अनवरत यात्राओं से थकी थी, डिनर के बाद सोने चली गई। सुबह पता चला यहाँ-वहाँ बैठकी जमी थी।

दूसरे दिन सुबह दस बजे से ही तीनों सभागारों में समानांतर सत्र आरंभ हो गए। गंभीर चर्चाएँ संवाद। मेरी भी भागीदारी थी एक सत्र में 'कथेतर साहित्य की बढ़ती लोकप्रियता' में। सत्र संचालन, प्रज्ञा रोहिणी कर रही थीं मेरे साथी वक्ता थे शिखा वार्ष्णेय, वंदना अवस्थी दुबे। कथेतर की पठनीयता कुछ अच्छी बातें निकल कर आईं। मेरा एक और सत्र था- 'उपन्यास की पाठशाला' जिसका संचालन रश्मि कुलश्रेष्ठ ने किया था और जयंती रंगनाथन, प्रभात रंजन और गौतम

राजऋषि के साथ इस सैशन ने मुझे भी समृद्ध किया।

मुझे लग रहा था दो दिन के इस उत्सव में कितना कुछ है जो समेटकर ले जाने पर भी यहीं छूट जाएगा और बाद में याद आएगा। उस पर आनंद यह कि मित्रों से मिलना और उनकी पुस्तकें उपहार में पाना भी चल रहा था। शिवना से आई अनेक नई किताबों के विमोचन में शामिल होना मेरा सौभाग्य था। सुधा ओम ढींगरा जी की वैचारिकी की पुस्तक 'विचार और समय भाग दो', दिव्या माथुर जी का कहानी संग्रह 'पंगा', उर्मिला शिरीष जी का कथा संकलन 'कुछ चाँद ने कहा', नीलिमा शर्मा का पहला उपन्यास 'सुर', जयंती रंगनाथन जी का उपन्यास 'अपने अपने बुर्ज ख़लीफ़ा', ममता सिंह का उपन्यास 'बीज और आकाश', प्रज्ञा रोहिणी का यात्रा वृत्तान्त, मनीष वैद्य का कथा संकलन, मुकेश नेमा जी की नई किताब 'इतराती इरा' आदि का विमोचन तो हुआ ही, मैं चौंकी तब जब शहरयार के कविता संकलन 'एक पुराना मौसम लौटा' का विमोचन हुआ। मन किया कहूँ 'यू टू ब्रूटस!' आख़िर लेखकों की संगत बड़ी संक्रामक होती है। इससे पहले पारुल सिंह की किताब 'ए वहशते दिल क्या करूँ' ने भी चकित किया था कि यह जो इतने सुंदर दिल वाली पारुल है यह किताब उसकी हार्ट सर्जरी के अनुभवों पर आधारित है। नई किताबें आती हैं साहित्य समृद्ध होता है। नए लोग लिखते हैं इसका दायरा बढ़ता है।

सत्र जब समाप्त होने आए तो सारे बाहर से आए और स्थानीय अतिथि खुले सभामंडप में एकत्र हो गए। लोक कलाकार प्रह्लाद प्रजापति की फाग प्रस्तुति से समापन समारोह होना था। उन्होंने मालवी और बुंदेली लोकधुनों पर आधारित फाग गीतों की प्रस्तुति देकर माहौल जीवंत कर दिया। फाग के रस में डूबे श्रोता थिरक उठे। इस आनंदी फाग गायकी के साथ 'फूलों की होली' जब आरंभ हुई तो सब ने एक-दूसरे पर पुष्प वर्षा कर आयोजन को सौहार्द से भर दिया।

शब्द, विचार और दर्शन से आरंभ हुआ यह आयोजन यूँ सम्पन्न होगा यह कल्पनातीत

था कि फाग से रस से भरे लोकगीतों पर थिरकते और फूलों की होली खेलते वक्ता और श्रोता, बच्चे और बड़े यूँ घुल-मिल जाएँगे। आत्मीयता फूलों की तरह बरस रही थी। यह शिवना साहित्य समागम का पहला मोहक अध्याय भर था। अगले बरस फिर यहाँ जुटने के वचन के साथ विदाओं का दौर शुरू हुआ। बहुत मुश्किल था इस जीवंतता से निकल कर कमरे में जाकर बिखरे सामान को पैक करना।

मित्रों से तो विदा ले ली मगर इतने प्लानिंग, इतने श्रम और आपसी सहयोग से इस साहित्योत्सव का आयोजन करने वाले आयोजक पंकज सुबीर और रेखा पुरोहित उनके परिवार और राम के साथ खड़े लक्ष्मण सम शहरयार से विदा लेना आसान न था। दोनों चाय और किताबों वाले हिस्से में बैठे अतिथियों को विदा दे रहे थे। आयोजन मैं भी करती हूँ, यह दृश्य मुझे भी अखरता है मानो अभी अभी बेटी विदा की हो और मंडप ख़ाली पड़ा हो। कथाकहन में जयपुर मिलने का आश्वासन लेकर मैं रेलवे स्टेशन चली आई।

मैं सीहोर रेलवे स्टेशन पर बैठ यही सोच रही थी 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' को इतना सफ़ल बनाने में क्या चीज़ प्रमुख थी। कोई ताम-झाम नहीं, बस एक सुरम्य आयोजन स्थल और सब का संग साथ और आत्मीयता! ट्रेन लेट थी, मगर मन सुंदर यादों का पाथेय संग लिए था।

000

सच में 'पीहर'

यह मात्र संयोग नहीं हो सकता यह ईश्वरीय इच्छा है तमाम गतिरोध के बाद हमारा सिद्धपुर पहुँचना पहले हुई दो संक्षिप्त मुलाक़ात के दम पर ही तो। आपका तपाक से हृदय की बाहें खोल स्वागत। देव मूर्ति सी सरल, सहज, सुकोमल बेटियाँ, गौरा सी जीवन संगिनी, ममता की प्रतिमूर्ति जननी और शहरयार का क्या कहना दिल से अब तक 'बच्चा' है शहरयार। अभ्यर्थना में जुटी बच्चियाँ हाथ का छोटा बैग, पानी की बॉटल तक लेने को तत्पर। मुस्कुराती, बिना थके, अविरत। काश सबसे व्यक्तिगत मिल कर नाम पुकार कर उनका बहुमान कर पाते। मंच पर ज्योति जैन जी का आपके भाल पर 'टीका' जिसने आपको भावुक कर सिसकियों में बाँध दिया और सभागार को मौन रुदन में। यह सिर्फ़ और सिर्फ़ हम बहनें और और आप सा भाई ही कर सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन के साथ उत्सव मूर्तियों का साक्षात्कार, तस्वीरें। फाग उत्सव के आख़िरी चरण में जब शहरयार हाथ हिला-हिला कर कृत्रिम ग़ुस्से में कार्यकर्ताओं की टोली को अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी पर वापिस भेज रहे थे, तब उनका थकान भरा चेहरा और अगले ही पल उत्सवियों के आग्रह पर ठुमके लगाना मन को इतना भा गया कि बस। सभी सखियों ने एक स्वर में माना कि सिद्धपुर आ कर 'मायके' आने जैसा है। सच ही तो है मेरे पिता अस्सी के दशक में स्थानांतरित होकर सीहोर पहुँचे, बरसों हमने इस पते पर पिताजी से सुख-दुःख पत्र लिखकर साझा किए पर उनके साथ सीहोर में न रह पाए। तब के सीमित संसाधनों में यह दुष्कर ही था पर विधि के विधान से जब 28 फरवरी को सिद्धपुर में क़दम रखा तो पिताजी की पुकार हवा में घुम-मिल कर स्वागत कर रही थी। तो सीहोर मेरा तो सच में 'पीहर' हुआ न? डेढ़ दिन बहुत कुछ सुना, बहुत कुछ गुना। यही गुनते-सुनते वापिस लौट आये हैं।

आराधना तिवारी, वामा, इन्दौर

000

(संस्मरण)

क़स्बे में शब्दों का वसन्त : शिवना साहित्य समागम

विनय उपाध्याय

मौसम के आँगन में बौराते फागुन के पलाशी रंग महज़ पेड़ों की सजधज नहीं होते, बाज़दफ़ा वह दरख़्तों से उतर कर जीवन के अन्तरंग में भी कुछ ऐसा असर करते हैं कि उसकी लालिमा गहरी हो उठती है। फिर ये रंग-रूपहली छवियाँ अगर सदाबहार मालवा की मटियारी भूमि पर खिल रही हों तो प्रेम के इस सैलाब को भुजाओं में समेटना आसान नहीं। बेशक यह इस भरोसे की भी गवाही है कि तमाम भटकती आँधियों के बीच क़स्बाई मन की मुँडेर पर प्रेम का दीया मुस्करा रहा है।

...ये सीहोर है। झील-पहाड़ियों की पुरख़ुश वादियों के शहर भोपाल से बहुत दूर का ठिकाना नहीं है ये क़स्बा। उन्नत क़िस्म के गेहूँ की बम्पर पैदावार और अनाज मण्डियाँ इसकी ख़ास पहचान हैं। लेकिन साहित्यिक मानचित्र पर सीहोर का शाया होना एक नई घटना तो है! कहते हैं- "शहरों में किरदार रहते हैं, किरदारों में शहर रहते हैं", सो इस तर्ज़ पर भी जगहों को चीन्हा जाता है और एक नए इतिहास को बनते हुए देखने का रोमांच भी। पंकज सुबीर की पेशगी भी ऐसी ही है। सीहोर की सरज़मीं पर अब आहिस्ता से उन्होंने नई दस्तक दी है। एक ऐसा परिवार गढ़ने की पहल उनके ज़रिए हुई है जो साहित्य, संस्कृति और कला के इलाक़ों में जीता, उठता-बैठता है। रचने के आनन्द में तो मगन है ही, साथ ही अपने आसपास उभर रही आवाज़ों के प्रति भी सचेत है, उनसे भी वाबस्ता है।

इधर मधुमास आया तो सीहोर ने कुछ ऐसी ही अँगड़ाई ली। शब्दों के वन्दनवार सजाए। कला का मंगल कलश छलका। सौहार्द्र की सुरीली शहनाई गूँजी। इस रूपक को नाम मिला- शिवना साहित्य समागम। सीहोर लिटरेचर फ़ेस्टिवल। सुधा ओम ढींगरा फ़ाउण्डेशन ने प्रबन्धन का हौसला दिया, लेकिन यह सब नाकाफ़ी है अगर शिवना के शिल्पियों का पुरुषार्थ नेपथ्य की ताक़त न बनता। यह एक यज्ञ था जहाँ 'वागर्था विव सम्पृक्तौं, वागर्थ प्रतिपत्तये' का रघुवंश-गान गाते पुरोहित मुद्रा में पंकज सुबीर सविनय प्रकट हुए। आँखों में आत्मीयता की चमक, अधरों पर अपनापे की चहक और बाँहों में बन्धुता के आलिंगन की महक लिए वे सबके लिए देहरी पर हाज़िर थे। कुछ ऐसी पुकार थी पंकज की कि दिल्ली, मुम्बई, इंदौर, देवास, भोपाल और खण्डवा ही नहीं, दूर देश के राही भी एक मंच पर सिमट आए। इस समागम में कथाकार-कवि और व्यंग्यकारों से लेकर फ़िल्म, रंगमंच, मीडिया तथा दीगर नए माध्यमों में सक्रिय तीन पीढ़ी के रचनाकार शरीक हुए। यादों-बातों और मुलाक़ातों के सिलसिले हुए। शब्द की यात्रा और साहित्य की महान् परम्पराओं को याद किया। मनुष्यता के सामने चुनौती बनकर खड़ी आधुनिकता की पड़ताल की। इतिहास को खँगाला। सृजन की नई सम्भावनाओं का स्वागत किया। धरती के छन्द गाती सौंधी सुरमई आवाज़ों में धड़कती लोक रंगी अलमस्ती का ख़ुमार चढ़ा। नई किताबों की आमद हुई। साहित्यिक ख़ानाबन्दियों के दबाव से मुक्त यह एक ऐसा समावेशी आँगन था, जहाँ विचार के भाल पर सहमति और असहमति का गुलाल लगाया जा सकता था। कथित आलोचकीय आतंक और साहित्यिक दुराग्रहों से दूर खुला हृदय तथा फैली बाहें लिए रचना का लोकतन्त्र साकार हुआ। एक क़स्बा इन रौशन मंज़रों को समेटता अपने वजूद में फिर लौट गया। किरदारों के क़िस्सों में वो क़स्बा अब भी जाग रहा है। इन्दौर-भोपाल बायपास स्थित क्रिसेंट रिसोर्ट एंड क्लब में 28 फरवरी और 1 मार्च 2026 को आयोजित इस महोत्सव ने शहर को देश के साहित्यिक मानचित्र पर अंकित कर दिया। सिद्धपुर सभामण्डप में दीप प्रज्वलन और सरस्वती वन्दना के साथ इस महाकुंभ का शुभारम्भ हुआ। देशभर से जुटे साहित्यकारों, पत्रकारों और सुधी पाठकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जगतगुरु पंडित अजय पुरोहित ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे, व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय, विधायक सुदेश राय, प्रिंस राठौर, नमिता राय और अरुणा राय मंचासीन रहे। सत्र का समन्वय गरिमा संजय दुबे और स्मृति आदित्य ने किया। पूरा परिसर वैचारिक ऊर्जा से सराबोर नज़र आया।

इसके बाद विविध विषयों पर अलग-अलग सभागारों में समांतर सत्रों का दौर चला।

विनय उपाध्याय
एम.एक्स. - 131
ई-7, अरेरा कॉलोनी
भोपाल, मप्र 462016
मोबाइल- 9826392428
ईमेल- vinay.srujan@gmail.com

साहित्य के हर पहलू पर चर्चा की गई। प्रथम सत्र में 'धर्म और साहित्य का अन्तरसंबंध' विषय पर जगतगुरु पंडित अजय पुरोहित, यतीन्द्र मिश्र और विकास दवे ने सारगर्भित विचार रखे। विनय उपाध्याय इस संवाद के सूत्रधार थे। वक्ताओं ने कहा कि साहित्य और धर्म दोनों ही मनुष्य को परिष्कृत करने का कार्य करते हैं। दूसरे सत्र में अभिनेता यशपाल शर्मा और प्रतिभा सुमन शर्मा ने फ़िल्मों में साहित्य की घटती भूमिका और पटकथा लेखन की चुनौतियों पर बात की। दोपहर के सत्र में विजय सक्सेना और अखिलेश राय ने 'कैसे स्वस्थ रहे कोई' विषय पर महत्त्वपूर्ण टिप्स साझा किये। शाम के सत्र में कविता के शिल्प और उसकी सामाजिक सरोकारिता पर प्रकाश डाला। थर्ड जेंडर संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील सत्र में महामंडलेश्वर संजना सखी ने 'थर्ड जेंडर के जीवन संघर्ष' पर अपनी बात रखकर श्रोताओं को भावुक कर दिया। उधर एक अन्य सत्र में लीलाधर मंडलोई, उर्मिला शिरीष, प्रज्ञा और रेखा कस्तवार ने वर्तमान कथा-साहित्य के बदलते स्वरूप पर अपनी राय रखी। 'पत्रकारिता की विश्वसनीयता' पर अनुराग द्वारी, पंकज शुक्ला, ब्रजेश राजपूत और शैलेन्द्र पटेल ने मीडिया के सामने मौजूद चुनौतियों और 'फेक न्यूज़' के दौर में पत्रकारिता के धर्म पर सार्थक बहस की। कुँवर चैनसिंह सभागार में बच्चों के लिए समर्पित विशेष सत्र भविष्य से संवाद आयोजित हुआ। पुस्तक विमोचन में 25 लेखकों की नवीन कृतियों का विमोचन ज्ञान चतुर्वेदी और यशपाल शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

सम्मान और भगोरिया की गूँज: 'अलंकरण समारोह' इस समागम का मुख्य आकर्षण रहा। लीलाधर मंडलोई को उनकी आत्मकथा 'जबसे आँख खुली है' के लिए, प्रभात रंजन को उनके उपन्यास 'क़िस्साग्राम' के लिए तथा मनीष वैद्य को उनके कहानी संग्रह 'वाँग छी' के लिए अन्तरराष्ट्रीय शिवना सम्मान से नवाज़ा गया। साथ ही मुकेश नेमा को उनकी डायरी 'इत्तू सी इरा' के लिए, स्मृति

आदित्य को उनकी डायरी 'अब मैं बोलूँगी' के लिए तथा प्रवीण कक्कड़ को उनकी किताब 'दण्ड से न्याय तक' के लिए शिवना कृति सम्मान प्रदान किया गया। रश्मि कुलश्रेष्ठ को उनके उपन्यास 'शेष रहेगा प्रेम' के लिए तथा शुभ्रा ओझा को उनके कहानी संग्रह 'आख़िरी चाय' के लिए शिवना नवलेखन पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान वरिष्ठ साहित्यकार ज्ञान चतुर्वेदी, संतोष चौबे, प्रेम जनमेजय, यतीन्द्र मिश्र, सुप्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेता यशपाल शर्मा तथा क्रिसेंट ग्रुप के चेयरमैन अखिलेश राय ने प्रदान किये। स्वागत लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ ने तथा आभार वामा की अध्यक्ष ज्योति जैन ने व्यक्त किया। सम्मान समारोह के बाद भगोरिया नृत्य की प्रस्तुति दी गई। महोत्सव के दूसरे दिन सुबह से ही तीन अलग-अलग सभागारों- सिद्धपुर सभा मण्डप, सिपाही बहादुर सभागार और कुँवर चैनसिंह सभागार में समानान्तर सत्रों का आयोजन हुआ। शुरुआत "उपन्यास की पाठशाला' और 'क्या है व्यंग्य विधा का भविष्य?' जैसे सत्रों से हुई। 'कलाओं की विरासत' और 'कथेतर साहित्य की बढ़ती लोकप्रियता' पर भी ज़रूरी विमर्श हुआ। कलाकारों के अवदान और उनकी उपेक्षा पर गोविन्द शर्मा, शैलेन्द्र शरण, अरुण सातले, कैलाश मंडलेकर आदि ने संवाद किया। 'कविता पाठ' और 'वामा इन्दौर-आधी आबादी की आवाज़' जैसे सत्रों ने विभिन्न पहलुओं को छुआ।

सीहोर के ब्लू बर्ड स्कूल के छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के कर्मवीर रेडियो के प्रतिनिधियों ने दोनों दिन अपनी रचनात्मक जिज्ञासाओं से भरी उपस्थिति दर्ज की। शहरयार का संयोजन और शिवम-आकाश का तकनीकी नियोजन बेहद सुचारू था। कुल मिलाकर इस आयोजन का हासिल सांस्कृतिक सौहार्द था, अपने समय के सृजन और उसके आसपास उभर रही चिन्ता और चुनौतियों की पड़ताल तथा नई पीढ़ी की रचनात्मक सम्भावनाओं को देखने का संयोग भी।

000

सीहोर का उभरना

सीहोर, एक मासूम सा क़स्बा जो भोपाल, देवास और इंदौर जैसे शहरों के बीच बड़ी ख़ामोशी से अपनी जगह तलाशता है और एक दिन अपनी छवि को तराशकर इस तरह उभरता है कि इन्हीं पड़ोसी शहरों के साथ 5 देशों के 150 साहित्यकार प्रबुद्धजन एक साथ यहाँ आकर सुकून पा लेते हैं। 28 फरवरी और 1 मार्च 2026 को साहित्यकार, शिवना प्रकाशन प्रमुख पंकज सुबीर ने अपनी टीम के साथ साहित्यिक और सांस्कृतिक उत्साह लिए साहित्य समागम सम्पन्न किया और इस ख़ूबी और ख़ूबसूरती से उसे समेटा कि कला, मीडिया, सिनेमा, सृजन, साहित्य, संस्कृति, समाज, शिक्षा और परंपरा के रंग चारों तरफ खिल उठे। दो दिन तक साहित्य की हर विधा वहाँ मुस्कुरा रही थी, वहीं समाज के सरोकार, चिंता, चिंतन और विमर्श भी प्रखरता से अभिव्यक्त हो रहे थे। विविध सत्रों में प्रगाढ़ रिश्तों का मधुर ताना-बाना बुना गया और कविता, गीत, ग़ज़ल, दोहे के साथ फाग भी गुनगुनाए गए। फागुन के मौसम में हँसी-ठिठोली भी खिली और युवाओं को विचारों की रोशनी भी मिली। हर शाम को सांस्कृतिक महक के साथ ख़ुशनुमा बनाया गया।

स्मृति आदित्य, सचिव- वामा, इन्दौर

000

(रपट)

फाग और लोक संस्कृति की तान से गूँजा शिवना साहित्य समागम

आकाश माथुर

साहित्य, संस्कृति और विमर्श की त्रिवेणी 'शिवना साहित्य समागम 2026' का शंखनाद 28 फ़रवरी की सुबह सीहोर की ऐतिहासिक धरती पर किया गया। साहित्य और होली का समागम भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत सुंदर रंगीन और जीवंत पक्ष है। होली का त्योहार सिर्फ़ रंगों का नहीं बल्कि भावनाओं भाईचारे और सृजन का उत्सव है जिसे हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में बड़े ही अनूठे ढंग से पिरोया है। इंदौर-भोपाल बायपास स्थित क्रिसेंट रिसोर्ट एंड क्लब में आयोजित इस दो दिवसीय महोत्सव ने शहर को देश के साहित्यिक मानचित्र पर प्रमुखता से अंकित कर दिया। 28 फरवरी को सुबह 9:45 बजे सिद्धपुर सभामंडप में दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ इस महाकुंभ का शुभारंभ हुआ, जिसमें देश भर से जुटे सैकड़ों साहित्यकारों, पत्रकारों और सुधी पाठकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके अलावा ब्लू बर्ड स्कूल की अहम भूमिका रही, जिसमें विद्यार्थियों ने पूरे अनुशासन और समर्पण भाव से देश भर से साहित्यकारों का स्वागत और सम्मान किया।

उद्घाटन सत्र: परंपरा और आधुनिकता का विमर्श-उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जगतगुरु पंडित अजय पुरोहित ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे, वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय, विधायक सुदेश राय, प्रिंस राठौर, श्रीमती नमिता राय और श्रीमती अरुणा राय मंचासीन रहे। सत्र का कुशल समन्वय डॉ. गरिमा संजय दुबे और स्मृति आदित्य ने किया। अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि सीहोर जैसे ऐतिहासिक नगर में इस स्तर का आयोजन हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के संवर्धन में मील का पत्थर साबित होगा। उद्घाटन के पश्चात पूरा परिसर वैचारिक ऊर्जा से सराबोर नज़र आया।

प्रथम दिन के सत्र: विविध विषयों पर गहन मंथन, दिनभर तीन अलग-अलग सभागारों में समांतर सत्रों का दौर चला, जिनमें साहित्य के हर पहलू पर चर्चा की गई, सिद्धपुर सभामंडप वैचारिक विमर्श, धर्म और साहित्य: प्रथम सत्र में 'धर्म और साहित्य का अंतर्संबंध' विषय पर यतींद्र मिश्र और विकास दवे ने सारगर्भित विचार रखे। वक्ताओं ने कहा कि साहित्य और धर्म दोनों ही मनुष्य को परिष्कृत करने का कार्य करते हैं। सिनेमा और साहित्य: दूसरे सत्र में अभिनेता यशपाल शर्मा और प्रतिभा सुमन शर्मा ने फिल्मों में साहित्य की घटती भूमिका और पटकथा लेखन की चुनौतियों पर बात की। स्वास्थ्य और जीवन: दोपहर के सत्र में डॉ. विजय सक्सेना और अखिलेश राय ने 'कैसे स्वस्थ रहे कोई' विषय पर महत्त्वपूर्ण टिप्स साझा किए। कविता की पाठशाला: शाम के सत्र में वरिष्ठ कवि राजेश जोशी ने कविता के शिल्प और उसकी सामाजिक सरोकारिता पर प्रकाश डाला। थर्ड जेंडर संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील सत्र में महामंडलेश्वर संजना सखी ने 'थर्ड जेंडर के जीवन संघर्ष' पर अपनी बात रखकर श्रोताओं को भावुक कर दिया।

सिपाही बहादुर सभागार सृजन और समाज

इस सभागार में शिखरों के वारिस, नई सदी की नई कविताऔर 'नई सदी की नई कहानी' जैसे विषयों पर चर्चा हुई। यहाँ लीलाधर मंडलोई, उर्मिला शिरीष, प्रज्ञा पाण्डेय और रेखा कस्तवार जैसे दिग्गजों ने वर्तमान कथा-साहित्य के बदलते स्वरूप पर अपनी राय रखी।

विशेष रूप से 'पत्रकारिता की विश्वसनीयता' पर आयोजित सत्र में पंकज शुक्ला, ब्रजेश राजपूत, पुष्पेन्द्र वैद्य और शैलेन्द्र पटेल ने मीडिया के सामने मौजूद चुनौतियों और 'फेक न्यूज़' के दौर में पत्रकारिता के धर्म पर तीखी और सार्थक बहस की।

कुँवर चैनसिंह सभागार भविष्य और विमोचन

दोपहर में बच्चों के लिए समर्पित विशेष सत्र भविष्य से संवाद आयोजित हुआ, जिसका संचालन पंकज सुबीर ने किया। इसके उपरांत एक भव्य 'पुस्तक लोकार्पण' कार्यक्रम हुआ, जिसमें सुधा ओम ढींगरा, तेजेन्द्र शर्मा, यतींद्र मिश्र, और नीलिमा शर्मा सहित क़रीब 20 लेखकों

आकाश माथुर
152, राम मंदिर के पास, क़स्बा, सीहोर,
मप्र 466001,
मोबाइल- 9200004206
ईमेल- akash.mathur77@gmail.com

की नवीन कृतियों का विमोचन डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी और यशपाल शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

सम्मान समारोह और भगोरिया की गूँज

शाम को आयोजित भव्य 'अलंकरण समारोह' समागम का मुख्य आकर्षण रहा। इसमें लीलाधर मंडलोई को उनकी आत्मकथा 'जबसे आँख खुली है' के लिए, प्रभात रंजन को उनके उपन्यास 'क़िस्साग्राम' के लिए तथा मनीष वैद्य को उनके कहानी संग्रह 'वाँग छी' के लिए अंतर्राष्ट्रीय शिवना सम्मान से नवाजा गया। साथ ही मुकेश नेमा को उनकी डायरी 'इत्तू सी इरा' के लिए, स्मृति आदित्य को उनकी डायरी 'अब मैं बोलूँगी' के लिए तथा प्रवीण कक्कड़ को उनकी किताब 'दण्ड से न्याय तक' के लिए शिवना कृति सम्मान प्रदान किया गया। रश्मि कुलश्रेष्ठ को उनके उपन्यास 'शेष रहेगा प्रेम' के लिए तथा शुभ्रा ओझा को उनके कहानी संग्रह 'आख़िरी चाय' के लिए शिवना नवलेखन पुरस्कार प्रदान किया गया। सम्मान समारोह के पश्चात रात्रि 9 बजे से मालवा की प्रसिद्ध लोक संस्कृति भगोरिया नृत्य की प्रस्तुति दी गई, जिसमें स्थानीय कलाकारों द्वारा ढोल की थाप पर लोक जीवन के रंगों को बिखेरा गया।

रेडियो कर्मवीर की गूँज- आयोजन को वैश्विक मंच देने के लिए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल की 'रेडियो कर्मवीर 90.0 एफ़एम की टीम सीहोर में डेरा डाले हुए रही। टीम द्वारा लगातार लाइव बाइट्स और साक्षात्कारों का रिकॉर्डिंग की गई, जिससे यह आयोजन रेडियो के माध्यम से घर-घर पहुँचा।

आयोजन समिति का प्रयास- इस सफल आयोजन के पीछे यतींद्र मिश्र, यशपाल शर्मा, अखिलेश राय, मनीषा कुलश्रेष्ठ और ज्योति जैन की मेहनत साफ नज़र आई। परामर्श समिति के अनिल पालीवाल, कैलाश अग्रवाल और पंकज सुबीर सहित समूची टीम अतिथियों के सत्कार और सत्रों के सुचारू संचालन में जुटी रही। सीहोर के नागरिक भी इस आयोजन को लेकर उत्साहित रहे और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ साहित्य के इस

'महाकुंभ' में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

दूसरे दिन मालवा के फाग उत्सव के साथ हुआ समापन

1 मार्च 2026 मालवा की ऐतिहासिक धरती सीहोर में दो दिनों तक चले शब्दों के महाकुंभ 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' का रविवार को अत्यंत गरिमामय और सांस्कृतिक उल्लास के साथ समापन हुआ। शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित इस महोत्सव ने न केवल साहित्य की गंभीर विधाओं पर चर्चा की, बल्कि लोक कला और उत्सव के रंगों से श्रोताओं का मन मोह लिया।

लोक संस्कृति का संगम: प्रह्लाद प्रजापति की फाग प्रस्तुति

समापन समारोह 'सिद्धपुर सभामंडप' में आयोजित किया गया। इस सत्र का मुख्य आकर्षण सुप्रसिद्ध कलाकार प्रह्लाद प्रजापति का फाग गायन रहा। प्रजापति ने जब मालवी और बुंदेली लोक धुनों पर फाग गीतों की प्रस्तुति दी, तो पूरा पांडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। गीतों के साथ ही 'फूलों की होली' का आयोजन किया गया, जहाँ साहित्यकारों और प्रबुद्ध नागरिकों ने एक-दूसरे पर फूलों की वर्षा कर प्रेम और सौहार्द्र का संदेश दिया।

तीन सभागारों में चला वैचारिक मंथन

महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को सुबह से ही तीन अलग-अलग सभागारों - सिद्धपुर सभामंडप, सिपाही बहादुर सभागार और कुँवर चैनसिंह सभागार में समानांतर सत्रों का आयोजन हुआ।

साहित्यिक पाठशाला और विमर्श: दिन की शुरुआत 'उपन्यास की पाठशाला' और 'क्या है व्यंग्य विधा का भविष्य?' जैसे सत्रों से हुई। वक्ताओं ने उभरते लेखकों को लेखन की बारीकियों से अवगत कराया। वहीं, 'कलाओं की विरासत' और 'कथेतर साहित्य की बढ़ती लोकप्रियता' पर भी विद्वानों ने अपने विचार रखे।

मीडिया और समाज: "2 डिबेट या न्यूज़... क्या चाहता है दर्शक?" विषय पर हुई चर्चा में वर्तमान मीडिया परिदृश्य और दर्शकों की बदलती पसंद पर तीखे सवाल-जवाब हुए।

क्षेत्रीय अस्मिता: 'मालवा-निमाड़ के कथाकारों की उपेक्षा' सत्र में स्थानीय साहित्यकारों को मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। साथ ही, 'पुलिस सेवा में रहते हुए साहित्य सृजन' जैसे अनूठे सत्र ने यह दिखाया कि प्रशासनिक व्यस्तताओं के बीच भी संवेदनाएँ कैसे जीवित रहती हैं।

काव्य और महिला विमर्श: दोपहर के सत्रों में 'कविता पाठ' और 'वामा इंदौर- आधी आबादी की आवाज़' जैसे सत्रों ने समाज के विभिन्न पहलुओं को छुआ।

आभार प्रदर्शन और विदाई

कार्यक्रम के अंत में शशिकांत यादव ने विधिवत आभार प्रदर्शन किया। उन्होंने प्रशासन, स्थानीय सहयोगियों, देश भर से आए वक्ताओं और सीहोर की साहित्यप्रेमी जनता का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि यह फेस्टिवल केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक विचार है जो आने वाले समय में सीहोर को सांस्कृतिक मानचित्र पर और ऊँचा स्थान दिलाएगा।

शाम 5:00 बजे चाय और अल्पाहार के साथ इस दो दिवसीय उत्सव का विसर्जन हुआ। विदाई की बेला में हर किसी की आँखों में अगले वर्ष फिर मिलने की उम्मीद और शब्दों की नई ऊर्जा साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थी।

000

(रपट)

एक यात्रा, अनगिनत मुलाकातें, बेशुमार यादें

(शिवना साहित्य समागम 2026 सीहोर से लौटकर)

नैवेद्य पुरोहित

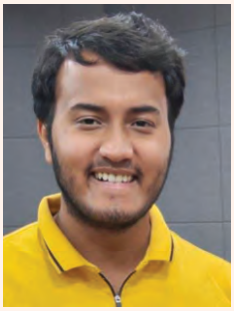

नैवेद्य पुरोहित
विद्यार्थी- माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, माखनपुरम, मप्र शूटिंग एकेडमी के सामने, बिशनखेड़ी, भोपाल मप्र 462044

बीते दो दिन 28 फरवरी और 1 मार्च को मैं सीहोर में शिवना प्रकाशन द्वारा क्रिसेंट रिज़ॉर्ट एंड क्लब में आयोजित शिवना साहित्य समागम 2026 में सम्मिलित हुआ। यह महज़ एक साहित्यिक आयोजन नहीं था, यह एक ऐसा मेला था जहाँ अलग-अलग विचार शब्दों के साथ गले मिल रहे थे और अजनबी भी दोस्त बन गए।

मैं वहाँ "रेडियो कर्मवीर 90.0 एफ़.एम.- जो करता है जन गण मन की बात" की टीम के साथ गया था। मेरे साथ प्रशांत सिंह, भूमि सिंह, सुप्रजा पांडेय और देवमाल्य बनर्जी थे। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय से जनसंचार विभाग की टीम भी साथ थी जिसमें मेरे मित्र हर्ष कर्णवाल, चैतन्य शाह, शांतनु भैया, महक पवानी, प्राक्षि शर्मा, निकिता धाकड़, ताविषी देवरानी और हम सभी के मार्गदर्शक डॉ. लाल बहादुर ओझा सर थे जिनकी मौजूदगी हर क़दम पर रोशनी की तरह हमारे साथ रही।

पहला दिन: जब साहित्य और सिनेमा एक-दूसरे में घुल गए

सिद्धपुर सभामंडप में हो रहे पहले दिन के दूसरे सत्र ने माहौल बना दिया। मंच पर थे फ़िल्म अभिनेता यशपाल शर्मा फ़िल्म निर्देशक इरफ़ान ख़लील ख़ान और प्रतिभा सुमन शर्मा, संचालन आकाश माथुर और अंकुर परसाई ने किया। अंकुर परसाई की एक पंक्ति सत्र का सार बन गई, "Literature is the soul of society and Cinema is the reflection of society." प्रतिभा सुमन शर्मा ने कहा, "सिनेमा और समाज को हम अलग-अलग नहीं कह सकते। यह कहकर कि ऐसी फ़िल्में बन रही हैं इसीलिए समाज बिगड़ रहा है तो हम पल्ला झाड़ रहे हैं। समाज भी कहीं न कहीं उस ओर बढ़ने लगा है।" इरफ़ान ख़लील ख़ान ने फ़िल्मकारों को सीधी नसीहत दी और कहा, "साहित्य से कहानी आएगी। फ़िल्म मेकर्स को कहानी तभी मिलेगी जब वे साहित्य से जुड़े रहेंगे।" उन्होंने 'किसी का भाई किसी की जान' और 'सिकंदर' जैसी फ़िल्मों का ज़िक्र करते हुए कहा कि कहानी के अभाव में फिर ऐसी ही फ़िल्में बनती है। यशपाल शर्मा जिनसे मिलना ख़ुद एक अनुभव है उन्होंने रीजनल सिनेमा की ताक़त पर जो कहा, वह बेजोड़ था। ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर उपलब्ध तमिल फ़िल्म 'अयोधि' का ज़िक्र उन्होंने बड़ी तन्मयता से किया। एक कट्टर हिंदू की कहानी, जो एक्सीडेंट के बाद तमिल लोगों की मदद से गुज़रता है, दीवाली के वक़्त एक तमिल शख़्स सब छोड़कर उस व्यक्ति की डेडबॉडी के लिए पुलिस से एनओसी से लेकर शव को एयरपोर्ट से ले जाने तक की ज़िम्मेदारी उठाता है। ऐसी कई रीजनल फ़िल्मों में कंटेंट बहुत स्ट्रॉन्ग होता है। प्रतिभा जी, यशपाल शर्मा की पत्नी हैं। जब आकाश माथुर ने उनसे पूछा कि पर्दे पर आप कम दिखाई देती हैं, तो उनका जवाब था, "अब लेखन और निर्देशन में व्यस्त रहने लगी हूँ।"

क्या पत्रकारिता की विश्वसनीयता दाँव पर है?

'सिपाही बहादुर सभागार' में यह सत्र जितना गंभीर था, उतना ही ज़रूरी भी। संचालन पॉलिटिक्सवाला के पंकज मुकाती ने किया। वक्ताओं में थे विस्तार न्यूज़ के एडिटर इन चीफ़ ब्रजेश राजपूत, पंकज शुक्ला, पुष्पेंद्र वैद्य और पूर्व विधायक शैलेंद्र पटेल। पत्रकार अलग हैं, मीडिया हाउस अलग, यह बात शैलेंद्र पटेल ने पहले ही साफ़ कर दी। सर्कस पत्रकारिता पर जो कहा गया वह कड़वा सच था, "हमने अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मारी है। टीआरपी की दौड़ में पहले साँप-बिच्छू-भूत-प्रेत-बाबा-ओझा आए, फिर धीरे-धीरे प्राइम टाइम के शो में भी नाग-

नागिन की कहानियाँ बढ़ने लगीं।" एक वक्ता ने वाक़या साझा किया कि जब किसी पत्रकार ने अपने संपादक को बताया कि एक बाँध डूब रहा है उस पर स्टोरी करना है तो संपादक ने मना कर दिया और कहा, "शिवलिंग पर नाग उठाकर लाओ ऐसा कुछ लाओ जो लोगों को अट्रैक्ट करे।" ब्रजेश राजपूत ने देर से आकर भी ज़रूरी बात कही और कहा कि "हम कुछ लोग जो वस्तुनिष्ठ पत्रकारिता करना चाहते थे या कर रहे हैं अब लोगों को वह चाहिए भी नहीं।" पंकज शुक्ला ने एक संकट की बात उठाई और कहा कि "आजकल एक व्यक्ति की रातों-रात विचारधारा बदल जाती है जो पहले जनपक्ष की बात करते थे, वे अपने हित के लिए रातोंरात पाला बदल लेते हैं।" बीबीसी के संजीव श्रीवास्तव की कचौड़ी की दुकान पर भी चर्चा हुई। सत्र का निचोड़ यह भी था कि भविष्य में बने रहने के लिए विषय-आधारित काम करना होगा।

थर्ड जेंडर का जीवन संघर्ष

'सिद्धपुर सभामंडप' में यह सत्र उतना ही भावुक था जिसका संचालन पारुल सिंह और पंखुरी पुरोहित ने किया। वक्ता थीं महामंडलेश्वर संजना सखी। अपने जीवन के कठिन पलों को साझा करते हुए संजना सखी ने बताया कि 1999 का वह दिन जब उन्हें घर से निकाला गया, भाई ने बाहर का रास्ता दिखाया, माँ ने भी हाथ जोड़ लिए इसे याद करते हुए वे कहती है, "वह मेरे जीवन का सबसे दुखद पल था। लेकिन आज वही मेरे लिए सुखद भी है, क्योंकि अगर वह पल न होता तो मैं आज यहाँ नहीं होती।" एक-एक दिन समोसे पर निकाला और उस गहराई से एक अनुभव जन्मा, जिसने पूरी ज़िंदगी का चक्र बदल दिया। उनका कहना था- "थर्ड जेंडर के लोगों को हमारे उपनिषदों में, वेदों में इतना सम्मान मिला है पूजनीय माने गए हैं उसके बावजूद समाज में आज भी तिरस्कार सहना पड़ता है तो यह फिर समाज का ही दोष है।" एक सच जो तीर की तरह लगा वह यह था कि जब उन्होंने बोला, "हक़ीक़त यह है कि अगर आपके परिवार में ऐसा बच्चा पैदा हो, तो आप भी उसे स्वीकार नहीं करेंगे।

दिखावे की सहानुभूति होती है।" आजकल एलजीबीटीक्यू अधिकारों की बात होती है कई लोग प्रोटेस्ट करते हैं, इस सवाल पर महामंडलेश्वर संजना सखी का कहना था कि अगर समाज हमें एक्सेप्ट कर लेगा तो प्रोटेस्ट की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

शाम के वक़्त जब दिन ढल रहा था। क्रिसेंट रिसोर्ट के लीज़ो बैंक्विट हॉल में शिवना प्रकाशन के पुरस्कार वितरण समारोह की तैयारियाँ हो रही थी। यह वह पल था जिसका हम सभी को बेसब्री से इंतज़ार था एमसीयू भोपाल में एडजंक्ट प्रोफ़ेसर स्मृति मैम का सम्मान हो रहा था। मैम को उनकी डायरी "अब मैं बोलूँगी" के लिए शिवना कृति सम्मान से नवाज़ा गया। सभागार में उस पल जो तालियाँ बजीं, वो बहुत देर तक गूँजती रहीं। वहाँ मौजूद लोगों ने सभी सम्मानित हो रहे रचनाकारों के प्रति खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया। पुरस्कार वितरण समारोह के बाद भगोरिया नृत्य हुआ और पारंपरिक व्यंजन जैसे दाल, बाटी, चूरमा, कढ़ी, कुल्फी सहित लज़ीज़ व्यंजनों से लबरेज़ डिनर का लुत्फ़ उठाया गया। तत्पश्चात हम लोग वापस रात में कैंपस के लिए निकल पड़े अगले दिन फिर सुबह 8:30 बजे कैंपस से निकले और सीहोर स्थित क्रिसेंट रिसोर्ट पहुँचे।

दूसरा दिन: जब टीम थोड़ी बदली पर जोश दोगुना रहा

दूसरे दिन देवमाल्या, सुप्रजा और ताविषी नहीं आ पाए लेकिन मेरी ही क्लास के आर्या शर्मा और कमलेश कुलमी ने स्मृति मैम से आने की अनुमति ले ली। और फिर दिन भर काम के साथ ख़ूब मज़े किए। नई जोड़ी, नई ऊर्जा, वही उत्साह।

डिबेट या न्यूज़ आख़िर क्या चाहता है दर्शक?

'सिद्धपुर सभामंडप' में यह सत्र इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर एक ज़रूरी बहस थी। संचालन आदित्य श्रीवास्तव ने किया। वक्ता माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल और IND24 चैनल के संस्थापक नवीन पुरोहित थे। विजय सर ने डिबेट की जो परिभाषा की वह लाज़वाब थी। उनका कहना था, "दिन भर में से एक चिंदी पकड़ो और शाम में उसका चादर बना दो वो है - डिबेट। 8-10 अतिथियों को 2-3 घंटे बिठाकर एक लो बजट मूवी की तरह चला दो। यह इसीलिए चलती है ताकि 24 में से कुछ घंटे ऐसे पास हो जाएँगे जिसमें पैसा कम ख़र्च हो। भारत में 25 साल से ज़्यादा हो गए 24 घंटे के न्यूज़ चैनलों को लेकिन हमारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज भी चाइल्डिश ही है।" वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल ने कहा कि, "जिसे प्राइम टाइम कहा जाता है, वह पत्रकारिता की दृष्टि से क्राइम टाइम हो चुका है। आज दर्शक ग्राहक भी है और उत्पाद भी।" भारतीय परंपरा में शास्त्रार्थ का ज़िक्र करते हुए उन्होंने टीवी डिबेट्स को उसका "विकृत रूप" बताया। नवीन पुरोहित ने वो बात कही जो बहुत कम लोग कहते हैं, उनका कहना था कि अगर कोई यह कहता है दावा करता है कि हम सबसे भरोसेमंद हैं तो वह आपके भरोसे पर ही सवाल है कि आपको कहना पड़ रहा है!!! आज भारतीय मीडिया संक्रमण की चरम सीमा पर है।" ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल- BARC की एकाधिकारी और TRP व्यवस्था पर भी सवाल उठे। कुलगुरु ने अंत में हम सभी विद्यार्थियों के लिए कहा, "जो भी विद्यार्थी इस अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में आ रहे हैं वे अपना बुद्धि-विवेक जागृत रखें, हमेशा कुछ

अलग करने की कोशिश करें।"

अधूरे पन्ने...पूरा साथ

सिद्धपुर सभामंडप में हो रहा यह सत्र प्यार, साहित्य और ज़िंदगी का एक अनोखा संगम था जिसका संचालन शहरयार ने किया। वक्ता दिल्ली यूनिवर्सिटी में जर्नलिज़्म के प्रोफ़ेसर राकेश कुमार और पेशे से इंजीनियर शरद जैन थे। दोनों ने अपनी-अपनी प्रेम विवाह की कहानी साझा की साथ ही एक साहित्यकार से शादी करना और पेशेगत व्यस्तताओं के बीच अपने व्यक्तिगत रिश्तों के साथ किस तरह तालमेल बैठाना है यह बताया। शरद जैन ने बताया कि उनकी पत्नी वामा साहित्य मंच इंदौर की अध्यक्ष ज्योति जैन और उन्होंने मिलकर तय किया था हम भागकर नहीं, माता-पिता की रज़ामंदी से शादी करेंगे। उनका कहना था कि माँ हमेशा मानी हुई रहती है, उसे सिर्फ़ बतलाना पड़ता है। यह एक जुमला नहीं बल्कि एक सच्चाई भी है। राकेश कुमार का मानना था कि अंतरजातीय विवाह समाज को हेल्थी बनाता है और वो ही सही मायने में इंसान को मनुष्यों का समाज बनाता है, न कोई वर्ण, न जाति। उनकी पत्नी प्रज्ञा के उपन्यास 'काँधों पर घर' की भी चर्चा हुई जिसमें एक दृश्य है जहाँ बच्चा पानी में डूब जाता है और एक व्यक्ति निराश खड़ा हो जाता है। महिला लेखक से शादी करने वाले को क्या टिप्स देंगे यह सवाल सत्र में ठहाकों का सबब बना। राकेश जी का जवाब था- "एक ही क्षेत्र में रहने पर अक्सर टकराहट होती है। सामने वाले को उनकी स्पेस दें, उनकी इंपॉर्टेंस समझें साथ ही रिश्तों में पेशेंस बहुत ज़रूरी है।" शरद जैन का अनुभव से यह बात निकली कि, "शादी के पहले सिर्फ़ प्यार ही प्यार दिखता है, शादी के बाद सब कुछ यथार्थ में बदल जाता है तब बहुत ज़रूरी है कि आपको यह आना चाहिए कब कहाँ चुप रहना है।"

राजनीति की डगर में कितने फूल, कितने काँटे

सिद्धपुर सभामंडप में हो रहे इस सत्र का संचालन शिवना प्रकाशन के संस्थापक पंकज सुबीर और पारुल सिंह ने किया। वक्ता थे तीन बार के विधायक सुदेश राय और उनकी पत्नी अरुणा राय। "बहुत सारे फल जिस पेड़ पर होते हैं, वो झुक जाता है और अधिक विनम्र हो जाता है।" यह पंक्ति पंकज सुबीर ने विधायक सुदेश राय के परिवार और उनके पूरे व्यक्तित्व पर की थी। विधायक महोदय का कहना था "पारिवारिक जीवन ख़ुशहाल हो तो मनुष्य का जीवन बहुत आसान रहता है।" उनकी धर्मपत्नी अरुणा राय ने भी खुल कर विधायक जी की तारीफ़ की और कहा ये बहुत साफ़ सुथरे इंसान है जो करते हैं दिल से करते हैं। रात 3 बजे भी किसी की मदद के लिए उठ जाते हैं। एक दर्शक ने पूछा, इतने बड़े पद पर रहते हुए घमंड क्यों नहीं आया? तो सुदेश राय का जवाब था, "मैं जिन लोगों के सानिंध्य में रहा हूँ जब उनमें नहीं आया तो मुझमें कैसे आएगा और मैं जिस परिवार से आता हूँ वहाँ घमंड को किसी शब्दकोश में नहीं रखा जाता।"

रेडियो सखी ममता सिंह से मुलाकात

समागम के दौरान विविध भारती की प्रसिद्ध उद्घोषक ममता सिंह से विशेष बातचीत का मौका मिला, जिन्हें श्रोता 'रेडियो सखी' के नाम से जानते हैं। असम के धुबरी से शुरू हुई उनकी यात्रा एक मर्फ़ी रेडियो, लकड़ी की मेज़ पर रखा सिला हुआ कवर और एक छोटी बच्ची जो रेडियो के पीछे झाँककर देखती थी कि आवाज़ें कहाँ छिपी हैं। ममता सिंह के लिए रेडियो हमेशा से परिवार के सदस्य की तरह अहम रहा है। क्या पॉडकास्ट से रेडियो को ख़तरा है? इस पर उनका कहना था कि "बिल्कुल नहीं पॉडकास्ट ने तो रेडियो का काम आसान कर दिया है। पहले रेडियो प्रोग्राम एक निश्चित समय पर ही सुने जा सकते थे अब पॉडकास्ट की वजह से श्रोता अपनी सुविधा के अनुसार उसे कभी भी सुन सकते हैं।

कुछ ख़ास मुलाकातें जो यादगार बन गईं

इस पूरे सफ़र में मेरा जिन शख्सियतों से मिलना हुआ, वो किसी नेमत से कम नहीं था फिल्म अभिनेता यशपाल शर्मा, भारत सरकार से 2015 में सम्मानित पद्मश्री ज्ञान चतुर्वेदी, प्रसिद्ध कवि यतींद्र मिश्र, फिल्म निर्देशक इरफ़ान ख़लील ख़ान, रवींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति संतोष चौबे, वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी वर्तमान में सीएम सिक्योरिटी हेड समीर यादव, शशांक गर्ग, सीहोर से तीसरी बार के विधायक सुदेश राय, लीलाधर मंडलोई, शशिकांत यादव, पंकज सुबीर, शहरयार सहित कई गुणीजनों से व्यक्तिगत मुलाकात हुई।

भोजन जो दिल में बस गया

दोनों दिन हर समय खाना इतना शानदार रहा कि उसका ज़िक्र न करना नाइंसाफी होगी। मेरे जैसे खाद्यरसिक के लिए तो यह सोने पर सुहागा था। कहीं कोई कमी नहीं बस लज़ीज़ खाना और बेहतरीन मेज़बानी। शिवना प्रकाशन ने हर बात का ख़्याल रखा।

विदाई का लम्हा

अंत में जाते वक़्त जब पंकज सुबीर जी ने हम विद्यार्थियों से कहा कि वे चाहते हैं आने वाले 5-7 साल बाद हम लोग भी इस समारोह में पत्रकारिता के किसी सत्र में वक्ता के रूप में आए। उनका यह कहना हमारे अंदर जोश भर गया। दो दिन में कई लोगों से मिलना हुआ, विभिन्न विचारों से टकराना हुआ, बहुत सारे सवालों के जवाब मिले और इतने ही नए सवाल उठने लगे कि लगा यह सफ़र शायद अभी ख़त्म नहीं हुआ, बस एक पड़ाव आया है। प्रशांत, भूमि, हर्ष, चैतन्य, आर्या, कमलेश, शांतनु भैया, सुप्रजा, महक, प्राक्षि, निकिता, देवमाल्या, तावीषी इन सभी साथियों ने भी इस यात्रा को यादगार बनाया और डॉ. लाल बहादुर ओझा सर जिनका मार्गदर्शन हर क़दम पर मिला, जिनकी उपस्थिति ही एक आश्वासन थी कि वह हमारे साथ है।

शिवना साहित्य समागम 2026 यह एक आयोजन नहीं एक संपूर्ण अनुभव रहा। जहाँ साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता, राजनीति, तीसरे लिंग के संघर्ष, प्रेम और जीवन की डगर सब कुछ दो दिनों में समा गया। शिवना प्रकाशन को बहुत-बहुत धन्यवाद ऐसा कार्यक्रम आयोजित करने के लिए जहाँ हर इंसान कुछ लेकर लौटा।

000

प्रतिक्रियाएँ

शिवना साहित्य समागम पर अतिथियों की प्रतिक्रियाएँ

प्रज्ञा पांडे, गोविन्द शर्मा, दिव्या माथुर, ममता सिंह, पल्लवी त्रिवेदी, मुकेश नेमा, अरुण सातले, डॉ. विजय सक्सेना, लीलाधर मंडलोई, प्रेम जनमेजय, गौतम राजऋषि, शैली खड़कोतर, शिखा वार्ष्णेय, मोहन वर्मा, देवमाल्य बैनर्जी।

साहित्य के सत्रों के विभिन्न रंग और भगौरिया नृत्य

होली के बस एक दिन पहले सीहोर की रंग भरी साहित्यिक यात्रा से वापस लखनऊ आ गए। सीहोर के लिट फेस्ट का अर्थ एक आत्मीय साहित्यिक और पारिवारिक मेला है। पंकज सुबीर और शहरयार के आतिथ्य में उसे पारिवारिक मेला कहना अच्छा लग रहा है। आत्मीय वातावरण में हम विमर्शपूर्ण सत्रों की सुंदर स्मृतियों को सँजोकर लौट आए।

सीहोर लिट फ़ेस्ट में भगौरिया नृत्य की सूचना से मित्र मनीषा कुलश्रेष्ठ की लिखी भगौरिया कविता याद आ गई जिसमें रोमांस एकदम मांसल होकर अपनी गति में छलकता है। लोक का रंग मुझे बहुत तीव्रता से अपनी ओर खींचता है। मुझे भगोरिया नृत्य के लिए जाना था लेकिन क्या सचमुच ऐसा था। किसी भी निर्णय में अवचेतन बहुत चेतन होता है।

हमारे मन में बात तो भगौरिया की थी। हमने शहरयार से कहा कि हम सिर्फ़ सुनने आएँगे और ये जो शहर के यार हैं इन्होंने कहा- ठीक है। हमने कहा- कि हम अकेले नहीं आएँगे हमारे साथ उषा राय भी आएँगी। आप उन्हें भी ले आएँ। फिर यह सूचना मिली कि "नई सदी की नई कहानी" पर आपको बात करनी है। मंच से दूरी बनाने वाली मैंने सहज ही हाँ कहा। शब्दों को प्रेषित करने का एक ओरा होता है। पंकज जी के नेह निमंत्रण की पांतियाँ भोपाल पहुँचने तक आतीं रहीं। शिवना प्रकाशन की भरी पूरी दुनिया में एक और मोती है जिसका नाम शहरयार है।

स्लीपर बस की यात्रा का हमारा और लेखिका उषा राय का कोई पूर्व अनुभव नहीं था सो मन में थोड़ा डर था लेकिन यात्रा सुखद रही और हम सुबह-सुबह भोपाल के लाल घाटी बस स्टॉप पर उतर गए। बंटी जिन्हें हमें भोपाल से सीहोर ले जाना था और जिनका नाम हमने बंटी सीहोर सेव कर लिया था उनका फ़ोन ठीक सुबह छह बजे ही आ गया, यह जानने के लिए कि बस नियत समय से पहुँच रही है या नहीं। हमने उन्हें बस परिचालक से बात करके बताया कि बस बिल्कुल समय पर है। वे गाड़ी के साथ लाल घाटी पर पहले से ही मौजूद थे।

भोपाल से सीहोर की दूरी लगभग अड़तीस किलोमीटर है। सुबह सड़क-ट्रैफिक के शोर के अभिशाप से मुक्त थी। सड़क के दोनों ओर खेत और पेड़ कहीं सरसों, कहीं गेहूँ, बीच में एकाध गाँव भी पार कर हम लगभग एक घंटे में क्रिसेन्ट क्लब रिज़ॉर्ट पहुँच गए। गाड़ी से उतरते ही नितांत अपने से शहरयार आते हुए दिखे। बाहर ही ज्योति जैन जी मिल गईं जो ख़ुद ही मिलने चलीं आईं। शहरयार ने परिचय कराया वे वामा साहित्यिक संस्था की अध्यक्ष हैं। हमने कहा कि हमने आपकी वामा संस्था का ख़ूब नाम सुना है। दो क़दम भीतर रखते ही पंकज सुबीर मिले। स्वागत करने का उनका अंदाज़ ही इतना निराला, इतना आत्मीय और प्रेम पगा है कि लगा कि किसी साहित्यिक कार्यक्रम में नहीं अपने प्रियजन के घर आई हूँ।

रिसेप्शन काउन्टर पर ज़रूरी औपचारिकता पूरी करने के बाद हम अपने कमरे में जिसका नंबर एक सौ चार था पहुँच गए। कमरा साफ़ सुथरा और सुसज्जित था। मन ख़ुश हो गया। यात्रा की आधी थकान ख़त्म हो गई जैसे। तीन मंचों पर पूरे-पूरे दिन अलग अलग विषयों पर इतने अच्छे साहित्यिक विषय विमर्श थे कि हर जगह रुकने का मन होता था। सत्रों का समय संचालन अभूतपूर्व था। समय पर सत्र को शुरू करने और और समाप्त करने का काम वक्ता पर बिना दबाव के संयोजित हो रहा था। इसको संयोजित करने का दबाव जिन पर था इसे उन्होंने ही जाना होगा। सारगर्भित सत्रों के बाद पहले दिन शाम को भगौरिया नृत्य में हम सब शामिल थे।

अगले दिन के सत्र भी बहुत रोचक थे। बहुत से आत्मीय मित्र मिले जिन्हें फेकबुकीय माध्यम से ही गहरा मित्र मान लिया था। शाम को फूलों की होली हुई। फाग के गीत सुने और जी भर कर फागुन मनाया। धीरे-धीरे सबके निकलने का समय होने लगा। सारे आत्मीय मित्रों से विदा लेते और फिर मिलने का वायदा करते, दो दिनों के उर्वर समय को मन में बसाये हम भी अपने गंतव्य लखनऊ आ गए। उस ख़ूबसूरत रिज़ॉर्ट के विशाल प्रांगण में रहते हुए यह नहीं लगा कि घर से कहीं दूर हैं।

भोजन दोनों दिन बहुत स्वादिष्ट था। कुछ नए स्वाद मिले जिसमें ख़ास तौर पर संतरे की

कुल्फी, कैसे भूलेगी। साहित्यिक कार्यक्रमों को इतना ही आत्मीय होना चाहिए तब साहित्य सही मायने में प्रेरक होता है। सीहोर की स्थानीय सादगी और अपनेपन का कोई जवाब नहीं है। वामा की सभी मित्र-सदस्याएँ अनौपचारिक मुसकानों की ऊष्मा से भरी थीं। विशेष बात जो लगी वह वहाँ की वे बालिकाएँ थीं जो उम्र में छोटी और व्यवहार में विनम्रता और परिपक्वता का अद्‌भुत संयोग हैं।

प्रज्ञा पांडे, लखनऊ

0

बाज़ार समय में कथाकार को भी बदलना होगा...

मालवा निमाड़ के कथाकारों की उपेक्षा कब तक, सीहोर लिट फेस्ट के एक सत्र से-

जनपदीय साहित्य ही सर्वकालिक और सार्वभौमिक है क्योंकि यह लोक से उपजा है। मालवा-निमाड़ जनपद कथाकारों की उपेक्षा साहित्यिक सत्ता के गलियारों में हो सकती है पाठकों के मन पर जनपद में रचा सहित गहरे समाया हुआ है। राजधानी या महानगरों द्वारा मालवा निमाड़ ही नहीं देश भर के जनपदों के कथाकारों को हाशिए में रखने का प्रतिरोध ज़रूरी हो गया है।

जब कथाकार अपनी स्वयं उपेक्षा करना छोड़ देगा, अति विनम्रता से मुक्त होगा, अपने साहित्य को बाज़ार बन गए समय में एक उत्पाद की तरह रखेगा कोई उसकी उपेक्षा नहीं कर सकेगा। साहित्यकार अपनी कथाओं में अपने समय और देश को लिखता है। ख़ांटी शब्दों का सहज प्रयोग करने में संकोच नहीं होना चाहिए।

अकादमी, विश्वविद्यालय, पीठ और संस्थाओं से बहुत ज़्यादा आशा करना शायद ठीक नहीं होगा। यहाँ पदस्थापना से लेकर साहित्य की तासीर तक सब ख़ास विचारधारा से प्रभावित होती है।

साहित्य का पहला और अंतिम लक्ष्य मानव है और युवा साहित्यकारों को इसे ही केंद्र में रखकर कथा साहित्य को आगे बढ़ाना होगा। सार्थक संवाद से भरपूर एक महत्त्वपूर्ण सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार अरुण सातले, डॉ. गरिमा संजय दुबे और ज्योति जैन ने

सहभागिता कर शिवना प्रकाशन के सीहोर लिट फेस्ट को जीवंत बना दिया। देवास, इंदौर, भोपाल, सीहोर और देश भर से पधारे साहित्यकारों के इस कुम्भ में यह सत्र संवाद की प्यास को बढ़ा गया। साहित्य समागम में ऐसे ख़ास सत्र का संचालन करने का गौरव आपके मित्र गोविंद शर्मा को प्राप्त हुआ।

गोविन्द शर्मा, खंडवा

0

एक यादगार समारोह

एक यादगार समारोह - सब कुछ तारीफ़े-काबिल - अनौपचारिक और आत्मीय, बिल्कुल अपने परिवार जैसा माहौल था- प्रिय पंकज सुबीर, शहरयार, आकाश, शिवम और उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई। बहुत सी पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, जिसमें मेरा कहानी संग्रह के 'पंगा' भी था, मुख्य अतिथियों में शामिल थे डॉ ज्ञान चतुर्वेदी और यशपाल शर्मा, संचालन- पंकज सुबीर।

मैं केवल एक ही दिन ठहर पायी क्योंकि 1 मार्च को भोपाल के दुष्यंत कुमार स्मारक संग्रहालय में फागोत्सव में आमंत्रित थी। क्रिसेंट के हरे-भरे परिसर के अंदर और बाहर आयोजित चार सत्रों में उपस्थित रह पायी, एक सत्र 'विदेशों में हिन्दी साहित्य रचने की चुनौतियाँ' में लंदन से शिखा वार्ष्णेय और मैं वक्ता थे, जिसका उत्तम संचालन किया वंदना अवस्थी दुबे और नीलिमा शर्मा ने।

बहुत से मित्रों से मिलकर भी बहुत अच्छा लगा – डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, संतोष चौबे, मनीषा कुलश्रेष्ठ, लीलाधर मंडलोई, नीलेश रघुवंशी, उर्मिला शिरीष, जयंती रंगनाथन, जवाहर कर्णावट, नीलिमा शर्मा, पारुल सिंह और प्रेम जनमेजय इत्यादि। सभी से मिलना जैसे परिवार के सदस्यों से मिलने जैसा था।

दिव्या माथुर, इंग्लैंड

0

सुनहरी स्मृतियों में दर्ज

28 फरवरी और पहली मार्च... ये तारीख़ें सुनहरी स्मृतियों में दर्ज हो गईं। जब जब स्मृतियों के विशिष्ट पन्ने खुलेंगे, उनमें पहले पन्ने पर इन तारीख़ों में दर्ज, समारोह की रौनक, आत्मीयता और साहित्यिक समृद्धि

होगी। फिर भी....कुछ स्मृतियों को, कुछ मेल मुलाक़ात के जज़्बात साझा करने के लिए अल्फ़ाज़ की कमी हो जाती है। आज ऐसा ही मेरे साथ हो रहा है। क्या लिखूँ और क्या ही कहूँ... शिवना साहित्य समागम का ये यादगार आयोजन बेहद सराहनीय रहा। एक से बढ़ कर एक सत्र, एक से बढ़ कर गुणी साहित्यकार, एक से बढ़ कर एक मेहमान... सब कुछ बहुत अच्छा और रोचक रहा। इतने लोगों से मिलना, उन्हें सुनना, उनसे बहुत कुछ सीखना... मैंने तो ख़ुद को समृद्ध किया। पंकज सुबीर भाई, शहरयार, आकाश माथुर और शिवना की पूरी टीम का अगाध स्नेह मिला। पंकज भाई और भाभी जी ने कहा यह हमारा मायका है। जिसमें ज्योति जी का स्वर और प्रेम भी शामिल था। सच में ऐसा ही एहसास हुआ। ज्योति जी और पद्मा जी से मिलना सुखद रहा। कम बोले को ज़्यादा समझना...। पूरी टीम को बधाई और धन्यवाद। सबसे मुलाक़ात का शुक्रिया। सफल आयोजन की बहुत बहुत बधाई।

ममता सिंह, मुंबई

0

सुंदर संकल्पना साकार

शिवना साहित्य समागम के बीते दो दिन बेहद सार्थक, उल्लासपूर्ण और अपनत्व की गर्माहट से भरे रहे। पंकज सुबीर, शहरयार, आकाश और शिवना की पूरी टीम ने अद्‌भुत काम किया है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम होगी। यह समारोह एक उत्कृष्ट प्रबंधन की मिसाल है, जो अन्य स्थानों पर कम ही देखने को मिलता है। मेज़बानों की आत्मीयता ने सारे मेहमानों को भी एक तरह से मेज़बान जैसा ही महसूस कराया। सभी को लगा कि यह उनका अपना कार्यक्रम है जो सत्य भी है।

एक सुंदर संकल्पना को साकार कर उसे बेहतरीन आयोजन में बदलने के लिए शिवना की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद।

पल्लवी त्रिवेदी, भोपाल

0

सराहनीय कोशिश

शिवना प्रकाशन समारोह। ये एक

आत्मीय आयोजन था। पुराने दोस्तों और परिवार जनो से लंबे समय बाद घुलमिल कर बतियाते जैसा अवसर। यहाँ व्यंग्य की यूनिवर्सिटी जैसे ज्ञान चतुर्वेदी थे और व्यंग्य के अनवरत यात्री प्रेम जनमेजय भी। कैलाश मंडलेकर भी मिले यहाँ और विद्वान लीलाधर मंडलोई भी। मनीषा कुलश्रेष्ठ जैसे पुराने मित्रों से मिलने का सुयोग भी बना और कुछ नए मित्र भी बने। प्रेम जनमेजय जी, कैलाश मंडलेकर और पल्लवी त्रिवेदी के साथ मंच साझा करना भी उम्दा था। इरा के कारण प्रशंसा पाना इनके अतिरिक्त था। इस मायने में यह मेरे लिए लाभ का सौदा था।

क्रिसेंट के हरे-भरे परिसर में उपस्थित प्रबुद्ध वक्ताओं को सुनना ख़ुद को समृद्ध करने जैसा था। पर समानांतर सत्रों के कारण सभी नहीं सुने जा सके। पर सबको सब मिलता भी नहीं। पर जितना मिला वह दिल को ख़ुश करने के लिए काफी था। और सबसे उम्दा थी पंकज सुबीर की आत्मीय मेज़बानी। इस सरल मेज़बान ने अतिथियों के लिए बेहतरीन आवास व्यवस्था की, उनकी थालियों में अति स्वादिष्ट मालवी भोजन परोसा, उन्हें पगड़ी पहनाई, रंग-बिरंगे दुपट्टे ओढ़ाए, भगौरिया से परिचित कराया और अपनी सरल-सहज मुस्कराहट से सबके दिलों में घर बना लिया। ऐसे में पंकज सुबीर और उनकी टीम को शुक्रिया कहना तो बनता है। आज के मुश्किल वक़्त में जब लोग किताबों से दूर जा रहे है, उन्हें साहित्य के मायने समझाने की आपकी ये कोशिश सराहनीय है। ऐसा ही करते रहिए और अगली बार भी मुझे बुलाना याद रखिये। एक बहुत सफल और सुफल आयोजन के लिए पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई तथा शुभकामनाएँ।

मुकेश नेमा, इंदौर

0

समर्पण का सुफल

पंकज सुबीर के निर्देशन और प्रत्येक साहित्यकार का जिस आत्मीयता से स्वागत किया गया, उसे प्रत्यक्ष देखकर अभिभूत हूँ कि इतना वृहद् आयोजन उनकी पूर्ण निष्ठा और समर्पण का सुफल है। दो दिनों में होने

वाले प्रत्येक सत्र ने सफलता का शिखर छू लिया। साथ ही प्रिय शहरयार और आकाश माथुर का विनम्रता से प्रत्येक सत्र का प्रारंभ कराना और शांति से सम्पन्न कराना भी सफलता का सूत्र है। आत्मीय बधाई। हम खंडवा के सभी रचनाकार इस आयोजन में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा कर और समृद्ध हुए। इस तरह के आयोजन साहित्य के कठिन समय में आयोजित होना बहुत आवश्यक हैं, जिससे नई पीढ़ी को साहित्य के संस्कार प्रदान किये जा सके। बहुत-बहुत बधाई एक अत्यंत सफल आयोजन के लिए शिवना टीम को।

अरुण सातले, खंडवा

0

पूरी टीम बधाई की पात्र

शिवना प्रकाशन एवं ढींगरा फ़ाउण्डेशन द्वारा सीहोर में आयोजित दो दिवसीय साहित्य सम्मेलन में मुझे स्वास्थ्य पर एक सत्र में वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया, तमाम बुद्धिजीवी लोगों के बीच ये सत्र बहुत अच्छा रहा एवं श्री अखिलेश राय जी के साथ एक बार फिर मंच साझा करने का मौका मिला। डॉ. परी पुरोहित के मंच संचालन में दर्शकों द्वारा पूछे गए कई सवालों के जवाब मेरे एवं अखिलेश राय जी द्वारा दिए गए। इस आयोजन की तुलना मैं किसी इंटरनेशनल मेडिकल कांफ्रेंस से कर सकता हूँ, आयोजन के लिए वाक़ई पूरी शिवना प्रकाशन टीम बधाई की पात्र है, शहरयार का कोऑर्डिनेशन आयोजन की मुख्य चाबी के रूप में दिखाई दिया जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं..... और इस सब के बाद श्री पंकज सुबीर के बारे में क्या ही कहूँ... छोटा मुँह बड़ी बात हो जाएगी, किन्तु बोलना भी ज़रूरी है क्यूँकि मन की भावनाएँ शब्दों मे पिरोने के लिए ही तो वह हमेशा प्रोत्साहित करते हैं, उनको ऐसे धन्यवाद न देकर एक वादा कर देता हूँ कि अगले साल के आयोजन में अपने टूटे-फूटे साहित्य ज्ञान को समेटकर कुछ तो ऐसा रचने की कोशिश करूँगा कि एक नौसीखिया ही सही पर एक साहित्यकार के रूप में आपके समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज करवा सकूँ।

फिर से और तहे दिल से बहुत सारा

सम्मान एवं आभार। पूरी टीम को सफल आयोजन की बधाई।

डॉ. विजय सक्सेना, भोपाल

0

आत्मीय आयोजन

यह फेस्ट से अधिक आत्मीय आयोजन था। जहाँ हमने अपने पारिवारिक होने की धड़कनों को बेहतर रूप में दोस्तो के साथ सुना। साहित्य की सुगंध में बीते हुए लोक से मुलाक़ात की और रसानुभूति में डूब गए। परिवेश के सौंदर्य की ताज़गी और निजता में एक प्रदीप्त वातावरण अनुभूत किया। संवाद में गहराई बनी रही और विचारों का आकाश खुलता गया। होली के रंगों में उत्सव का अनुराग-उल्लास था जो छूटी हुई परंपरा में ले गया। अपूर्व था ओर छोर और सच कहूँ तो वर्णनातीत।

शहरयार ने रमज़ान के मुबारक महीने में भी अपनी पूरी मुहब्बत और कलात्मक दक्षता के साथ फेस्ट को जिस शिद्दत के साथ अंजाम दिया वह क़ाबिले-रश्क़ है। सभी ने इस बात को अनुभव किया कि शहरयार और पूरी टीम ने लाजवाब काम किया और पंकज सुबीर का ऐतिहासिक साथ दिया। हम सबका सलाम। आभार और साधुवाद।

लीलाधर मंडलोई, दिल्ली

0

नई ऊँचाइयों को छुआ

शिवना साहित्य समागम से कुछ अधूरी - सी प्रसन्नता प्राप्त कर लौट आया हूँ। अधूरापन, मेरे घर को अपना मायका मानने वाली, सुधा ओम ढींगरा की अनुपस्थिति के कारण अनुभव हुआ।

प्रिय पंकज सुबीर ने बताया उन्हें वीज़ा इसलिए नहीं मिला क्योंकि उन्होंने स्वयं को एक लेखक बताया था। प्रिय पंकज सुबीर ने समय-समय पर उनका उल्लेख कर उनकी अनुपस्थिति के दुख को बहुत कुछ कम किया। सुधा जी के मार्गदर्शन में, पंकज सुबीर के निर्देशन में पूरी टीम ने नई ऊँचाइयों को छुआ है। हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

प्रेम जनमेजय, दिल्ली

0

ज़बरदस्त

आत्मीयता, प्रेम और साहित्य का नशीला कॉकटेल रहा ये दो दिवसीय उत्सव। शहरयार ख़ान ने जिस तरह से सारे मेहमानों और सत्रों के एक-एक पहलू का ध्यान रखा हुआ था अपने उस्ताद की देख-रेख में, वह ज़बरदस्त था। शाबास लड़के

गौतम राजऋषि, कोलकाता

0

भव्य आत्मीय आयोजन

'शिवना साहित्य समागम' से लौट अतिथि अभी होली से ज़्यादा आयोजन की ख़ुमारी में हैं। एक ऐसा आयोजन, जो जितना बौद्धिक था, उतना ही मस्ती से सराबोर भी। ऐसा आयोजन जो हर अतिथि को विशेष महसूस कराते हुए भी बिल्कुल घर में होने का अहसास कराए। इस भव्य और आत्मीय आयोजन का हिस्सा होना प्रफुल्लित करने वाला अनुभव था। शानदार वैचारिक सत्र, संगीत, नृत्य, भोजन, साहित्य के सारे बड़े नाम, प्यारे दोस्त। आदरणीय पंकज सुबीर और उनका परिवार, शहरयार, आकाश, शिवम सहित टीम का परिश्रम और संकल्प पूरे कार्यक्रम में नज़र आ रहा था।

ज्योति जैन जी के हाथ में समय प्रबंधन की कमान थी, तो कार्यक्रम घड़ी की सुई से शुरू और ख़त्म होने ही थे। जैसे घर की शादी में सबसे ज़्यादा उत्साह बच्चों में होता है, वैसे ही ऊर्जावान बच्चे आयोजन की रीढ़ थे, हर एक की मदद के लिए तत्पर। प्रिय स्मृति आदित्य जी को शिवना कृति सम्मान से नवाज़ा जाना, हम सबके लिए भावुक और गर्व का क्षण था। 'नई सदी में नई कहानी' विषय पर आदरणीय डॉ. उर्मिला शिरिष, डॉ. रेखा कस्तवार और प्रज्ञा पांडे जी के साथ सत्र संचालक के रूप में चर्चा हुई। यह आयोजन मीठी याद बन कर साथ रहेगा।

शैली खड़कोतर, भोपाल

0

शानदार आयोजन

क्या ही सुंदर आयोजन। शब्द, भाव, आत्मीयता, सबका स्तर उत्कृष्ट। हर एक सत्र सुंदर, सार्थक एवं रोमांचक उस पर चार चाँद लगाती पंकज सुबीर और उनकी टीम की आत्मीयता। लगा जैसे किसी पारिवारिक उत्सव में शामिल हो रहे हैं। समापन से पहले ही लौटने की विवशता से मन भारी हो रहा था। साहित्य चर्चा और विमर्श के अलावा ढेर से मित्रों से मेल मिलाप। ढेर सी ऊर्जा, प्रेरणा और प्रेम समेट कर लाए हैं। आजीवन याद रहेगा यह शानदार आयोजन। पंकज सुबीर, शहरयार, आकाश, शिवना और पूरी टीम को ख़ूब-ख़ूब बधाई और हार्दिक आभार।

शिखा वार्ष्णेय, इंग्लैंड

0

प्रशंसा को शब्द नहीं हैं

यूँ तो साहित्य के छोटे बड़े सत्रों-आयोजनों में भागीदारी होती रहीं है, मगर बहुप्रतीक्षित इस समागम में आकर ऐसा लगा जैसे कि परिवार के किसी आयोजन में आए हों। पंकज सुबीर और शहरयार हों या आकाश माथुर भाई और टीम के अन्य साथी या वालंटियर के रूप में उपस्थित बालक बालिकाएँ हों, आत्मीयता से सराबोर इस समागम की मेज़बानी के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं.. शिवना परिवार की बहन ज्योति जैन, पारुल सिंह जी, गरिमा दुबे जी और पंखुरी बिटिया ने अपनी टीम के साथ मुस्कराते हुए भागदौड़ करते आयोजन को इस तरह सँभाला, जिस तरह परिवार के आयोजन को घर की महिलाएँ सँभालती हैं... दामाद रूप में शरद जैन भाई की उपस्थिति भी क़ाबिले तारीफ़ रही..। साहित्य की बात करें तो ऐसा अद्भुत समागम, लगभग सभी विषयों पर कैसे महत्त्वपूर्ण सत्र और कैसे दिग्गज साहित्यकार.. किनका नाम लें और किनका नहीं.. मालवा निमाड़.. भोपाल से लेकर दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, जयपुर, लखनऊ, इंग्लैंड और देश भर के प्रतिष्ठित लेखक यहाँ आए थे। ये लेखक अलग-अलग सत्रों में अपनी बात रख रहे थे।

मालवा के कथित चटोरों से लेकर स्वाद प्रेमियों के लिये स्वादिष्ट भोजन और मानसिक क्षुधा शांत करने को शिवना की पुस्तकों के स्टॉल पर मनपसंद लेखकों की पुस्तकों का अम्बार... कुल जमा इस समागम

ने आनंद तो बरसाया ही बहुत कुछ सीखने को भी मिला कि आयोजनों को ताम झाम नहीं आत्मीयता यादगार बनाती है... पुनश्च शिवना साहित्य समागम की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई ।

मोहन वर्मा

o

कभी-कभी कुछ यात्राएँ सिर्फ एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि अपने साथ कई नए अनुभव और यादें भी छोड़ जाती हैं। सीहोर में आयोजित शिवना साहित्य समागम 2026 की यह यात्रा भी मेरे लिए कुछ ऐसी ही रही... सीख, बातचीत और गर्व के कई ख़ास पलों के साथ। 28 फरवरी और 1 मार्च को शिवना प्रकाशन द्वारा सीहोर में आयोजित शिवना साहित्य समागम 2026 में शामिल होने का अवसर मिला। मैं वहाँ रेडियो कर्मवीर 90.0 एफ़एम की टीम के साथ गया था। इस बार टीम के कामों को सँभालने और सबके साथ समन्वय बनाए रखने की ज़िम्मेदारी मुझे दी गई थी, इसलिए यह अनुभव मेरे लिए और भी ख़ास रहा। मेरे साथ टीम में नैवेद्य भैया, प्रशांत भैया, सुप्रजा पाण्डेय और भूमि दीदी थे। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग की पत्रिका 'पहल' की टीम भी साथ थी। हमारे साथ आदरणीय डॉ. लाल बहादुर ओझा सर भी थे, जिनका मार्गदर्शन पूरे समय मिलता रहा।

दिन की शुरुआत, बातचीत और अनुभवों के साथ- 28 फरवरी का दिन हमारे लिए काफी व्यस्त लेकिन सीख से भरा रहा। पहले ही दिन हमारी टीम ने 17 प्रतिष्ठित लोगों के साक्षात्कार पूरे किए। दिन भर अलग-अलग सत्रों के बीच भागदौड़ रही, लेकिन हर मुलाक़ात से कुछ नया सीखने को मिला। इसी दौरान कुछ ख़ास लोगों से मुलाक़ात और बातचीत का मौक़ा भी मिला। यशपाल शर्मा जी से सिनेमा के बदलते दौर, ओटीटी प्लेटफॉर्म और लगान जैसे समय की फ़िल्मों पर चर्चा हुई। वे बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता हैं और लगान जैसी चर्चित फ़िल्म में

काम कर चुके हैं। उनसे बात करते हुए फ़िल्मों के बदलते विषयों और समाज पर उनके प्रभाव को लेकर भी कई रोचक बातें जानने को मिलीं।

इसी तरह गोविंद शर्मा जी से व्यंग्य लेखन पर बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि व्यंग्य सिर्फ हँसाने के लिए नहीं होता, बल्कि समाज की सच्चाइयों को सामने लाने का एक तरीक़ा भी होता है।

डॉ. विकास दवे जी, जो मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक हैं, उनसे बाल पत्रकारिता और नई पीढ़ी की पढ़ने की आदतों को लेकर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि बच्चों और युवाओं में पढ़ने और सवाल पूछने की आदत बनी रहनी चाहिए, तभी साहित्य और पत्रकारिता आगे बढ़ेगी।

शाम का सबसे खास क्षण- 28 फरवरी की शाम हमारे लिए बहुत ख़ास रही। हमारी सीनियर और आदरणीय अध्यापक स्मृति आदित्य मैम को शिवना कृति सम्मान 2026 से सम्मानित किया गया। उन्हें उनकी डायरी 'अब मैं बोलूँगी' के लिए यह सम्मान मिला। यह डायरी उनके पत्रकारिता जीवन के अनुभवों पर आधारित है। मंच पर उन्हें सम्मानित होते देखना हम सभी के लिए सच में गर्व का पल था। जब अपने ही शिक्षक या सीनियर को इस तरह आगे बढ़ते देखते हैं, तो हमें भी बहुत प्रेरणा मिलती है।

आख़िर में, एक यादगार अनुभव- मेरे लिए यह समागम सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि सीखने, नए लोगों से मिलने और अपने अनुभव बढ़ाने का एक अच्छा अवसर था। पहले ही दिन 17 साक्षात्कार पूरे करना हमारी टीम के लिए एक बड़ी उपलब्धि रही। इन दो दिनों में साहित्य, पत्रकारिता और सिनेमा से जुड़े कई विषयों पर खुलकर चर्चा हुई।

सीहोर की यह यात्रा मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगी। आभार रेडियो कर्मवीर और विश्वविद्यालय परिवार का, जिन्होंने यह अवसर दिया।

देवमाल्य बैनर्जी

o

प्रतिक्रियाएँ

'वामा' इंदौर सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ

ज्योति जैन, डॉ. दीपा मनीष व्यास, डॉ. गरिमा संजय दुबे, पद्मा राजेंद्र, तनुजा चौबे, डॉ. यशोधरा भटनागर, अर्चना मंडलोई, वैजयंती दाते, अमिता मराठे, इंदु पाराशर, अमर खनूजा चड्ढा, डॉ. रेखा मंडलोई 'गंगा', प्रीति मकवाना, रश्मि चौधरी, अंजना सक्सेना, वृंदा उइके, शैला अजबे, आशा मुंशी, अवंति श्रीवास्तव।

सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल: पीहर का उत्सव

22 दिसंबर 2025 को भाई शहरयार का फ़ोन आता है कि "दीदी अपना फ़ोटो भेज दीजिए"। मेरे पूछने पर कि क्यों, तो बोले "कुछ ख़ास नहीं, बस, कुछ काम है"। मैंने यह समझा कि 28 तारीख़ को चूँकि 'दुनिया काठ की' का विमोचन होने वाला था और वे लोग इंदौर आने वाले थे, तो शायद उसके लिए कुछ बना रहे हों, यही सोचकर मैंने फ़ोटो भेज दिया।

23 दिसंबर को एक निमंत्रण पत्र मेरे व्हाट्सएप पर आया, जिसमें 28 फरवरी और 1 मार्च को सीहोर में होने वाले 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' या 'शिवना साहित्य समागम' की सूचना थी। उसमें छह सदस्यों की आयोजन समिति के बड़े प्रतिष्ठित नामों में एक फ़ोटो और नाम मेरा भी था। मैं हतप्रभ रह गई, चकित हो गई। "यह तो नहीं हो पाएगा..." यह सोचते हुए मैंने तुरंत भाई शहरयार को फ़ोन लगाया और अपनी तरफ़ से भरसक प्रयास किया कि मैं इसका हिस्सा न बनूँ। लेकिन मेरी एक न चली और यह कहकर न चली कि "अपनी बहन पर हमारा इतना हक़ तो है।" इस साज़िश में पंकज सुबीर भैया और शहरयार दोनों शामिल थे।

मैं दरअसल इस तरह की कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहती थी जिसे मैं शायद पूरा न कर पाऊँ। और इतने बड़े नामों के बीच भी मैं अपने को बहुत असहज महसूस कर रही थी। रही सही कसर तब पूरी हो गई जब पंकज सुबीर भैया ने सार्वजनिक रूप से समय-समन्वयक में ज्योति जैन का नाम दे दिया। पसीने छूट गए। लेकिन जब लगा कि अब कुछ नहीं हो सकता और इसे करना ही है तो बस, 28 दिसंबर तक का समय माँगा। 'दुनिया काठ की' का विमोचन होने के बाद ही हम लोग इस की तैयारी में जुट गए। मेहमान कौन हो सकते हैं, सत्र क्या हो सकते हैं, स्थान आदि के बारे में चर्चाएँ होती रहीं। लेकिन इस साहित्य यज्ञ के लिए जो ध्वजा लेकर चलने वाले थे, वे तो शहरयार और पंकज सुबीर भैया ही थे, हम सब उनकी टीम थे। जिस तरह का जोश और ऊर्जा उन दोनों में थी, उससे सारी टीम को तो काम करना ही था।

पंकज भैया और शहरयार ने जो सपना देखा था, 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' उस कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरा। एक से बढ़कर एक सत्र सिद्धपुर सभा मंडप, सिपाही बहादुर सभागार और कुंवर चैनसिंह सभागार- तीनों में समय पर और सफलतापूर्वक पूर्ण हुए। चाहे वह 'उपन्यास की पाठशाला' हो या 'अधूरे पन्ने और पूरा साथ', 'डिबेट या न्यूज़ दर्शक क्या चाहता है'। लघुकथा को लेकर, कविता को लेकर और कथेतर साहित्य को लेकर 'कलाओं की विरासत', 'व्यंग्य', 'शिखरों के वारिस' और यहाँ तक कि 'धर्म और साहित्य के अंतर-संबंध' वाला सत्र भी बेहतरीन रहा। साहित्य-सिनेमा, स्वास्थ्य और पत्रकारिता पर भी सार्थक बात हुई। नई सदी की कविताओं और कहानियों पर भी चर्चा हुई। थर्ड जेंडर के जीवन के संघर्ष पर आधारित सत्र भी बहुत उम्दा रहा।

कुल मिलाकर सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल की सफलता इतनी ख़ूबसूरत थी कि ऐसा लग रहा था कि ये सत्र एक दिन और चलना चाहिए था। पंकज भाई और शहरयार की लगन, मेहनत और जो स्वप्न उनकी आँखों में बसा था, वह इस माध्यम से पूर्ण हुआ। दोनों ने ठहरने से लेकर भोजन की व्यवस्था और "किसी को कोई कमी तो नहीं है", हर बात का ध्यान ख़ुद रखा। टीम तो साथ में थी ही, और सचमुच जितनी भी महिला सदस्य वहाँ आई थीं, उन्हें यही लगा कि वे अपने मायके आई हैं। मेरे लिए तो भाई का घर वैसे भी मायका ही है।

चूँकि मैं आयोजन समिति का हिस्सा रही, इसलिए आयोजन से पूर्व एक बार सीहोर जाना मेरा दायित्व था और वह मैंने निभाया। लेकिन जब मैं वहाँ गई तो पंकज भैया और शहरयार से लेकर आकाश, शिवम, सनी, सोनू, जितेन्द्र, जितेन्द्र राठौर, अरविंद, जयंत कई लोग थे जो पूरी तरह अपने कार्यों में भिड़े हुए थे। भाग-भागकर मुझे कार्यक्रम स्थल से लेकर ठहरने की व्यवस्था तक दिखाना, यहाँ तक कि वहाँ की बच्चियाँ जिस तरह से उत्सुक रहीं और आगे बढ़कर सारा काम किया, यह निश्चित रूप से पंकज भैया और शहरयार के अपनत्व भरे

प्रेमपूर्वक व्यवहार का ही परिणाम था।

यह उन दोनों की विशेषता है कि सामने वाले हर व्यक्ति को ख़ास महसूस करवाना। भले मैं कुछ नहीं, लेकिन उन्होंने यह महसूस करवाया कि मैं ही सब कुछ हूँ। यह बहुत बड़ी बात है और यही व्यवहार कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करता है।

निसंदेह किसी भी आयोजन में कोई छोटी-मोटी कमी हो सकती है, लेकिन सफलता इतनी बड़ी और शिखर तक थी कि वहाँ एक-दो छोटी कमियाँ नज़र ही नहीं आईं। भारत और बाहर से भी जो साहित्यकार आए, हर साहित्यकार की ज़ुबाँ पर यही था कि आयोजन सर्वश्रेष्ठ रहा। मुझे लगता है कि अगला आयोजन जब भी होगा, हम सब मिलकर इसी तरह कार्य करेंगे और इस बार से भी बेहतर आयोजन करने का प्रयास करेंगे। शिवना के साथ आप सब और आप सबकी शुभकामनाएँ तो हैं ही।

चलो... एक बार फिर आसमान छूते हैं,
और पैरों को ज़मीन पर ही रखते हैं....

ज्योति जैन

o

तैयारी अगले वर्ष की

जहाँ समभाव, सम्मान देखने को मिला, जहाँ आत्मीयता, स्नेह देखने को मिला

जहाँ कोई वीआईपी नहीं, बस अपनापन देखने को मिला

जी हाँ 28 फरवरी और 1 मार्च को शिवना साहित्य समागम सीहोर में जो देखा जो समझा उसे शब्दों में बताना बहुत कठिन लग रहा है। पर फिर भी कोशिश करती हूँ कि बहुत सारी अच्छाइयों को कुछ शब्दों में समेटने का। 'शिवना साहित्य समागम' सिर्फ़ साहित्य समागम साहित्य के साथ साथ कब पारिवारिक आयोजन बन गया पता ही नहीं चला। गए थे तो लग रहा था कि सत्रों में भागीदारी रहेगी, कुछ बोलेंगे कुछ सुनेंगे, और शिष्टाचार निभाकर वापस आ जाएँगे, जैसे कि अमूमन हर साहित्य समागम या लिटफेस्ट में होता है, पर पंकज सुबीर भैया, शहरयार और उनकी पूरी टीम ने तो हमको स्नेह से ऐसा बाँध लिया कि इंदौर लौटकर भी हम नहीं लौटे। वहीं के होकर रह गए।

क्या तो अद्भुत सत्र थे, क्या व्यवस्था थी और क्या ही अतिथि थे। सबसे बड़ी बात कोई दिखावा नहीं, कोई बड़बोलापन नहीं, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं। देश के जाने-माने साहित्यकार हों या लिखना सीख रहे नवोदित लेखक हो सब एक पंक्ति में बैठे थे। किसी को कोई संकोच नहीं। साथ बैठ रहे हैं, मस्ती कर रहे हैं, नाच रहे हैं, गा रहे हैं, गंभीर विषयों पर सहजता से चर्चा कर रहे हैं, भला इतनी सरलता किसी साहित्यिक आयोजन में दिखाई देती है क्या ? पर अब कहेंगे कि हाँ दिखाई देती है शिवना आयोजन में। शिवना की पूरी टीम के लिए जो कहें कम ही लगेगा, बस इतना कहूँगी कि आप सब हम सबके दिल में बस गए हो। अभी तक हम आपके साथ ही महसूस कर रहे हैं। अगले वर्ष फिर मिलने की आस अभी से...। सुस्वादिष्ट भोजन का स्वाद अभी भी है। साहित्य सत्रों में विविध विषयों में बरसे रंगों में रँगे हुए हैं, भगौरिया और फाग गीतों की धुन पर अभी भी पैर थिरक रहे हैं।

धन्यवाद शिवना, पंकज भैया, रेखा भाभी, प्यारी बेटियाँ- परी और पंखुरी, आकाश, शहरयार, शिवम, सोनू किस-किस के नाम लूँ कितनों के ही ले लूँ फिर भी छूट ही जाएँगे। तो कर लें तैयारी अगले वर्ष की...।

डॉ. दीपा मनीष व्यास

o

आश्वस्ति से भरा आयोजन

आत्मीयता, अपनापन, बौद्धिक सत्र और अनौपचारिक माहौल में घर में होने की अनुभूति, जहाँ आकर हर कोई प्रसन्न था, जहाँ आयोजक अहंकारी होकर नहीं, विनीत भाव से खड़े रहे, लेखकों का ऐसा मान कि कहे कि प्रकाशक आभारी है, यह शिवना परिवार से सीखने योग्य बात है।

सीहोर दो दिन, बौद्धिक, साहित्यिक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक, समन्वय, समर्पण सहजता के दो दिन। इस बात पर विश्वास और दृढ़ हुआ कि ठान लो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं, सीहोर क़स्बे में

साहित्य समागम का यह दृश्य सुखद था, जहाँ विचारधाराओं के बीच का भेद गल गया, जहाँ बुद्धि और भाव ने अपना संतुलन साध लिया, जहाँ आत्मीयता ने अहंकार को पराजित किया, जहाँ समर्पण ने सहजता साध ली, जहाँ उत्सव ने शहरी ऊब को मिटा दिया, जहाँ वक्ताओं के स्वअनुशासन ने समय प्रबंधन की मिसाल क़ायम की और वह सीटी जिसे बजाकर समय का ध्यान दिलाना था वक्ताओं को, केवल एक वही थी जो उपेक्षित हुई क्योंकि उसे बजाने की आवश्यकता ही नहीं हुई।

जहाँ हर कोई एक परिवार का सदस्य था, आख़िर हम सब साहित्य के इस परिवार का एक हिस्सा ही तो हैं, जहाँ सबका सामान सम्मान था, हर किसी को लगा यह कैसे किया, सबको कैसे साध लिया, सब प्रसन्न, देखिए आयोजन तो बहुत होते हैं, लेकिन व्यावसायिक तरीक़े से, आत्मीयता और आनंद कहीं खो जाता है, कहीं बुद्धि बोझिल हो उठती है, लेकिन यहाँ सब अपने सम पर था, लग रहा था जैसे हम सभी यही तो चाहते हैं। अपने ओढ़े हुए आवरणों को उतार कर सहज होकर सबसे मिलें अपनी बात कहें, उनकी बात सुनें, विभिन्न माध्यमों के विभिन्न सत्र, शानदार सत्र, शानदार वक्ता, और आयोजक शिवना प्रकाशन की टीम का एक पाँव पर खड़े होकर सबको एक सा अनुभव करवाना। पंकज सुबीर भैया, भाभी, बेटियाँ, शहरयार, और सभी युवा साथी, बच्चे सब, क्या ख़ूब समन्वय न हड़बड़ी दिखी, न शोर, सब अपने आप कैसे चला। नहीं अपने आप नहीं इसके पीछे काफी समय की मेहनत और तैयारी थी, बारीक से बारीक चीज़ पर ध्यान दिया गया। फाग में टेसू के फूल होंगे यह सोच एक रचनात्मक व्यक्ति की ही हो सकती है। देश का हर जाना-पहचाना नाम यहाँ था। चर्चाओं का स्तर ऐसा कि एक भी सत्र छूटने का मलाल होता रहा, लेकिन हर बड़ा नाम बड़प्पन के साथ था, अहंकार में नहीं, बहुत भावुक, आनंदित करने वाला, नई ऊर्जा से, उत्साह से और बहुत सारे विचारों को दिशा देने वाला आयोजन। मध्य भारत की पहचान

और एक घर की आश्वस्ति से भरा यह आयोजन यूँ ही परवान चढ़ता रहे।

सत्रों में वक्ता के तौर पर, सत्र समन्वयक के तौर पर उपस्थिति, मेरी दोनों पुस्तकों का विमोचन।

साधुवाद

डॉ. गरिमा संजय दुबे

0

संवेदनाओं से भरे दो दिन

दो दिनों तक चले शिवना साहित्य समारोह से लौटकर मन अभी भी उसी वातावरण में विचर रहा है। वहाँ जो सुना, जो महसूस किया- वह केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि आत्माओं का संवाद था।

विभिन्न सत्रों में जब रचनाकार अपने अनुभव साझा कर रहे थे, तो लगा जैसे हर शब्द जीवन की तपिश से गुज़रकर आया हो। विशेष रूप से एक बात जिसने मेरे मन को गहराई से छुआ- वह थी पुरुष रचनाकारों की संवेदनशीलता। अक्सर समाज पुरुष को कठोरता का प्रतीक मान लेता है, पर जब मंच पर बैठे एक रचनाकार की आवाज़ भर्रा जाती है, जब उनकी पलकें भीग उठती हैं, तब महसूस होता है कि संवेदनाएँ अभी जीवित हैं... और बहुत जीवित हैं। अहसास होता है कि उनके पास स्त्री सा कोमल मन भी है जो सुख का साथी ही नहीं बल्कि दुःख में भी सारथी बन जाने की संवेदनाएँ रखता है।

ऐसे ही दो प्रसंग आए जब पंकज सुबीर जी व शहरयारजी की आँखों ने वह कह दिया जो शब्द नहीं कह पाए.. प्रसंग था वामा साहित्य मंच के द्वारा पंकज जी के अभिनन्दन का, चूँकि वामा सखियों के द्वारा होली व फाग पर रंग-बिरंगी रचनाओं का पाठ किया जा रहा था और इसी क्रम में जब पंकज जी को ज्योति जी के द्वारा गुलाल लगाई गई तो नम आँखों से उन्होंने पिता को याद कर, पिता के बाद की पहली होली पर बहन के द्वारा गुलाल लगाने की बात कर माहौल को बहुत भावनात्मक कर दिया। उस एक क्षण आँखें ही नहीं भीगी, मन भी भीग गया लगा पकंज भाई को दिलासा दूँ, उनके हाथ पकड़ूँ..। दूसरा प्रसंग था जब

शहरयार ने पंकजजी के लिए अपने भाव प्रकट किए, भाव के साथ उनकी भावनाएँ भी बह निकली अश्रु जल के साथ...।

एक और महत्त्वपूर्ण सत्र था 'अधूरे पन्ने और पूरा साथ' वाला सत्र उसमें राकेश कुमार को सुनना अलग किस्म का सुखद अनुभव था। बिरले ही होते है संवेदनाओं से भरे ऐसे पुरुष। मैं हमेशा चाहती रही कि कोई पुरुष जब स्त्री के पास जाए तो वह स्त्री सा मन लेकर जाए पर यहाँ तो कितना सुखद था उन पुरुषों के पास स्त्री सा मन मौजूद था। उनकी आँखों की नमी केवल व्यक्तिगत भावुकता नहीं थी, वह मानो समूचे समाज की पीड़ा, प्रेम और करुणा की अभिव्यक्ति थी। उस क्षण लगा कि साहित्य केवल शब्दों की साधना नहीं, बल्कि भीतर बची मनुष्यता की रक्षा का माध्यम है। एक पुरुष रचनाकार का इस तरह खुलकर भावनाओं को जीना-यह दृश्य मन में विश्वास जगाता है कि संवेदनाओं का संसार अभी सूखा नहीं है।

सत्रों की चर्चाएँ गंभीर थीं, पर उनमें आत्मीयता की ऊष्मा भी थी। संवादों के बीच जो ठहराव आते थे, वे भी बहुत कुछ कह जाते थे। हर वक्ता अपने भीतर का एक अंश मंच पर रख रहा था- और श्रोता उसे सहेज रहे थे। पहला ही सत्र 'धर्म और साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध' अपने आप में अनूठा था- पसंदीदा वक्ता यतीन्द्र मिश्र, विकास दवे जी, पंडित अजय पुरोहित जी को सुनना बहुत सुखद था, और उतने ही ख़ास थे सत्र संचालक विनय उपाध्याय जी उनके प्रश्न व बातचीत का तरीक़ा वाह...।

इस पूरे आयोजन की सुंदरता को और बढ़ाया इसकी सुव्यवस्थित व्यवस्था ने। आयोजन के सूत्रधार पंकज सुबीर जी व शहरयार व उनकी पूरी टीम का समर्पण हर क्षण दिखाई देता था। समयबद्ध सत्र, जिसका श्रेय उन्होंने वामा साहित्य मंच की कार्यप्रणाली से प्रेरित बताया, आत्मीय स्वागत, गरिमामय मंच संचालन और सुस्वादु भोजन- सब कुछ इस प्रकार संयोजित था कि कहीं कोई असंगति महसूस नहीं हुई। उनके प्रयासों ने समारोह को केवल सफल ही नहीं,

स्मरणीय बना दिया।

मेरे लिए यह आयोजन केवल उपस्थिति दर्ज कराने का अवसर नहीं था, बल्कि स्वयं से मिलने का भी एक क्षण था। इन दो दिनों में मैंने अनुभव किया कि साहित्य आज भी हृदयों को जोड़ता है, आँखों को नम करता है और मन को विनम्र बनाता है। इस सुंदर आयोजन में प्रिय स्मृति को शिवना कृति सम्मान से नवाज़ा गया यह हम सब के लिए प्रसन्नता व गौरव का अद्भुत क्षण था, उस गौरव के क्षण को पूरी वामा टीम ने खड़े होकर करतल ध्वनि से गुंजायमान कर अपना स्नेह स्मृति पर सहर्ष बरसाया। ख़ूब सारी बधाइयाँ प्रिय स्मृति आदित्य जी।

इस बात का मलाल है कि कई सैशन मात्र इसलिए छोड़ने पड़े क्योंकि अलग-अलग सभागार में एक ही समय में दूसरे सत्र भी चल रहे थे। पसंदीदा लेखक यतीन्द्र मिश्र को सुनना बहुत सुखद लगा। मनीषा कुलश्रेष्ठ, रेडियो सखी ममता सिंह, जयंती रंगनाथन से मुलाक़ात और गहरी हुई। बोनस के रूप में विनय उपाध्याय जी व राकेश कुमार जी भी मिले।

सुंदर वस्त्रों में सजी, उत्साहित बालिकाएँ व्यवस्था का हिस्सा थी, रँगोली से लेकर, मेहँदी व सभागार की रौनक बख़ूबी निभा रही थी। उनके लिए यह आयोजन किसी उत्सव या सहेली के ब्याह सा ही रोचकता लिए था। बड़ी प्यारी सी थी वे बच्चियाँ जैसे काम करने की होड़ मची हो उनमें। झाबुआ जिले में कई वर्ष रहने के कारण भगोरिया पर्व मेरा पसंदीदा रहा है। कई वर्षों के बाद उसे देखना सुखद था तो उतना ही सुखद रहा फाग महोत्सव।

शिवना साहित्य समारोह मेरे लिए एक ऐसी स्मृति बन गया है, जिसे मैं केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अपनी संवेदनाओं की तहों में सँजो कर रखूँगी। पुन: पंकज भाई, शहरयार व उनकी पूरी टीम के पुरुषार्थ के लिए साधुवाद व ख़ूब सारी बधाइयाँ..।

आप ऐसे आयोजन करते रहें, हम दूने उत्साह से आएँगे..।

पद्मा राजेंद्र

0

आत्मीयता और साहित्य का उत्सव

शिवना साहित्य समागम की शुरुआत ही एक अत्यंत अनोखे और आत्मीय आमंत्रण से हुई। जैसे अपने लोगों को विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर पीले चावल देकर आमंत्रित किया जाता है, उसी भाव के साथ अतिथियों को निमंत्रण भेजा गया था। यह निमंत्रण अत्यंत सृजनात्मक और सुंदर था। उसे देखते ही मन प्रफुल्लित हो उठा। उस क्षण यह अनुभव हुआ कि किसी समारोह में किसी को आमंत्रित करना भी अपने आप में एक सुंदर कला है।

सभी को एक समान निमंत्रण पत्र भेजना इस बात का संकेत था कि आने वाला प्रत्येक अतिथि समान रूप से सम्मानित है। वहाँ कोई छोटा-बड़ा नहीं था- सभी अतिथि थे और सभी का स्नेहपूर्वक स्वागत किया जा रहा था। ऐसे स्नेहिल निमंत्रण को अस्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

जब हम वहाँ पहुँचे तो लगा मानो क्रिसेंट रिज़ार्ट हमारे स्वागत में सजा-धजा, बाहें फैलाए खड़ा हो। मुख्य द्वार पर सुंदर रँगोली बनी हुई थी और नन्हीं-नन्हीं प्यारी बेटियाँ अपनी मोहक मुस्कान के साथ हाथ जोड़कर हमारा स्वागत कर रही थीं। सीहोर के हरे-भरे वातावरण में स्थित यह उद्यान उस दिन सचमुच किसी उत्सव स्थल की तरह सुसज्जित दिखाई दे रहा था।

इस पूरे आयोजन में सबसे मनमोहक दृश्य था पंकज सर की सहजता और आत्मीयता। इतने बड़े आयोजन की व्यस्तता के बावजूद वे प्रत्येक आगंतुक का खड़े होकर हाथ जोड़कर स्वागत कर रहे थे। हर अतिथि को स्वयं समय देकर धन्यवाद कहना और उन्हें भीतर तक ले जाना- यह दृश्य अत्यंत भावपूर्ण और सुंदर था।

इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के साथ समागम का शुभारंभ हुआ। वातावरण में एक पवित्रता और गरिमा का भाव व्याप्त हो गया। तत्पश्चात विभिन्न सत्रों का संचालन प्रारंभ हुआ, जिनमें उपस्थित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। ये केवल औपचारिक वक्तव्य नहीं थे, बल्कि उनमें जीवनानुभव, साहित्यिक

दृष्टि और समाज की संवेदनाएँ समाहित थीं। विशेष रूप से वहाँ उपस्थित विद्यार्थियों और नवोदित साहित्यकारों को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला- जो इस आयोजन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य भी था।

फिर आया फाग उत्सव का उल्लासपूर्ण क्षण। मृदंग की थाप, होली के गीत और रंगों की उमंग के साथ वातावरण आनंद से भर उठा। इसी उल्लास के साथ कार्यक्रम का समापन अत्यंत सुंदर और यादगार ढंग से हुआ।

कार्यक्रम के दौरान चारों ओर अपनत्व की सुगंध फैली हुई थी। हँसते-मुस्कुराते चेहरे, रंग-बिरंगे परिधानों में दूर-दूर से पधारे साहित्यकार, सीहोर के प्रतिष्ठित गणमान्य जन-सभी मिलकर इस आयोजन की गरिमा बढ़ा रहे थे। फूलों की सुगंध और चारों ओर फैली हरियाली वातावरण को और भी मनोहारी बना रही थी।

इस आयोजन को सफल बनाने में हमारी अपनी वामा अध्यक्ष ज्योति जैन, शहरयार जी और पूरी सक्रिय टीम का समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। उनका अथक प्रयास इस कार्यक्रम को एक यादगार उत्सव में बदल रहा था।

भोपाल के समीप स्थित छोटा-सा सीहोर उस दिन मानो एक विशाल सांस्कृतिक उपवन में परिवर्तित हो गया था।

जब हम वहाँ से लौटे तो मन में एक मधुर अनुभूति थी। ऐसा लगा जैसे प्रत्येक अतिथि अपने साथ केवल उपहार ही नहीं, बल्कि स्नेह से भरी स्मृतियाँ भी लेकर लौट रहा है- ठीक वैसे ही जैसे बेटियाँ अपने मायके से लौटते समय भावनाओं से भरी होती हैं। सचमुच, ऐसा प्रेम और अपनापन शायद मायके में ही मिलता है।

बिना किसी औपचारिकता के सब एक-दूसरे से मुस्कुराकर, गले मिलकर विदा ले रहे थे। नाचते-गाते, प्रसन्न मन से हम वहाँ से लौटे। यह अनुभव सचमुच अविस्मरणीय रहेगा।

हम यही कामना करते हैं कि शिवना साहित्य हमें इसी तरह स्नेहपूर्वक बुलाता रहे

और हम बार-बार वहाँ जाकर अपनी खुशियाँ साझा कर सकें। वहाँ से मिली ये सुंदर स्मृतियाँ हम अगली भेंट तक सँजोकर रखें-ताकि पुन: मिलने पर वे ख़ुशियाँ और भी दोगुनी हो जाएँ।

पंकज सुबीर जी का दिल से बहुत-बहुत आभार।

तनुजा चौबे

o

होली में रंगा संवादों का उत्सव

चटकीले रंगों की राँगोली से सजे मुख्य द्वार और आँगन, बच्चों द्वारा तिलक लगा कर एक मृदु मुस्कान संग स्वागत करना... अहा अद्‌भुत! सीहोर की उस उजली-सुनहरी धूप में जब हम सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल में पहुँचे तो स्वागत-सत्कार और प्रेम की वर्षा में ऐसे भीगे कि मायके-की सी अनुभूति से मन भाव विभोर हो गया। चारों ओर प्रसृत स्नेह और भावभीनी आत्मीयता की सौंधी ख़ुशबू ने एक पारिवारिक वातावरण रच दिया। यह केवल साहित्यिक आयोजन नहीं था। यह वह प्रांगण था जहाँ पुलकित मन उन्मुक्त भाव से विचरण करता, आनंद से सराबोर था। आयोजक विनत स्नेहिल भाव से कलमकारों को सम्मानित कर हर्षित थे।

सत्रों में विचार बहते रहे कहीं गंभीर, कहीं भावुक, कहीं प्रखर पर उन सबके बीच प्रेम का एक सूक्ष्म तंतु सबको बाँधे रहा। मतभेदों की कठोरता यहाँ आकर पिघलती रही। बुद्धि और भाव ने जैसे एक-दूसरे का हाथ थाम लिया हो। वहीं श्रोताओं के मध्य हमारे नन्हें बच्चों को हाथ में कॉपी-पेन लिए वक्ताओं द्वारा कही गई महत्त्वपूर्ण बातों को लिखना, मोबाइल के इस युग में आने वाले सुखद भविष्य की और एक क़दम बढ़ाने को सुनिश्चित कर रहा था।

अनुशासनप्रिय समन्वयकों ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम में तीन सभागारों में समानांतर रूप से होने वाले सत्रों को पूरी सतर्कता से, घड़ी की सुइयों पर पैनी दृष्टि रखते हुए हर सत्र को प्रदत्त समय में पूर्ण कर इस उत्सव में चार चाँद लगा दिए। सब कुछ इतनी सहजता से हो रहा था मानो सबको

अपने भीतर की लय का बोध हो।

टेसू के फूलों और आदिवासी अंचल के नृत्य भगोरिया ने वातावरण में फगुआ की फुगनाहट, सुगंध और रंगों की मृदुता को घोल दिया। हम भी ढोल, थाली और मांदल की थाप पर उनके साथ थिरकते रहे। वहीं पारंपरिक भोजन दाल-बाटी, चूरमा, मक्का के ढोकले, कढ़ी आदि सुस्वादु व्यंजनों ने जिह्वा के साथ हम सब के मन को भी तृप्त कर दिया।

पंकज भाई, वामा अध्यक्ष ज्योति जी, भाई शहरयार और उनकी पूरी टीम जिसमें युवा किशोर-बच्चे सब एक अदृश्य लय-ताल में बँधे गतिमान थे। कहीं कोई अव्यवस्था नहीं, कोई तनाव नहीं, अतिथि सत्कार का उत्कृष्ट रूप! मुस्कुराता हुआ हर चेहरा स्वस्थ प्रबंधन का अनूठा पाठ पढ़ा गया।

दो दिनों तक सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल में साहित्य ने केवल विमर्श नहीं किया बल्कि प्रेम और आत्मीयता का व्यापक प्रसार भी किया। यह आयोजन यह विश्वास जगाता है कि यदि समर्पण सच्चा हो, तो क़स्बा भी सांस्कृतिक केंद्र बन सकता है, यदि भाव सच्चे हों, तो मंच भी घर-आँगन बन जाता है। वातावरण पवित्र हो, हृदय अमल हो तो हर महिला अपने मायके सा प्रेम और ममता पा जाती है और मौक्तिक हँसी की फुहारें झरने सी झरती हैं।

शिवना के इस आँगन से लौटते हुए मन भावुक हो उठा जैसे मायके से विदा होते समय हो जाता था। आँखों में संतोष, हृदय में स्नेह और भीतर एक दीर्घ आश्वस्ति कि शब्दों का यह घर बार-बार बुलाएगा। हम फिर मिलेंगे, फिर इस परिवार की उसी आत्मीय छाँह में जाकर बैठेंगे, जहाँ संवाद औपचारिक नहीं बल्कि स्नेह और आत्मीयता में पगे हुए होते हैं।

हाँ सीहोर फिर बुलाएगा और जब-जब बुलाएगा।

हम उसके निर्मल प्रेम की डोर में बँधे उसी उत्साह से ज़रूर आएँगे।

डॉ. यशोधरा भटनागर

o

एक सफल सार्थक कार्यक्रम

मैं नहीं जानती कि मुझे कैसे कहना चाहिए, लेकिन बेहद अनौपचारिक भाव से कहती हूँ कि दो दिवसीय शिवना साहित्य समागम से आए पूरे आठ दिन हो चुके हैं लेकिन मन अभी भी दिनांक 28/02 की सुबह 9:30 से लेकर दूसरे दिन दिनांक 1 /03 की शाम 6:00 बजे तक के उन यादगार पलों में ही अटका हुआ है। कुशल कार्य योजना, समय प्रबंधन, संयोजित कार्यशैली, क्रियान्वयन और बेहद उच्च स्तरीय सत्र चयन चर्चा इन सबसे मन अभिभूत है।

सभी सत्रों की गंभीर, विषयपरक व सार्थक चर्चा तो थी ही, सबसे बड़ी बात बेहद अपनापन लिए वक्ता जब अपनी बात कह रहे थे तब मुझे लग रहा था कि हर श्रोता सत्र के बाद वक्ताओं के उन विशेष गुणों को अपने हृदय में बैठा चुके होंगे।

झटपट नाश्ता कर जब प्रथम सत्र में बैठे तो लगा तीन महान् धाराओं की त्रिवेणी के संगम में स्वयं की शुद्धि हेतु आ चुके हैं। और एक नाविक की भाँति बेहद सधे हुए सत्र संचालक श्री विनय उपाध्याय जी के प्रश्नों ने जैसे ज्ञान के सागर में गहरे तक उतार दिया है।

सूत्रधार की बात कहें तो स्वयं पंकज सुबीर धूमकेतु की तरह एक निश्चित धुरी को थामे अपनी डोर के दो छोर हमारे वामा मंच की बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न हमारी ज्योति दीदी व शहरयार जी और पूरी टीम को सौंप प्रत्येक क्षण पर नज़र रखना ही कार्यक्रम की सफलता की सुनिश्चिता थी।

मेरे लिए यह आयोजन केवल प्रयोजन नहीं बल्कि साहित्य के साथ-साथ जीवन प्रबंधन और स्वयं से मिलने का भी था। मुझे लगा कि ये दो दिन मैंने केवल स्वयं के लिए जिए हैं। जब हम किसी लेखक/ कवि को पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं और उन्ही को जब प्रत्यक्ष सुनते है, उनसे बात करते हैं तब जो सुखद अनुभव अवर्णनीय है। हाँ हर सत्र में असमंजस रहा कि इस सत्र में बैठे या वहाँ भागे ! तब लगा कि हे !ईश्वर संजय की भाँति दो दिन के लिए ज्ञान चक्षु उधार दे पाते तो कितना अच्छा होता है। फिर भी कोशिश रही कि जहाँ से जो भी मिल पाया अपने अल्प मानस की क्षमता अनुसार बटोर पाऊँ।

वामा मंच की अध्यक्ष ज्योति दीदी की सक्रियता, तत्परता, समय प्रबंधन, कुशल नेतृत्व की में सदैव से कायल रही हूँ। सभी सदस्यों की सहभागिता, सभी का समान रूप से ध्यान रखना, दीदी की ज्योतिर्मय आकर्षक रश्मियों बँधी हम सभी वामा सखियाँ उनसे गोरवान्वित हुई है। वामा मंच की सचिव बहन स्मृति आदित्य जी को शिवना कृति सम्मान मिलना हम सभी के लिए गौरवान्वित करने वाला क्षण था। पुरस्कार समारोह में जब सूत्रधार के रूप मे मैं पंकज सुबीर को सुन रही थी, तो मेरी आत्मीय संवेदनाओं के सारे रोम भावुकता में बहने लगे थे।

इतनी सहृदयता कि कोई प्रकाशक कहे कि-आपने सम्मान स्वीकार कर हमें कृतार्थ किया। इतनी विनम्रता। और प्रमाणस्वरूप जब शहरयार भावुक होकर बोले तो सभागार की हर आँख के कोर भीगे थे। वास्तव में संपूर्ण समागम के रीढ़ थी- आपके हृदय की सदाशयता -सभी के लिए समान भाव, अतिथि, लेखक, कार्यकर्ता यहाँ तक कि साथ आए वाहन चालकों के लिए भी वही व्यवस्था। एक ऐसा ही सत्र वामा मंच के फाग गायन का था जिसमें वामा मंच की ओर सम्मान स्वरूप भेंट व गुलाल लगाया गया, तब भावुकता के वो क्षण जिसमें पिता की पहली होली पर बहन के गुलाल ने भाव-विभोर किया था। वे अविस्मरणीय पल सदैव स्मृति में रहेंगे।

छात्र बालिकाओं ने भी मन मोह लिया। पूछते ही गंतव्य से लेकर हर व्यवस्था के लिए तत्पर। कहते हैं - आज के दौर में क्या ये मुमकिन है?तब शायद कहना चाहिए कि ... कौन कहता है आसमाँ में सूराख नहीं होता। एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।।

इस वर्ष भगोरिया पर्व देखने जाने की प्रबल इच्छा थी मन दो तरफ़ जा रहा था कि समागम में जाऊँ या भगोरिया। सचमुच मेरा निर्णय सही रहा भगोरिया होली नृत्य, फाग उत्सव मुझे सीहोर में ही मिल गया। फाग उत्सव में जब टेसू, पलास के फूल देखे तब

लगा कि मिट्टी और परंपरा से जुड़े एक लेखक/कवि की दृष्टि ही पर्व की परंपरा को बाँधे रखती है। बुद्धि, मन, हृदय के साथ - साथ उदर को भी पोषित करने का सुअवसर मेरे भाग्य में था।

कहते हैं -"जिसका जैसा मन वैसा पाए अन्न" की उक्ति को चरितार्थ करता दो दिन के सुस्वादु भोजन में आपकी उदारता की मिठास, प्यारी बेटियों का प्यार भरा चटपटापन जिसमें आपकी अनुभूतियों के सारे मसालों की ख़ुशबू से आत्मा सहित जिह्वा के सारे षठरसों से तृप्त किया है। (वैसे भी हम इन्दौरी स्वाद को लेकर कुछ ज़्यादा ही चटोरापन के लिए प्रसिद्ध है।)

और अंत में हृदय से आभार संपूर्ण शिवना प्रकाशन की टीम का जिन्होंने एक सफल सार्थक कार्यक्रम की अमित छाप सभी के हृदय में छोड़ दी है।

अगले समागम की आतुरता से प्रतिक्षा।

अर्चना मंडलोई

0

गंगा-जमनी तहज़ीब

'शिवना प्रकाशन, सीहोर' यह नाम साहित्य जगत् के लिए सुपरिचित है। कभी पंकज सुबीर जी को मुख्य अतिथि के तौर पर सुनना, कभी किसी परिचित की पुस्तक का प्रकाशन शिवना... से होना आदि। जब ज्योति जैन जी ने शिवना साहित्य समागम (सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल) में सहभागी होने का प्रस्ताव रखा और सारी जानकारियाँ प्रदान कर वामा साहित्य मंच की सखियों के इंदौर-सीहोर प्रवास, सीहोर में आवास और सारी सुविधाएँ सुनिश्चित की तो हम सभी एक समृद्ध करने वाले अनुभव के धनी हुए।

28 फरवरी की प्रात: इस भव्य समारोह का आरंभ वाग्देवी की वंदना से हुआ। सुसज्जित परिसर में माँ शारदा की नयनाभिराम मूर्ति का पूजन, स्वस्तिवाचन... वातावरण मंगल मंगल हो गया। सुस्वादु जलपान के बाद सत्रों की शुरुआत हुई तो ऐसा लगा कि काश bilocation की कला अवगत होती तो दो सभागारों में समानांतर चल रहे दोनों सत्रों का लाभ उठा लेते क्योंकि सभी सत्रों के विषय, वक्ता और संयोजन श्रेष्ठ थे। महान् विभूतियों के नाम पर सभागारों का नामकरण अच्छा लगा। ख्यातिलब्ध लेखकों को रू-ब-रू सुनने से, मिलने से जहाँ मानसिक, बौद्धिक स्तर पर श्री वृद्धि का एहसास हुआ, वहीं रुचिकर भोजन ने तृप्त किया।

शिवना सम्मान अलंकरण के भव्य कार्यक्रम में अपनी स्मृति आदित्य का अलंकृत होना अतिरिक्त प्रसन्नता का कारक बना। रात्रि में खुले आकाश के नीचे भगोरिया नृत्य ने समाँ बाँधा। अगले दिन उत्तमोत्तम सत्रों के बीच वामा साहित्य मंच के सत्र ने जहाँ वातावरण को उत्सवी बनाया वहीं कुछ भावुक क्षणों ने अंतस को भिगोया। समापन में फ़ाग उत्सव में लोक गायकों के सुर, ढोलक पर पड़ती थाप और थिरकते क़दमों ने उत्साह, आनंद को चरम पर पहुँचाया।

एक बात ज़ेहन में आती है कि जहाँ लोग गंगा-जमनी तहज़ीब की सिर्फ बातें करते हैं, पंकज जी और उनके परिवार ने उसे प्रत्यक्ष कर दिखाया है। यह औदार्य, निर्मल प्रेम उनके हृदय की पवित्रता के कारण ही संभव हुआ होगा। कोई भी पंकज जी की भावुकता, विनम्रता, सरलता देख प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। पूरे दो दिन छात्र-छात्राओं को व्यवस्था की कमान सौंपी जाना और उनके द्वारा उस दायित्व को पूरी शिद्दत से निभाना प्रशंसनीय है। वे छात्र भी बहुत कुछ सीख कर गए होंगे।

शिवना ... से श्रेष्ठतम कृतियाँ प्रकाशित होती रहें और ऐसे ही समारोहों के माध्यम से ज्ञान, कवित्व और साहित्य की रसधारा प्रवाहित होती रहे, यही शुभकामना।

वैजयंती दाते

0

अनुभव अत्यंत सुखद रहा

शिवना प्रकाशन, सीहोर द्वारा आयोजित अविस्मरणीय कार्यक्रम (दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च) में शामिल होने का अवसर मेरे जीवन के श्रेष्ठ पलों में से एक रहा। साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद मैं अनेक आयोजनों में सम्मिलित हुई हूँ, लेकिन

इस अनूठे सम्मेलन का प्रभावी स्थान, सुरम्य वातावरण, सुनियोजित व्यवस्था, आकर्षक साज-सज्जा, बालिकाओं का उमंग और उत्साह, स्वादिष्ट भोजन व्यवस्था तथा सुविधाजनक आवासीय प्रबंध-इन सभी में अत्यंत आत्मीयता का भाव परिलक्षित हो रहा था। कुल मिलाकर, सभी योजनाबद्ध कार्यक्रमों की प्रस्तुति नि:शब्द रूप से प्रभावशाली थी। "वामा सखियों" की परियों-सी चहल-पहल और उनकी सक्रिय, कर्मशील भूमिका भी अत्यंत प्रशंसनीय रही।

महान् विभूतियों के नाम से सुसज्जित सभागारों में समानांतर चल रहे परिचर्चा कार्यक्रमों के कारण मेरे मन में यह द्वंद्व बना रहा कि कहाँ जाऊँ और कहाँ बैठूँ। अंतत: मैंने सभी चर्चाओं को थोड़ा-थोड़ा सुनकर आत्मसात् करने का प्रयास किया। बाल कलाकारों की चित्रकला ने भी मुझे अत्यंत प्रभावित किया। जब मैंने पंकज सुबीर को देखा, तो लगा कि उनकी ज़िंदादिली और प्रसन्न मुखमुद्रा भविष्य में और भी नवीन कार्यों का संकेत दे रही है। यद्यपि साहित्यकारों से प्रत्यक्ष मुलाकात का अवसर नहीं मिल सका, फिर भी यह अनुभव अत्यंत सुखद रहा। ऐसे विचारोत्तेजक आयोजनों में सम्मिलित होने का अवसर निरंतर मिलता रहे-यही ईश्वर से प्रार्थना है।

अंत में, शिवना प्रकाशन, सीहोर को हृदय से अनंत शुभकामनाएँ देती हूँ। पुरस्कार स्वरूप प्राप्त साहित्य-भंडार का आनंद सभी पाठकों को मिलता रहे, यही कामना है।

अमिता मराठे

0

सुंदर और आत्मीयता से परिपूर्ण

शिवना साहित्य समागम एक सुंदर साहित्यक कार्यक्रम के साथ-साथ बहुत आत्मीय पारिवारिक माहौल में आयोजित यादगार कार्यक्रम रहा। व्यवस्थाओं से लेकर व्यवहार तक सब कुछ बहुत सुंदर और आत्मीयता से परिपूर्ण था। ऐसा लगा जैसे हम सब मायके आए हुए थे और वहाँ से लौट के जा रहे हैं, पंकज भैया! धन्यवाद यहाँ बहुत

छोटा शब्द है, सब बहनों की ओर से आपको बहुत सारा हार्दिक स्नेह, ढेर सारी शुभकामनाएँ!

इंदु पाराशर

0

गरिमामय साहित्यिक कार्यक्रम

"शिवना साहित्य समागम" में इस वर्ष शिरकत करने का मौका मिला, यहाँ की व्यवस्था, सजावट, अतिथियों का स्वागत, हर छोटी-बड़ी बात... सबमें आपकी ऊर्जामयी उपस्थिति, आतिथ्य और समर्पण झलक रहा था। सभागार में कितने ही भावुक पल आए जिन्होंने आज के युग में पिता-पुत्री, सहभागी बंधु, पति-पत्नी के सम्बन्धों में विश्वास और स्नेह की भावना को किसी अहं में ना बाँधकर मुखर होने दिया। इस गरिमामय साहित्यिक कार्यक्रम के लिए समस्त आयोजन समिति को ढेर सारी बधाई।

यह आयोजन ना केवल प्रबुद्ध वर्ग के लिए बल्कि आम जन के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण रहा क्योंकि यहाँ सिर्फ़ साहित्य और रचनाधर्मिता की बात नहीं हुई बल्कि सामाजिक चिंतन, सरोकार और साहित्य के माध्यम से बदलाव और दिशा परिवर्तन पर भी बात रखी गई। चाहे वह किसी के अनुभव पर आधारित रही या ज्ञान पर केंद्रित। अतिथि विद्वानों का चुनाव, विषय की विविधता, कार्यकम में पारंपरिक भगोरिया उत्सव और फूलों की बरखा सभी में एक अनूठापन था।

सहभागी महाविद्यालय के छात्र छात्राओं की उपस्थिति उनके सीखने देखने का जोश जज़्बा लिए हुए थी। इनमें से कई बच्चियों ने प्रेम पूर्वक मुझे न केवल अपनी कविताएँ सुनाईं बल्कि यादगार पिक्चर्स भी लिए। आयोजन की समस्त टीम जैसे मनुहार करती हुई चाय, पानी, भोजन की व्यस्था में शामिल थी।

यह ऐसा उत्सव था जहाँ एक प्लेटफार्म में हमने विभिन्न क्षेत्रों से आए अपने अग्रज, नामचीन साहित्यकारों, लेखकों और विचारकों से अलग-अलग विषयों, धाराओं, विचारों को ना केवल सुना बल्कि मुद्दों और

मूल्यों में जी रहे जीवन को भी देखा। बहुत ही कम समय में शिवना प्रकाशन ने, टीम ने मेरी रचनाओं को किताबों का आकार दिया वह भी प्रशंसनीय है। यह साहित्य समागम हर वर्ष आयोजित होता रहे और इसके ज्ञान मंथन से सभी लाभान्वित होते रहें यही कामना है।

अमर खनूजा चड्ढा

0

एक अमित, अविस्मरणीय उत्सव

कुछ पल, कुछ क्षण और कुछ अनुभव ऐसे होते हैं, जो समय की सीमाओं को लाँघकर हमारे मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। शिवना साहित्य समागम मेरे लिए ऐसा ही एक अनुपम उत्सव बनकर हृदय में स्थायी रूप से बस गया है। "कुछ यादें दीपक सी जलती हैं, मन के आँगन में पलती हैं। जो बीत गईं फिर भी जैसे, हर पल आँखों में ढलती हैं।" आयोजन की परिकल्पना से लेकर उसके सफल समापन तक हर एक चरण का सुव्यवस्थित और सहज संचालन ईश्वर की कृपा, आयोजक मंडल की दूरदृष्टि और संपूर्ण टीम के अथक परिश्रम का जीवंत उदाहरण है। यही कारण रहा कि यह भव्य आयोजन पूर्णत: निर्विघ्न और गरिमामय ढंग से संपन्न हुआ।

शिवना प्रकाशन के संस्थापक आदरणीय पंकज भाई साहब ने दुष्यंत कुमार की अमर पंक्तियों को साकार कर दिखाया- "कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं होता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।"

और यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि उनके साथ ज्योति दीदी जैसी समर्पित, कर्मठ और सशक्त सहयोगी का संबल था। दोनों की ऊर्जा, समय-प्रबंधन और कार्यनिष्ठा ने इस आयोजन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

"जहाँ संकल्प अडिग हो मन में, और श्रम का हो संग्राम। वहीं सफलता चरण चूमती, हो जाता हर स्वप्न साकार।"

विषय-विविधता से परिपूर्ण इस अनूठे साहित्यिक समागम ने न केवल हमारे ज्ञान-चक्षुओं को एक नई दृष्टि दी, बल्कि संवेदनाओं, विचारों और सृजनशीलता के नए

आयाम भी खोले। यह आयोजन सचमुच साहित्य, संस्कृति और संवाद का एक जीवंत उत्सव बन गया।

"शब्द जब संवेदना से मिलते हैं, तो रचते हैं एक नया संसार। जहाँ विचारों की धारा बहती है, और मन हो जाता है उद्गार।"

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आयोजक मंडल इस प्रकार के प्रेरणादायी आयोजनों की निरंतरता बनाए रखे, ताकि हम सभी भविष्य में भी ऐसे ज्ञानवर्धक और आत्मीय अनुभवों से समृद्ध होते रहें। आत्मीय कृतज्ञता के साथ, दिल से ढेरों बधाइयाँ और हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. रेखा मंडलोई 'गंगा'

0

"हर्ष" और "गर्व" से परिपूर्ण

"शिवना साहित्य समागम" में सम्मिलित होना मेरे लिए "हर्ष" और "गर्व" से परिपूर्ण था। "वामा" सखियों के साथ सीहोर आना, और उन्हीं सखियों के साथ विभिन्न मंचों पर विभिन्न साहित्यकारों के वक़्तव्यों को सुनना आनंद और गर्व की अनुभूति दे रहा था। साथ ही समय समय पर स्वादिष्ट भोजन का अपना एक अलग ही आनंद प्राप्त हुआ। हम सभी "वामा" सखियों को अपने जो "प्रेम" और "सम्मान" दिया, वह अतुलनीय है।

प्रत्येक "सभागार" में प्रत्येक "सत्र" को समय पर "सुचार" एवं "सुव्यवस्थित" रूप से पूर्ण करने के लिए आपका अथक प्रयास "प्रशंसनीय" है। संगीतमय कार्यक्रमों ने इस समागम की सुंदरता में चार चाँद लगा दिए। हम सभी "वामा" सखियों के "फाग" पर आधारित "काव्य" सम्मेलन सत्र में अपनी कविता सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपके द्वारा दिए उपहार भी अनमोल हैं। समागम के पूर्ण होने पर अपने घर लौटते समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे कि हम सखियाँ अपने पीहर आईं थी। आपने एक भाई की तरह सभी सखियों का मान रखा है। आपके इस स्नेहपूर्ण व्यवहार के लिए, और आपके द्वारा मिले सम्मान एवं उपहारों के लिए "हृदय से आभार"। ईश्वर आपकी

प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करें। बहुत-बहुत अभिनंदन। आभार। धन्यवाद।

प्रीति मकवाना

o

शिवना समागम: भावों की सरिता

कुछ दिन पहले सजा था
शब्दों का अनुपम उत्सव,
भावों की वीणा पर गूँजा था
सृजन का मधुर स्वर।
शिवना साहित्य समागम की सुरभि
बिखरी थी ऐसे,
मानो माँ सरस्वती का आशीष
उतर आया हो जैसे।

पंकज भाई ने सजाया
सृजन-यात्रा का अनुपम कारवाँ,
शहरयार भाई का समर्पण बना
इसका दृढ़ आधार वहाँ।
कथा, कहानी, कविताओं में
जीवन के आयाम उकेरे
वक्ताओं के चिंतन मनन ही
आलोकित हो गए जहाँ।

हर पल पर हमें स्नेहिल आतिथ्य
का विस्तार मिला,
हर आगंतुक को अपनापन
अपरंपार मिला।
थी व्यवस्था में सहजता और
सुकून बहुत सा
मानो हर एक मन को एक
मधुर जहान मिला।

अंत में जब फूलों ने भी
अपना रंग दिखाया,
फाग के उल्लास ने हमें
एक सूत्र में पाया।
हँसी, ख़ुशी, उमंग और अपनत्व के
उन रंगों ने,
साहित्य आयोजन को
अविस्मरणीय बनाया।

ऐसे सारस्वत प्रयास ही

समाज को दिशा देते हैं,
नई प्रतिभाओं को आगे बढ़ने
का साहस देते हैं।
यह केवल एक स्मृति नहीं,
है एक ज्योति भी,
जो आने वाले समय को भी
आलोकित करती है।

हम हृदय से नमन करते हैं
उन सभी हृदयों को,
जिन्होंने इस आयोजन को
इतना सुंदर बनाया।
उनकी निष्ठा, लगन और
उनके प्रयासों ने ही,
इस साहित्यिक महोत्सव को
अनुपम बनाया।

रश्मि चौधरी

o

मेरे पास शब्द नहीं

स्नेह रंग में हुआ तन मन सराबोर
जैस हो अँगना भाई का भाव विभोर
प्यार तुम्हारा हमारी सर आँखों पर
है दुआ हम बहनों की रहे सदा सदा
आशीष ईश्वर का आप सभी पर
पावन समृद्धि और ज्ञान का भंडार ऐसे ही फूले फले!

शिवना समारोह के लिए मेरे पास शब्द नहीं इतने सुंदर व भव्य कार्यक्रम को शब्दों में पिरोना आसान नहीं, इन्हीं पंक्तियों से मैं अपने मन के भाव आदरणीय पंकज सुबीर जी एवं शाहरयर जी के लिए व्यक्त कर रही हूँ अध्यक्ष ज्योति जैन जी का भी बहुत आभार!

शिवना प्रकाशन दिनों-दिन आगे बढ़ता रहे यही शुभकामनाएँ। धन्यवाद

अंजना सक्सेना

o

हमारी सुनहरी याद

शिवना समारोह के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। इतना भव्य प्रोग्राम मैंने जीवन में पहली बार देखा। जो समय पर शुरू होता था और समय पर ही समाप्त होता था। हम भी दौड़

दौड़ कर सभी सभागारों में जाने का प्रयास करते थे और प्रोग्राम अटेंड करते थे। बालिकाओं ने भी हमारी हर तरह से बहुत मदद की। प्रसिद्ध लेखक, लेखिकाओं को सुनने व मिलने का मौका मिला। ज्योति दीदी की भी निगाहें हम पर बराबर बनी रहती थीं। कि हम कहाँ पर क्या अटेंड कर सकते हैं ? वह हमें बताती थीं और हमने खाना खाया कि नहीं वह पूछती थीं। बीच-बीच में हम ग्रुप फोटो निकालते रहते थे। अब वो हमारी सुनहरी याद बने हुए हैं। इस समुद्र के लिए जितना भी लिखें कम है। धन्यवाद।

वृंदा उइके

0

सुखानुभूति पूर्ण

"शिवना साहित्य समारोह" में सम्मिलित होना सुखानुभूति पूर्ण रहा। उच्चकोटि के सत्साहित्य एवं साहित्यकारों के सत्संग का लाभ मिला। विभिन्न विषयों पर विचार सुनकर ऐसा लगा मानो षट् रस, सुस्वादु, छप्पन भोग मिल गए। आपके द्वारा यह वृहद् आयोजन सुव्यवस्थापन, सुनियोजन और अपनेपन की अनुभूति दे गया। आदरणीय ज्योति जैन जी की कार्य के प्रति कटिबद्धता और व्यस्तता में भी प्रत्येक व्यक्ति के प्रति स्नेहयुक्त आग्रह पारिवारिक आनंद से परिपूर्ण कर गया। ऐसे आयोजनों की निरंतर आवश्यकता है।

शैला अजबे

0

जीवन का पहला मौका

शिवना प्रकाशन सीहोर द्वारा आयोजित अविस्मरणीय कार्यक्रम फरवरी 28 और 1 मार्च में शामिल होने का अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ। पंकज भैया के सानिंध्य में संपन्न यह कार्यक्रम किसी भव्य शादी से काम नहीं था मुझे तो सारे कार्यक्रम में (शादी मालवा की) सा अनुभव हुआ ऐसा लग रहा था एक तरफ़ लड़की वाले और दूसरी तरफ़ लड़के वाले ठहरे हैं और शादी की सारी रसमें निभाई जा रही है और मामेरे का कार्यक्रम पंकज भैया

कर रहे थे एक-एक रस्म हमारे मालवा संस्कृति की छाप दिखाई दे रही थी। सभी साहित्य प्रेमियों का ज्ञान समेटना अद्भुत था। स्थान तो ऐसा था जैसे हम किसी रंग महल में रानियों सा आनंद ले रहे थे। हमारे साथ छोटी-छोटी बालिकाओं का संग उनके सानिंध्य प्यार से भरा आतिथ्य बहुत ही लुभावना था। पंकज भैया, शहरयार भैया और ज्योति जी का योजनाबद्ध तरीक़े से कार्यक्रम में संचालन निशब्द करने वाला था। सीहोर की कर्मभूमि की प्रशंसा जितनी की जाए कम है, मैं तो कई बार वहाँ के सुसज्जित सभागारों में भूल भुलैया सी घूमती रहती, किसी को पूछती थी भैया सभागार किधर है, वह बड़े प्यार से हमें वहाँ तक छोड़कर आते।

सभी जगह चल रही चर्चाएँ आत्मसात् कर मन आनंद से भर गया। ऐसा कार्यक्रम देखने का मेरे जीवन का पहला मौका था, मन भर कर भगोरिया नृत्य में डूबते सभी कलाकारों को देख पैर रुकते नहीं थे, 70 वर्ष की उम्र में मुझ में वह साहस भरा गया जैसे जवानी आ गई। मैं इतना किसी कार्यक्रम में मदमस्त नहीं हुई जितना सीहोर जाकर प्रसन्नता का अनुभव हुआ। आपका प्यार और स्नेह सदा हमारे दिल में बसा रहेगा, आप हमें अगले वर्ष इस कार्यक्रम में जल्द ही बुलाएँ, शुभकामनाओं और आशीर्वाद के साथ।

आशा मुंशी

0

साहित्य समागम का हासिल

अपनी पसंदीदा लेखिकाओं का साथ अनुलता राज नायर व मनीषा कुलश्रेष्ठ को सुनना व साहित्य को समृद्ध करती चर्चा परिचर्चा, भगोरिया नृत्य की अद्भुत धमक और फाग गीत की मस्ती के साथ जब मायके-सा स्नेह व आतिथ्य भी शामिल हो जाए तो सोने पर सुहागा वाली बात हो जाती है। आभार पंकज सुबीर जी का शिवना प्रकाशन का। इस आयोजन में शामिल वामा सखियों का ढेर सारी स्मृतियों व मीठी यादों के लिए शुक्रिया।

अवंति श्रीवास्तव

0

प्रतिक्रियाएँ

'लिटरेचर क्लब देवास' के सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ

मनीष वैद्य, मनीष शर्मा, अमेय कान्त, रश्मि शर्मा, संजय जोशी, कृपाली राणा, मीनाक्षी दुबे, सुमन कुमावत, शिल्पी जैन, नीलम दुबे, शांतनु बेहरे, संदीप भटनागर, शर्मिला ठाकुर, बिंदु तिवारी।

नि:शब्द हूँ...

कभी -कभी शब्द हमारे हाथ से कुछ इस तरह फिसल जाते हैं कि हम अपने आपको गूँगे की तरह पाते हैं। भीतर बहुत कुछ घुमड़ता है, बाहर आने को शब्द छटपटाते रहते हैं लेकिन कहूँ कैसे। कहाँ से कहना शुरू करें कितना कहें और किसे छोड़ दें...

आत्मीय स्नेह हमें ऐसे ही गूँगा बना दिया करता है, गुड़ का स्वाद कहें तो कैसे और इन दो दिनों में हमारी भी यही स्थिति है। इस पूरे सुव्यवस्थित आयोजन और उसमें मिले मान, स्नेह और आज के ऐसे उल्टे समय में ऐसी बिरली आत्मीयता ने हमें बहुत भावुक कर दिया है। शब्द नहीं है मेरे पास, सिर्फ़ दिल भर गया है भीतर तक आपके स्नेह से.....

पंकज जी, आपका यह स्नेहभाव अपनी पोटली में बाँधकर ले आए हैं। ऐसा बड़प्पन, हम सबके लिए आत्मीय भाव, हर एक का ध्यान, पूरे आयोजन में चेहरे पर स्मित मुस्कान ही आपको पंकज सुबीर बनाती है।

शहरयार भाई और आकाश भाई को कितनी बार कितनी बातों के लिए हम सबने परेशान किया, लेकिन सहज भाव से पंकज जी के भावों को आत्मसात् करते वे सदैव हर जगह विनम्र और अकूत ऊर्जा से भरे खड़े मिले।

शिवना परिवार का एक-एक टीम मेम्बर और अतिथि देवो भव: की परंपरा को निभाते सत्कार व्यवस्थाओं में प्रण-प्राण से जुटी टीम के लिए क्या कहें...बस दिल जीत लिया!!

यह स्नेहभाव हमेशा बना रहे....

मनीष वैद्य

0

एक महत्त्वपूर्ण उत्सव

हाल ही में आयोजित दो दिवसीय "सीहोर लिटरेचर फेस्ट" के सफल और गरिमामय आयोजन के लिए "लिटरेचर क्लब देवास" की ओर से आपको हार्दिक बधाई और आत्मीय आभार प्रेषित है।

यह आयोजन केवल एक साहित्यिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि मालवा की साहित्यिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत को सम्मान देने वाला एक महत्त्वपूर्ण उत्सव सिद्ध हुआ। विशेष आनंद का विषय यह रहा कि देवास सहित पूरे मालवा अंचल के रचनाकारों को जिस आत्मीयता और सम्मान के साथ मंच प्रदान किया गया, उसने स्थानीय साहित्यिक प्रतिभाओं को नई ऊर्जा दी। यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है कि इस आयोजन में साहित्य के विविध आयामों के साथ-साथ लोक संस्कृति के संरक्षण, उसकी गरिमा और उसके सम्मान की संवेदनशील परवाह भी स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

कार्यक्रम की रूपरेखा में जिन महत्त्वपूर्ण विषयों और सार्थक प्रश्नों को समाहित किया गया, उन्होंने इस आयोजन को वैश्विक स्तर की गंभीर परिचर्चा का स्वरूप प्रदान किया। विचार, संवाद और सहभागिता का यह वातावरण निश्चित ही विचार और साहित्यिक परंपरा को समृद्ध करने वाला रहा।

'लिटरेचर क्लब देवास' के साथियों को जिस आत्मीयता से इस आयोजन में आमंत्रित किया गया और एक पूरा सत्र क्लब के नाम समर्पित किया गया, वह आपसी विश्वास, सहकार और साहित्यिक आत्मीयता का सुंदर उदाहरण है। इसके लिए हृदय से साधुवाद।

भविष्य में भी हम सब मिलकर इस साहित्यिक परंपरा को और अधिक समृद्ध करते रहेंगे।

आपको और संपूर्ण शिवना परिवार को इस सफल आयोजन के लिए पुन: हार्दिक बधाई और अभिनंदन।

मनीष शर्मा

0

सुव्यवस्थित और समयबद्ध

सीहोर में शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित लिटरेचर फ़ेस्टिवल 'शिवना साहित्य समागम' में दो दिन कब गुज़र गए, इस बात का पता ही नहीं चला।

अलग-अलग सत्रों में कई विधाओं पर बहुत समृद्ध करने वाली बातचीत सुनने को मिली। अपने कई प्रिय रचनाकारों से मिलने और उन्हें सुनने का मौका मिला। उपन्यास, कहानी, लघुकथा, कविता, सिनेमा, कला, पत्रकारिता जैसी कई विधाओं में सार्थक चर्चाएँ हुईं। सिनेमा और साहित्य से जुड़े एक सत्र में अभिनेता यशपाल शर्मा को पहली बार रू-ब-रू देखने और सुनने का भी मौका हमें मिला।

'नमस्ते, मैं देवास' सत्र में देवास के साथियों ने वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई की अध्यक्षता में कविता पाठ किया। कविताओं पर अपनी सारगर्भित टिप्पणी में उन्होंने लेखन को लेकर कई महत्त्वपूर्ण बातें कहीं। उन्होंने संगीत, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में देवास के अवदान को भी याद किया।

एआई का दख़ल आज तक़रीबन हर क्षेत्र में हो रहा है, चाहे बात लेखन की हो, सिनेमा की हो, कला की हो या फिर संगीत की, इसके ख़तरों और चुनौतियों को लेकर लगभग हर सत्र में चर्चा हुई।

इसी आयोजन में कथाकार मनीष वैद्य को वर्ष 2024 का 'अंतर्राष्ट्रीय शिवना सम्मान' कहानी संग्रह वांगछी के लिए प्रदान किया गया जो हम सभी साथियों के लिए बेहद ख़ुशी का मौका था।

दोनों दिन भगोरिया और फाग के रंगों ने आयोजन को उमंग से भर दिया। पंकज सुबीर जी, शहरयार भाई एवं उनकी पूरी टीम ने इस पूरे कार्यक्रम को बहुत ही सुव्यवस्थित और समयबद्ध तरीक़े से आयोजित किया। उन्हें इसके लिए बहुत शुभकामनाएँ, साथ ही एक अच्छे और आत्मीय आयोजन का हिस्सा बनने का अवसर देने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद!

अमेय कान्त

o

गरिमामय आयोजन

शिवना साहित्य समागम', "सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल" में सिर्फ लिटरेचर नहीं था, बल्कि लोक संस्कृति, संगीत, नृत्य जैसी ललित कलाएँ भी अन्तर्गुम्फित थीं।

साहित्य, भाषा के लालित्य के बौद्धिक पोषण के साथ भगोरिया नृत्य की थाप पर मुस्कुराती, मगन थिरकन थी और फाग गीतों के साथ कार्यक्रम की सफल पूर्णता से उपजा आनंद-नृत्य था। इन दो दिनों में साहित्यकार साथियों से मिलना और श्री ज्ञान चतुर्वेदी जी, श्री संतोष चौबे जी, श्री यतीन्द्र मिश्र जी, श्री लीलाधर मंडलोई जी, श्री यशपाल शर्मा जी, श्री पुष्पेंद्र वैद्य, यशोधरा भटनागर जी और श्री विनय उपाध्याय जी को सुनना प्रसादपूर्ण रहा।

पूरा कार्यक्रम औपचारिक भाषणों के बोझत्व से मुक्त, भव्य और गरिमामयी था। जागरूक युवा कार्यकर्ताओं और शिवना टीम की मेज़बानी मोहने वाली थी। विभिन्न समानांतर चले सत्रों ने बहुत समृद्ध किया, जिसमें उपन्यास, कविता, कहानी, कथेतर साहित्य, ग़ज़ल, सिनेमा, धर्म और साहित्य, लघु कथा, पत्रकारिता की विश्वसनीयता, स्वास्थ्य, मालवा और निमाड़ अंचल की उपेक्षा जैसे कई मुद्दों पर बहुत अच्छी चर्चा हुई।

आदरणीय श्री लीलाधर मंडलोई की अध्यक्षता में देवास के रचनाकारों का सधा और प्रभावी रचना-पाठ हुआ, जिसमें आपने रचाव से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण सूत्र भी साझा किए। श्री मनीष वैद्य जी की कृति 'वांग छी' को मिले 'अंतरराष्ट्रीय शिवना सम्मान' का उपस्थित देवास ने स्टैंडिंग ओवेशन देकर हर्ष और सम्मान प्रकट किया।

यह द्विदिवसीय महोत्सव विशाल होते हुए भी समयबद्धता, कसावट, नामचीन विभूतियों के समृद्ध वक्तव्यों, सीहोर की स्नेहिल मेजबानी के लिए जाना जाएगा। श्री पंकज सुबीर जी, शिवना टीम और वामा टीम इसके लिए बहुत बधाई के पात्र हैं। साधुवाद सभी को।

रश्मि शर्मा

o

देवास के लिए गौरव का क्षण!

जब 'वांगछी' की गूँज ने थाम लीं धड़कनें...

साहित्यिक उपलब्धियों के आकाश पर आज देवास का नाम सुनहरे अक्षरों में अंकित हो गया। मौका था शिवना पुरस्कार समारोह का, जहाँ कहानीकार मनीष वैद्य जी को उनकी कालजयी कृति "वांगछी" के लिए सम्मानित किया गया।

समारोह का रोमांच तब अपने चरम पर पहुँच गया जब मनीष जी का नाम पुकारा गया- सम्मान में सभागृह में उपस्थित आधे से ज़्यादा साहित्यकार अपनी कुर्सियों से स्वत: ही खड़े हो गए और तब तक तालियाँ बजती रहीं जब तक पुरस्कार उनके हाथों में नहीं आ गया। यह क्षण भावुक करने वाला भी था और गौरवान्वित करने वाला भी। दो दिनों तक चले इस 'लिटरेचर फेस्टिवल' में देश के दिग्गजों के बीच देवास के 20 से अधिक साहित्यकारों की मौजूदगी ने यह सिद्ध कर दिया कि देवास की मिट्टी में आज भी शब्दों की महक जीवंत है।

संजय जोशी

0

समर्पण, सहजता के दो दिन

आध्यात्मिक, बौद्धिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक माहौल से सराबोर सीहोर में समर्पण, सहजता के दो दिन। दो दिनों में जगतगुरु पंडित अजय पुरोहित जी, श्री ज्ञान चतुर्वेदी जी, श्री संतोष चौबे जी, श्री यतीन्द्र मिश्र जी, श्री विकास दवे जी, श्री लीलाधर मंडलोई जी, उर्मिला शिरीष जी, श्री मुकेश वर्मा जी, श्री विनय उपाध्याय जी और सभी साहित्यिक मनीषियों को सुनना अर्थपूर्ण रहा। नई ऊर्जा नए विचारों को अवसर देने वाला यह आयोजन यूँही पनपता रहे।

अंतरराष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान मनीष भाईसाहब की किताब "वांग छी" को मिला। यह हम सभी के लिए भावुक और अत्यंत गौरव का विषय है। वरिष्ठ साहित्यकार श्री लीलाधर मंडलोई जी की अध्यक्षता में देवास ने काव्य पाठ किया।

उन्होंने सहज रूप से सभी की रचना को सुनकर टिप्पणी की। यह देवास के सभी साथियों के लिए बड़ी उपलब्धि है।

सभी को बहुत धन्यवाद

आभार

कृपाली राणा

0

पलटते पन्ने शिवना साहित्य समागम

पारिवारिक स्नेह और अपनापन। लिटरेचर क्लब देवास के हम साथी शिवना साहित्य समागम में हिस्सा लेने पहुँचे थे।

सीहोर की सीमा में प्रवेश करते ही, आयोजन से संबंधित बैनर एवं पोस्टर देखकर मन ख़ुशी से भर गया। ऐसा लगा जैसे यह शिवना प्रकाशन का ही नहीं अपित पूरे सीहोर का ही आयोजन हो। कार्यक्रम की शुरुआत सुसज्जित सिद्धपुर सभामंडप से हुई और यह सिलसिला, सिपाही बहादुर सभागृह और कुंवर चैन सिंह सभागार तक पहुँचा। जितने सुव्यवस्थित और समयबद्ध सत्र थे उतने ही सार्थक नाम, सत्र के आयोजन स्थलों के भी थे।

कार्यक्रम कैसा रहा.. कितने समृद्ध वक्ता थे.. कविता, कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता एवं इतर विषयों को लेकर कितनी सार्थक चर्चा हुई.. यह सब तो आप सब जानते ही हैं.. इस पर तो बहुत लोग लिख भी चुके हैं।

यहाँ मैं बात कर रही हूँ उस आत्मीयता के रंग की जिसमें सराबोर होकर हम वापस लौटे और मन पर उसके छापे अब भी लगे हैं। आयोजन स्थल पर प्रवेश करते ही एक मनमोहक ख़ुशबू ने स्वागत किया, यहाँ की सुंदर साज- सज्जा निहार ही रही थी कि वालंटियर्स के रूप में मुस्कुराती बच्चियों ने अपनेपन के धागे में बाँध लिया और यह सिलसिला पूरे दो दिन चला।

नितांत अपरिचित चेहरे लेकिन पानी की बोतल हाथ में थमाते हाथ और अपनापन घोलते वाक्य..

आइये मैम..

आप कहाँ से आए हैं..

आप क्या करते हैं..

यहाँ आकर रजिस्ट्रेशन करवा लीजिए..

आपने चाय/ कॉफी/ स्नैक्स.. कुछ तो लीजिये

नाश्ता लीजिए..

खाना लिया..

मेहँदी लगवा लीजिये..

हर काम में तत्परता और पूर्णता। यह सब किसी आदेश का अनुपालन मात्र नहीं था.. यह स्वस्फूर्त ऊर्जा थी। जितना समृद्ध आयोजन उतना ही मनभावन आयोजन स्थल..!

मैं देख पा रही थी कई बड़े लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तित्वों की सहजता..। सत्र में अपनी गंभीर और सार्थक परिचर्चा से प्रभावित करते.. मंच से उतरते ही हम सब में घुल-मिल जाते। सच है फलदार वृक्ष ही झुक पाते हैं..। फोटो खिंचवाने के अनुरोध पर सहज ही राज़ी हो जाते और उतनी ही सहजता से छोटे-बड़े सवालों के जवाब भी देते। जितनी समृद्धता से सार्थक साहित्य चर्चा, उतने ही उल्लास से भगौरिया नृत्य एवं फूलों की होली में लगते ठुमके.. एक रोमांच की अनुभूति देते रहे।

यह हमारे लिए दुगुनी ख़ुशी का अवसर रहा। जहाँ लिटरेचर क्लब के संस्थापक सदस्य भाई मनीष वैद्य अंतरराष्ट्रीय शिवना सम्मान से सम्मानित हुए वहीं रचनाकर्मी साथियों के नाम "नमस्ते! मैं देवास" एक पूरा सेशन रहा जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार लीलाधर मंडलोई जी ने की।

मेहँदी लगे हाथों में उपहार स्वरूप किताबों का सैट थामे, मन में ढेर सारा अहोभाव लिए, साहित्यिक रूप से समृद्ध होकर लौटे हैं हम सभी। कई महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों से परिचय के सूत्र जुड़े। पंकज सुबीर जी समेत उनकी सहयोगी पूरी टीम एवं शिवना प्रकाशन का हृदय तल से आभार..!! सभी पुरस्कृत साथियों को हार्दिक बधाई..!! विमोचित पुस्तकों के लेखकों को बधाई..!! प्रभावी सत्र संचालकों और वक्ताओं को बधाई..!! लिटरेचर क्लब के सभी साथियों को भी हार्दिक बधाई..!!

मीनाक्षी दुबे

o

सारगर्भित और चिंतनपूर्ण संवाद

'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं था, बल्कि विविध कलाओं का सजीव संगम था। कार्यक्रम में साहित्य के अनेक आयामों पर विस्तृत चर्चा हुई- चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो, कविता हो या पत्रकारिता, ग़ज़ल, सिनेमा, धर्म और साहित्य, लघुकथा, स्वास्थ्य जैसे अनेक विषयों पर सारगर्भित और चिंतनपूर्ण संवाद हुए।

आयोजन में विभिन्न विधाओं के पारंगत विद्वजन उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने ज्ञानरूपी मोतियों से श्रोताओं को समृद्ध किया। ज्ञान चतुर्वेदी जी, यतींद्र मिश्र जी, लीलाधर मंडलोई जी, संतोष चौबे जी, यशपाल शर्मा जी, पुष्पेंद्र वैद्य जी, यशोधरा भटनागर जी, विनय उपाध्याय जी, प्रज्ञा पांडे जी, ममता सिंह जी, सीमा जी, तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ जी को सुनना अत्यंत प्रभावशाली और प्रेरणादायक अनुभव रहा। आदरणीय लीलाधर मंडलोई जी की अध्यक्षता में देवास के रचनाकारों का प्रभावी रचना-पाठ हुआ, जिसमें कविता की रचनात्मकता और उसके विविध आयामों पर गंभीर चर्चा की गई।

हमारे देवास की शान, प्रख्यात कथाकार मनीष वैद्य जी की कृति 'वांग छी' को प्राप्त 'अंतरराष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान' पर देवास के साथियों ने खड़े होकर करतल-ध्वनि से हर्ष और सम्मान प्रकट किया- यह क्षण अत्यंत गौरवपूर्ण था।

पंकज सुबीर जी की चाक-चौबंद व्यवस्था सचमुच आश्चर्यचकित करने वाली थी। उनके साथ क़दमताल करती शिवना टीम, शहरयार भाई, वामा टीम और वे युवा बच्चें, जो निस्वार्थ भाव से मुस्कान बिखेरते हुए पूर्ण लगन से अपना दायित्व निभा रहे थे। उनके निस्वार्थ प्रेम ने आयोजन को जीवंत बना दिया।

केवल साहित्य के लिए इतने लोगों को एकत्रित कर, उनके मन में साहित्य के प्रति प्रेम जगाना और उन्हें उसी रस में सराबोर कर देना- यह अद्‌भुत कार्य वास्तव में शिवना साहित्य परिवार ही कर सकता है। इतने सुंदर,

समृद्ध, सुसंगठित और प्रभावशाली आयोजन के लिए शिवना टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ, बधाई एवं धन्यवाद।

सुमन कुमावत

o

सार्थक बातचीत

साहित्य, संगीत, उत्सव, संस्कृति, प्रेम, नृत्य, गीत, मिलन, बातचीत, संवाद और लोक के रंगों से भीगा रहा दो दिनी 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल' इसमें देश भर के कई विशिष्ट साहित्यकारों श्री ज्ञान चतुर्वेदी जी, यतीन्द्र मिश्र जी, लीलाधर मंडलोई जी, मुकेश वर्मा जी, पंकज सुबीर जी, उर्मिला शिरीष जी विनय उपाध्याय जी, प्रभात रंजन जी, श्री यशपाल शर्मा जी को सुनने का सुअवसर मिला।

साहित्य के इस महोत्सव में केवल कहानी, कविता नहीं बल्कि उपन्यास, कथेतर साहित्य, ग़ज़ल, गीत, सिनेमा, धर्म और साहित्य, स्वास्थ्य, पत्रकारिता, लघुकथा सभी पर विस्तार से अलग-अलग सत्रों में सार्थक बातचीत हुई।

पूरे फेस्टिवल में सबसे अनूठा पल रहा जब आदरणीय मनीष वैद्य जी को 'वांग छी' के लिए "अंतर्राष्ट्रीय शिवना साहित्य पुरस्कार" से नवाज़ा गया और पूरे देवास ने उस पल खड़े होकर तालियों की करतल ध्वनि से उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया।

आदरणीय लीलाधर मंडलोई जी की अध्यक्षता में हमारा कविता पाठ हुआ और जिस तरह उन्होंने सभी रचनाओं को पूरे मन से सुना उन पर बातचीत की यह हम सभी साथियों के लिये किसी पुरस्कार की तरह बड़ी उपलब्धि है।

शिल्पी जैन

o

हृदय पटल पर अंकित रहेगा

साहित्य के बासंती समागम में साहित्य की विभिन्न विधाओं के रंगों से सरोबार यह साहित्य उत्सव उत्साह और उमंग से परिपूर्ण होकर गरिमा के साथ संपन्न हुआ।

इस आयोजन में फ़िल्म, पत्रकारिता, कहानी, कविता, लघु कथा, उपन्यास, इत्यादि विधाओं में रचनात्मक अभिव्यक्ति को साझा मंच प्रदान किया गया। यहाँ पर प्रतिष्ठित साहित्यकारों नें सकारात्मक वार्ता द्वारा नवोदित रचनाकारों को समृद्ध किया। इसमें लेखन की बारीकियों, भाषा, संवेदना और अभिव्यक्ति के विविध आयामों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया गया। इस अवसर पर पद्म श्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी जी, यतींद्र मिश्र जी, लीलाधर मंडलोई जी, संतोष चौबे जी, यशपाल शर्मा जी, पुष्पेंद्र वैद्य जी, यशोधरा भटनागर जी, विनय उपाध्याय जी, प्रज्ञा पांडे जी, ममता सिंह जी, सीमा जी, तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ जी को सुनना अत्यंत प्रभावशाली और प्रेरणादायक रहा।

समारोह में देवास के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री मनीष वैद्य जी को उनकी सुप्रसिद्ध कृति 'वांग छी' को अंतर्राष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। उनके नाम की घोषणा के साथ ही उपस्थित सभा में अधिकांश साथियों द्वारा एक साथ खड़े होकर करतल ध्वनि की गूँज से उनका अभिवादन किया।

समागम में देवास के कवियों द्वारा भी कविताओं का पाठ किया गया। यह दो दिवसीय साहित्य उत्सव हमारे जीवन में एक सुखद अनुभूति के रूप में हृदय पटल पर अंकित रहेगा। यह उत्सव हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना है। साहित्य एवं कला के सफल एवं सार्थक समागम के लिए शिवना परिवार को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार।

नीलम दुबे

o

बहुत कुछ सीखा दो दिनों में

शिवना साहित्य सम्मेलन सीहोर शहर में आयोजित दो दिवसीय साहित्य सम्मेलन में देवास के लिटरेचर क्लब देवास के साथ सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कार्यशाला में निम्न बिंदुओं पर चर्चा हुई।

1. धर्म और साहित्य में संबंध
2. कविता की पाठशाला और विस्तार

3.कहानी की पाठशाला और विस्तार

4. साहित्य और कला का अनूठा संगम

5. उपन्यास और उसके बढ़ते आयाम

चाहे आप किसी भी विधा में लिखें उसमें नवीन उपज होना आवश्यक है। जो आपकी रचना को अधिक सुघड़ और नवीनता प्रधान करती है।

साथ ही शाम को हमारे लिटरेचर क्लब देवास के सम्माननीय मनीष वैद्य सर को 'अंतर्राष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। रात्रि में पारंपरिक भगोरिया नृत्य का आनंद लेते हुए हम सब जैसे खो गए।

द्वितीय दिवस में देवास के सभी साथियों द्वारा सुंदर कविताओं का पाठ मंच पर आदरणीय वरिष्ठ साहित्यकार श्री लीलाधर मंडलोई सर की उपस्थिति में किया गया। शाम को फाग लोकगीत गायन और नृत्य का आनंद उठाया।

दोनों दिवस में सुस्वादु भोजन का आनंद कही कम नहीं था। आयोजन समिति के द्वारा सीखने योग्य बेहतर प्रबंधन द्वारा हमे आश्चर्यचकित होने पड़ा। निश्चित ही यह आयोजन हम सभी साथियों के लिए आगामी साहित्यिक जीवन में एक स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है।

शांतनु बेहरे

0

साहित्य की थाली में छप्पन भोग!

उतरते फागुन के दो दिन यानी के अठ्ठाईस फरवरी और एक मार्च को हमारा ठिकाना रहा शिवना का 'सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल'।

सीहोर के सुप्रसिद्ध क्रिसेंट रिसार्ट के ख़ूबसूरत परिवेश में साहित्य साधकों, साहित्य रसिकों का दो दिन का यह जमावड़ा आयोजन के स्वरूप विविधताओं और समयबद्धता की एक मिसाल कायम कर गया। कुल जमा तीन सभागार में अठ्ठाईस सत्रों में सिमटा यह कार्यक्रम कई मायनों में ख़ास रहा। उद्घाटन सत्र सहित सभी सत्र अपने निर्धारित समय पर आरंभ हुए और निर्धारित समय पर समाप्त हुए। इस बात को रेखांकित करना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि हमारे यहाँ छोटे से छोटे कार्यक्रम को भी समय सीमा में बाँधना मुश्किल होता है। इस कार्य के लिए शिवना प्रकाशन की पूरी टीम भाई पंकज सुबीर भाई शहरयार, बधाई के हकदार हैं।

समारोह के सभी सत्र निर्धारित स्थलों पर समानांतर क्रम में संपन्न हुए। फेस्टिवल में शामिल चर्चा के विषय विविधता लिये हुए थे जिसमें उपन्यास, कहानी, कविता, लघुकथा, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, आत्मकथा, सिनेमा, वर्तमान समय में पत्रकारिता, स्वास्थ्य जैसे सुरुचिपूर्ण विषय सम्मिलित थे। इस फेस्टिवल में धर्म और साहित्य जैसे विषय को छूने का साहस किया गया जिससे सामान्यत: सहित्यिक आयोजन परहेज करते आए हैं। और सबसे ख़ास बात यह रही कि अनेक सत्रों में युवा वर्ग व छात्र-छात्राओं की सक्रिय भागीदारी देखी गई जो मोबाइल के ज़माने में विरली बात है।

अपनी रुचि अनुसार चुने गए विभिन्न सत्रों में मुझे अनेक प्रखर वक्ताओं एवं साहित्य तथा कला साधकों से मिलने और सुनने का अवसर मिला इनमें आदरणीय विकास दवे, श्री यतिंद्र मिश्र, मशहूर फिल्म अभिनेता यशपाल शर्मा, विनय उपाध्याय, मनीषा कुलश्रेष्ठ, उर्मिला शिरीष, लीलाधर मंडलोई, संतोष चौबे, मुकेश वर्मा, निरंजन श्रोत्रीय, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, डॉ. प्रेम जनमेजय, कैलाश मंडलेकर, शिखा वार्ष्णेय, वंदना अवस्थी, प्रज्ञा पांडेय, ममता सिंह, जयंती रंगनाथन, पृथ्वी त्रिवेदी, प्रखर पत्रकार ब्रजेश सिंह राजपूत, पुष्पेंद्र वैद्य, पंकज मुकाती, को सुनने को मिला।

देवास शहर के लिए गौरवशाली पलों के भी हम साक्षी बने जब भाई मनीष वैद्य को उनकी पुस्तक वांग छी के लिए 'अंतरराष्ट्रीय शिवना सम्मान' से सम्मानित किया गया। देवास की स्थिति प्रमुखता के साथ दर्ज की गई जब लघुकथा सत्र के पेनलिस्ट के रूप में यशोधरा भटनागर शामिल हुईं।

लिट्रेचर क्लब देवास के लिए काव्य पाठ हेतु रखे गए सत्र 'नमस्ते मैं देवास' में उपस्थित

सदस्यों को काव्य पाठ करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। काव्य पाठ के बाद कार्यक्रम अध्यक्ष आदरणीय लीलाधर मंडलोई की बेबाक एवं मार्गदर्शी टिप्पणियाँ बेहद उपयोगी थीं। फूलों की होली, फाग गायन और भगोरिया नृत्य अपने अलग अंदाज़ में थे जो दो दिवसीय समारोह को उत्सवी रूप दे रहे थे। मालवा की उत्सवप्रियता और स्वाद की परंपरा की झलक भोजन और नाश्ते में झलक रही थी।

इन सभी के ऊपर पंकज सुबीर जी, शहरयार, आकाश माथुर के मुस्कराते चेहरे और आत्मीय आतिथ्य सोने पर सुहागा, केक पर आइसिंग या ब्रेड पर बटर की एक्स्ट्रा लेयर की तरह थे।

साहित्य के गलियारों में शिवना प्रकाशन सीहोर द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'सीहोर लिट्रेचर फेस्टिवल' की धूम बड़ी दूर तक और बड़ी देर तक सुनाई देती रहेगी। एक बार फिर शिवना प्रकाशन को इस अभूतपूर्व, अविस्मरणीय व सफल आयोजन के लिए अनेकानेक साधुवाद।

हमें इंतज़ार रहेगा सीहोर के अगले बुलउए का।

संदीप भटनागर

o

दो दिन माँ के आँगन में

मुझे शिवना साहित्य समागम सीहोर में लगा जैसे परिसर का हर एक कोना कला और साहित्य की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती की वीणा के तारों की गूँज से गुंजायमान हो रहा था।

शिवना साहित्य समागम सीहोर साहित्य महोत्सव इतना भव्य और अनूठा था कि वहाँ हमारे दो दिन इतनी जल्दी निकल गए कि पता भी नहीं चला, मानो रेत की तरह समय फिसल गया हो। इतना आत्मीय स्वागत, इतना अपनापन ऐसा लग रहा था जैसे हम हमारी माँ के आँगन में दो दिन को छुट्टियाँ बिताने आए हो।

आदरणीय मनीष वैद्य जी को अंतरराष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया उस समय ऐसा लगा कि ये सम्मान उन्हें

ही नहीं हमें भी मिला, मनीष वैद्य जी को अनेक-अनेक शुभकामनाएँ और बधाई।

आयोजन में इतने वरिष्ठ साहित्यकारों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनका नाम केवल किताबों और अख़बारों में अक्सर पढ़ने को मिलता है, आदरणीय लीलाधर जी मंडलोई जिन्होंने हमारी कविताएँ सुनी और उन पर टिप्पणी भी की, मनीषा कुलश्रेष्ठ जी, प्रेम जनमेजय, यतीन्द्र मिश्र, जाने माने अभिनेता यशपाल शर्मा जी और भी कई साहित्यकार, पत्रकार जिनसे मिलने का सौभाग्य इस शिवना साहित्य समागम में प्राप्त हुआ।

मेरी एक सहेली जैन है वो कहती है कि साहित्यकार स्वर्ग से आते हैं और वाक़ई इस समागम में ऐसी ही अद्भुत अनुभूति हो रही थी। भगोरिया नृत्य तो अपने आप में ही सबसे अलग छटा बिखेर रहा था और समापन में फाग के गीतों ने तो मन से वृंदावन की अनुभूति सीहोर में करवा दी थी।

पंकज सुबीर जी का बहुत आभार उन्होंने इतना सुंदर आयोजन किया जो बहुत व्यावहारिक, व्यवस्थित और आत्मीय था, आभार उन नन्हीं, नन्हीं बेटियों का जिन्होंने बड़े ही प्रेम से हम सभी बहनों के हाथों को मेहँदी से सजाया। सभी को अनेक अनेक बधाई और शुभकामनाएँ।

शर्मिला ठाकुर

o

बहुत कुछ मिला

फरवरी का आख़िरी दिन और मार्च का पहला यह दो दिवस रहे नाम शिवना साहित्य समागम सीहोर के। ये दिन डूबे रहे साहित्य, संस्कृति, बौद्धिक, आध्यात्मिक रंगों में। बहुत सारे साहित्यिक मित्रों से मिलना हुआ। हम हँसे, मुस्कुराए और थिरके पहले आदिवासी भगोरिया की थाप पर और फिर झूमे फूलों की होली में।

आदरणीय श्री पंकज सुबीर जी के अथक परिश्रम, सूझबूझ, धैर्य और गंभीरता की छाप पूरे दिन हर तरफ़ दिखाई रहे दे रही थी। कार्यक्रम में हर जगह खिल रही फूलों की

रंगोली, रंगों की रँगोली, चित्रकारी, हैंडीक्राफ्ट, मेहँदी। पूरे प्रांगण में थी प्यारी-प्यारी बच्चियों, जिनके चेहरे का उत्साह और उमंग उनके बिखरे रंगों से ज़्यादा चटक खिल रहा था। पंकज सुबीर इतने बड़े समागम के सूत्रधार पर चेहरे पर शिकन ढूँढ़ने से नहीं मिली, उनकी सौम्य मुस्कान हैरत में में डाल रही थी दिन भर हर किसी को।

कार्यक्रम में चल रहे थे पहले दिन दो-दो सत्र एक साथ दूसरे दिन तीन-तीन सत्र एक साथ। निर्णय लेने में दिक्कत हो रही थी इधर जाएँ या उधर जाएँ। इतना शानदार बुफे सजा था साहित्य का, कहानी में जाएँ कि कविता में जाएँ, उपन्यास में रमें कि कथा को समझें कि व्यंग्य को सुने। सभी इतने दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण थे कि लग रहा था यह छूटा तो ज़्यादा नुक़सान होगा, वह सुनें तो ज़्यादा फ़ायदेमंद रहेगा। इन्हीं सत्र में से एक सत्र रहा देवास के नाम "नमस्ते देवास" इसमें हम सभी साथियों ने अपनी कविता पाठ किया जिसका संचालन हमारी साथी श्रीमती रश्मि शर्मा ने किया और अध्यक्षता की वरिष्ठ कवि श्री लीलाधर मंडलोई जी ने। श्री मंडलोई ने सभी की कविताओं पर बहुत सटीक और महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ की।

मैंने जगतगुरु श्री अजय गुरुजी श्री विकास दवे जी श्री यतिंद्र मिश्र जी, यशपाल शर्मा जी, उर्मिला जी, रेखा जी मुकेश वर्मा जी, संतोष चौबे जी, ज्ञान चतुर्वेदी जी पुष्पेंद्र वैद्य जी, लीलाधर मंडलोई जी, मनीषा कुलश्रेष्ठ जी, ममता जी (रेडियो सखी), अनु लता, जी प्रज्ञा जी आप लोगों को सुनकर बहुत समृद्ध हुए। इस अवसर पर आदरणीय मनीष वैद्य जी को उनके कहानी संग्रह वांग छी के लिए अंतर्राष्ट्रीय शिवना साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया, उन्हें बहुत-बहुत बधाई।

बहुत कुछ मिला सीहोर लिटरेचर फेस्टिवल से बहुत धन्यवाद शिवना प्रकाशन, बहुत धन्यवाद पंकज सुबीर और बहुत धन्यवाद सीहोर...!

बिंदु तिवारी

o

केंद्र में पुस्तक

(कविता संग्रह)

एक पुराना मौसम लौटा

समीक्षक : डॉ. मधु संधु, ज्योति जैन, स्मृति आदित्य, पारुल सिंह

लेखक : शहरयार

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

डॉ. मधु संधु
13 प्रीत विहार, आर. एस. मिल, जी. टी. रोड, अमृतसर, 143104, पंजाब
मोबाइल- 8427004610
ईमेल- madhu_sd19@yahoo.co.in

ज्योति जैन
1432/24, नन्दा नगर,
इन्दौर- 452011, म.प्र.
मोबाइल- 9300318182
ईमेल- jyotijain218@gmail.com

स्मृति आदित्य
मोबाइल - 9424849649
ईमेल- smritiadityaa@gmail.com

पारुल सिंह
डब्ल्यू-903, आम्रपाली ज़ोडिएक,
सेक्टर-120, नोएडा 201301, उप्र
मोबाइल- 9871761845
ईमेल- psingh0888@gmail.com

अतीत की स्मृतियों में लिपटा प्रेमकाव्य- एक पुराना मौसम लौटा

डॉ. मधु संधु

साहित्य मानव मन की भावनाओं और अनुभवों की, विचारों और संघर्षों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। 'एक पुराना मौसम लौटा' क़ानूनज्ञ, विश्लेषक, समीक्षक, और कवि शहरयार का प्रथम काव्य संकलन है। 86 पृष्ठों की इस पुस्तक में कुल इकतालीस कविताएँ हैं। 'कार्यस्थल पर यौन शोषण- कारण और निवारण' पुस्तक के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में उनके अनेक शोधात्मक/ समीक्षात्मक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। 'शिवना क्रियेशन्ज़' द्वारा निर्मित देश भक्ति गीत 'भारत कहानी', 'हमारी जान हिंदुस्तान' में उनकी प्रतिभागिता रही है। सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'कौन सी ज़मीन अपनी' पर बनी लघु फिल्म में अभिनय भी किया है। संप्रति शहरयार 'शिवना प्रकाशन' के प्रमुख प्रबन्धक, 'शिवना साहित्यिकी' के कार्यकारी संपादक और 'विभोम स्वर' के क़ानूनी सलाहकार हैं।

'एक पुराना मौसम लौटा' मुख्यत: अतीत की स्मृतियों में लिपटा प्रेमकाव्य है। दिल के एक कोने में बसे अतीत के, पुराने मौसम के, प्रथम प्रेम के, स्पर्श, सुगंध और स्मृतियाँ के, अनुराग के पल इस प्रेमपथिक नायक को हॉण्ट करते हैं। अक्सर सपनों में वही परछाई उतरती है, वही हँसी दिल के अँधेरे कोनों में गूँजती है, चुप्पी और स्पर्श की भाषा कवि को आज भी कंठस्थ है। यह 'आत्मा के इशिक़या संवाद' की कविताएँ हैं- तब की, जब दिल का दरवाज़ा पहली बार खुलता है। यह अनाम प्रेम के रिश्ते, अहसास, सिहरन, ख़ामोशी में समाई वाचालता की गूँज-अनुगूँज का काव्य-संकलन है।

नायिका का मोहक रूप, सौंदर्य तो मन में पालथी मारे बैठा है। आँखें, नाक, तिल का भूरा निशान, हँसी, केश, गुलमोहर से गाल अंतस में उधम मचाये रहते हैं। बासंती देहगन्ध अनमोल इत्र के पर्याय सी है।

हर बार जब पलकें उठती हैं, / एक दुनिया रौशन हो जाती है / डिंपल / एक नन्हा ब्लैक

होल है / जहाँ मेरा सारा दुख और प्रेम / एक साथ गिर कर बिखर जाते हैं। (पृष्ठ 20- 21)

यहाँ परम्परित, शास्त्रीय, किताबी नखशिख सौंदर्य नहीं। हाव-भाव-शृंगार- सब नायक को आंदोलित करते हैं। हरी और सतरंगी चूड़ियों की घण्टियों सी आवाज़, हीरे सी हज़ार दीयों सी चमकती लौंग, आलता, झुमके, पायल, हार, चाँदी का कमरबंद- ऐसे लगता है, मानों- संगीत / उसके पैरों से होकर बह रहा हो / चारों तरफ़ फैल जाती है / उन बनजारे पैरों की ख़ुशबू। (पृष्ठ 51)

किसी कलाकार की सबसे सुंदर कल्पना सी है वह लड़की, वह नायिका।

जितना बढ़ता है काजल का घेरा / उतना ही गहरा होता जाता है जादू। (पृष्ठ 4)

वह नथ तुम्हारी, / जो हीरे की हो या सोने की, / चमकती है मेरे दिल के आईने में / ज़ुल्फ़ आज़ाद है, बेलगाम / जैसे मेरा इश्क़ तुम्हारे लिए। / आँखों में इतनी बातें होती हैं / कि प्रेम का शोर मच जाता है। (पृष्ठ 9)

पुस्तक का समर्पण पंकज सुबीर को किया गया है- उस्ताद के नाम, आज मैं जो कुछ भी हूँ, आपकी ही तराशी हुई एक मिट्टी हूँ। (पृष्ठ 3)

पुराने मौसम की, किशोरावस्था की, अतीत की स्मृतियों का अमूल्य ग्रंथ आज भी कवि की शक्ति हैं- स्मृतियाँ / तुम हो मेरी शक्ति, मेरा अनमोल ग्रंथ / मैं डूबा हूँ तुममें इस क़दर, इस हद तक, / कि अब तुम ही हो मेरा जग और परलोक। (पृष्ठ 57)

नवाबों के शहर भूपाल की पुरानी गालियों की सोंधी महक, ज़ायक़ेदार खाने, चाय के प्यालों से उठते धुएँ की ख़ुशबू और प्रेमिका की बातों की मिठास कवि को भुलाए नहीं भूलती। ऐसे ही संस्मरण दिल्ली शहर से भी जुड़े हैं।

बहुत सी कविताएँ उस पत्नी/ गृहिणी के लिए हैं, जो घर की धुरी है, केंद्र बिन्दु है, आत्मा है, जिसे हर मर्यादा निभानी आती है, जो सब की लाड़ली भी है और सब को सम्मान देना भी जानती है।

आज के जीवन में समाई संवेदनहीनता, जड़ता भी इन कविताओं का अभिन्न अंग बनी है। सोशल मीडिया का वह निर्मम रूप भी यहाँ चित्रित है, जहाँ दर्द तमाशा बन कर रह गया है, सड़क दुर्घटना से सड़क पर मर रहे आदमी को अस्पताल पहुँचाने के लिए कोई तैयार नहीं, सब में अच्छे और ख़ास एंगल में वीडियो बनाने की होड़ सी रहती है।

राजनीति करने वाले उन मास्टरमाइंड ख़ुराफाती लोगों को भी आड़े हाथों लिया गया है, जो ख़ुद शांत रहकर दूसरों को ग़लत रास्तों पर दौड़ाते हैं।

कुछ कविताएँ उस पितातुल्य साहित्यिक गुरु पंकज सुबीर के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट करती हैं, जिसने अपनी छत्रछाया में कोरे काग़ज़ से अनगढ़ किशोर को तराश कर इस मुकाम तक पहुँचाया, उड़ानें दी, पहचान दी, सम्पन्नता दी, आत्मीयता दी, मान और स्नेह दिया- आप वो दरख़्त हैं / जिसकी छाँव में एक ढोर लड़का / आज इंसान बन गया। (पृष्ठ 80)

पंकज सुबीर ने इन्हें 'कुछ गढ़ी तो कुछ अनगढ़ी कविताएँ' कहा है। लिखते हैं- "यह उसके सफ़र का आग़ाज़ है। किताबों की दुनिया में, लेखकों के साथ रहते-रहते उसके अंदर की लेखकीय कोमलता को थोड़ी नमी मिली है और वहाँ से कुछ अंकुर अँखुवा गए हैं।" (पृष्ठ 4)

इन कविताओं में मुख्यत: विप्रलंभ शृंगार के, विरह वेदना के, मोहक सौंदर्य के सहज भाषा में अंकित अप्रतिम चित्र हैं। इश्क़, नूर, इबादत, ज़ुल्फ़ें, लोबान आदि उर्दू शब्द और मुंबइया गीत ('भीगे होंठ तेरे', 'पल पल दिल के पास') भाषिक सौंदर्य को द्विगुणित कर रहे हैं।

000

रोशनी की तरह की कविताएँ
ज्योति जैन

जब हम कुछ पढ़ रहे होते हैं और उसी से संबंधित आसपास कोई घटनाक्रम होता है, तो हमें लगता है कि अरे वाह! यह तो बहुत सुखद संयोग है। पिछले दिनों मेरे साथ ऐसा ही हुआ। मैं शहरयार का नया काव्य संग्रह 'एक पुराना मौसम लौटा' लेकर बैठी और उन्हीं दिनों बिटिया को बेटी हुई। मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी कि यह किताब भी नई है, और शिशु भी नवजात। आमतौर पर नई किताबें कोमल, कमज़ोर या थोड़ी कच्ची मानी जाती हैं; ठीक वैसा ही जैसा नवजात शिशु होता है। विचारों के गर्भ से निकली प्रथम किलकारी जैसी ही यह पुस्तक प्रतीत होती थी। मैंने कविताएँ पढ़ना शुरू किया और दो ही दिन बाद मेरी नातिन ने अपनी उँगलियों से मेरी एक उँगली मज़बूती से पकड़ ली। तब मुझे अहसास हुआ कि किताब के शब्द भी उतने ही मज़बूत थे जितनी मेरी नातिन की पकड़। यानी दोनों को ही कच्चा या कमज़ोर समझने की भूल नहीं करनी चाहिए, ऐसा आभास हो गया था।

जिन्हें आप एक प्रकाशक या संपादक की हैसियत से जानते हों। और अचानक पता चलता है कि सैकड़ों पुस्तकों को अपने हाथों से गुज़ारने वाले उन हाथों की उँगलियों ने कविताएँ रच दी हैं, तो एक सुखद आश्चर्य हुआ। प्रकाशन के मैनेजमेंट से लेकर पन्नों की सेटिंग, ग्राफिक्स, कवर, लेखकों से माथाफोड़ी, प्रिंटर से दिल्ली, भोपाल बात करना, पार्सल मँगवाना- भेजना, इनके सारी बातों के बीच तितली के परों के समान कोमल अनुभूति अंकुरित हो जाना, किसी परीकथा जैसा ही लगा था। शहरयार की कविता की पुस्तक आई है, यह जानकर ऐसा ही महसूस हुआ। इसलिए कविताएँ पढ़ने की उत्सुकता और बढ़ गई थी। और जब पुस्तक हाथ में आई तो शहरयार की कविताओं से गुज़रना मुझे ऐसा लगा जैसे किसी अँधेरी सुरंग के मुहाने पर दूर रोशनी दिखाई दे रही हो, और धीरे-धीरे पूरा उजाला फैल गया हो। ये कविताएँ बिल्कुल वैसी ही हैं।

शुरुआत प्रेम से होती है और प्रेम तो वैसी ही इतनी ख़ूबसूरत अनुभूति है कि सारी दुनिया प्रेममय लगने लगती है। जब कविताओं में प्रेम आता है, तो लगता है कि कविता 'शृंगारित' हो गई है। उसे आभूषण पहना दिए गए हों। जब मैं इन कविताओं से गुज़रने लगी, तो किसी पुरुष लेखक द्वारा आभूषणों और सुंदरता के बारे में इस तरह बात करना बड़ा सुखद लगा। जब वे रेहड़ी पर टँगे झुमके की बात करते हैं, तो उन्हें वे चाँद-सूरज जैसे लगते हैं, जिनकी

कीमत सिर्फ 25 रुपये है, लेकिन देखते ही देखते वे हज़ारों-करोड़ों के हो जाते हैं। जब वे हरी चूड़ियों पर सुनहरे काम की बात करते हैं, तो लगता है कि कवि के हृदय में कितनी सूक्ष्म दृष्टि है। वे गहनों को कविता की तरह रच देते हैं। जब वे पायल, गालों को छूती नथ, झुमके, चूड़ियों की बात करते हैं। देखिए किस तरह- खन खन हरी काँच की चूड़ियाँ / बस दो या तीन ज़्यादा नहीं। ये चमकती नहीं / ये भड़कीली नहीं / एक गहरा, शांत हरा रंग / जैसे मानसून के बाद की पत्तियाँ / और उन पर बहुत महीन सुनहरा वर्क / जैसे सूरज की पहली किरण किसी पत्ती पर ठहर गई हो।

या- रेहड़ी पर टँगा वह झुमका / ना बहुत बड़ा ना बहुत छोटा / बस तुम्हारी साँवली गर्दन को नापता हुआ / तुम्हारे कानों में वह जब झूलता / तो लगता जैसे सूरज और चाँद मिले हों / जब वह तुम्हारे कान से टकराता / तो एक धीमी सी धुन निकलती थी / वह धुन हमारे इश्क का सबसे महँगा संगीत थी।

इसी ख़ूबसूरती से जब वे गुलमोहर की शर्म और नाक के नीचे काले तिल की बात करते हैं, तो लगता है कि उन्होंने इत्र की शीशी का ढक्कन खोल दिया है और ख़ुशबू चारों ओर महकने लगी है। और तो और दाँत पर चढ़े हुए दाँत, यानी नुक्स वाला दाँत भी इतनी ख़ूबसूरती का पैमाना हो सकता है कि उस पर कविता ही रच दी जाए, फिर तो उस कवि की क्या ही बात है। बानगी देखिए- उन दाँतों के बीच एक तरफ़ चढ़ा हुआ वह "छड़ा" दाँत, जैसे किसी मँझे हुए कलाकार ने ख़ूबसूरती में एक छोटा सा नुक्स छोड़ दिया हो, ताकि नज़र ना लगे- वह दाँत हँसी के साथ जब नुमाया होता है / तो चेहरे पर एक अलग ही शरारत भर देता है / मैं अक्सर सोचता हूँ / अगर उसके दाँत बिल्कुल सीधे होते / तो शायद वह इतनी "अपनी" ना लगती। यह इसलिए भी सुखद लगता है क्योंकि मैं उस नायिका को जानती हूँ। जब दांपत्य में आप रचे-बसे हों और ऐसी कविताएँ निकलें, तो यह साबित करता है कि दांपत्य में प्रेम का रंग और गाढ़ा हो चला है। और आने वाले दिनों में दूर तक इसका रंग और गहरा होने वाला है।

भूले बिसरे प्रेम या खिलंदड़े दिनों के प्रेम की कविताएँ अद्‌भुत है। ये कविताएँ कवि के प्रति एक सम्मान पैदा कर देती है। "तुम्हारे सुख की ख़ातिर" में पाठकों का दिल भी बैठ जाता है जब वे कहते हैं- हम साथ थे पर जानते थे यह आख़िरी पड़ाव है / जब मैंने तुम्हें छोड़कर जाने के लिए क़दम उठाया तो वह पहला प्यार था मेरा / जिसके लिए मैं सचमुच रोया / दुल्हन के जोड़े में मैं तुम्हें देख लेता / तो सारे त्याग टूट जाते / और मैं उस दरवाज़े पर खड़ा रहकर / तुम्हारे नए जीवन को अधूरा नहीं करना चाहता था। यह बहुत सुंदर कविता है जो निस्वार्थ प्रेम की कहानी कहती है। शीर्षक कविता "एक पुराना मौसम लौटा" गुलज़ार साहब की ग़ज़ल के मिसरे की तरह यादों की पुरवाई में लिए जाती है।

शहरयार की कविताओं में प्रेम के साथ-साथ दोस्ती का रंग भी बहुत अपना सा लगता है। जब 'पढ़ाकू' या 'जेंटलमैन' जैसे ख़िताब वाले दोस्तों की याद आती है, जब वे शरीफ़ से दिखने वाले 'सरदार' की बात करते हैं या 'अंताक्षरी वाले बेईमान सुल्तान' की, या 'हम पाँच और हमारी उलझी दोस्ती' की। दोस्ती का रिश्ता सचमुच बहुत अलग होता है। बिना रक्त संबंध और किसी भी धागे या गाँठ के बिना बँधा रिश्ता। ऊँचे-नीचे पथरीले रास्तों पर चलने वाली दोस्ती की मज़बूती ही अलग होती है। दोस्तों के साथ चीटिंग करना, पाला बदलना और ख़ुराफाती शक्लें- बचपन का यह दौर बहुत अलग होता है।

उनकी एक और कविता आत्मा को छू लेती है- 'एक लिबास, एक रूह'। आज जब नफ़रतों का दौर देखते हैं, तो ऐसी कविता सुकून देती है। ऐसा सुकून, मानो किसी ने जलती आँखों पर रुई के ठंडे फाहे रख दिए हों। वे स्वयं को वहाँ रखते हैं, जहाँ वे भीड़ में अपनी पहचान के कारण अलग दिखते थे। उन्हें डर था कि उनका यह लिबास दिलों के बीच दीवार न खड़ी कर दे। लेकिन वे उन कंधों का शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने उन्हें अलग होने का एहसास नहीं होने दिया। यहाँ उनकी भाषा दिल को छू लेने वाली है। वे कहते हैं कि उनके दोस्तों और अपनों ने उन्हें वैसे ही अपनाया जैसे समंदर लहरों को अपनाता है। बिना यह पूछे कि वे किस किनारे से आई हैं। इसीलिए इन नेक दुआओं को ही वे अपनी असली कमाई मानते हैं। आज के समय में यह कविता बहुत सार्थक है।

संग्रह की आख़िरी तीन-चार कविताएँ शायद आज के शहरयार का 'होना' हैं। वे कविताएँ एक लेखक और प्रकाशक से बढ़कर एक ऐसी शख्सियत को समर्पित हैं, जिसने शहरयार का भविष्य गढ़ा। शहरयार ने बहुत ईमानदारी से उस सम्मान को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है। सम्मान उनके लिए जिनकी छत्रछाया में शहरयार ने स्वयं को महफ़ूज़ पाया। यह वह वटवृक्ष है जिसकी छाया में नन्हें पौधे भी मज़बूती से पनपते हैं और वृक्ष बनते हैं।

पंकज सुबीर को समर्पित यह कविताएँ सर्वश्रेष्ठ हैं। उनकी ये कविताएँ इसलिए भी अच्छी लगती हैं क्योंकि उनमें 'खांटी' शब्द हैं। मालवा में बिगड़ैल लड़के को 'ढोर' कहा जाता है। शहरयार ने इस शब्द का प्रयोग अपनी कविता में किया है। वे पंकज जी के लिए लिखते हैं- "मेरा दिल जानता है कि आप वह दरख़्त हैं जिसकी छाँव में एक ढोर लड़का आज इंसान बन गया।" इसी तरह तीन पीढ़ियों के विश्वास का अनकहा रिश्ता और 'शिवना' की मेहनत- यह 'अभाव से आसमान तक' की यात्रा है। इन सभी कविताओं में शहरयार ने एक ऐसे व्यक्तित्व को केंद्र में रखा है जो उनकी ज़िंदगी में सब कुछ है। मुझे लगता है कि इसी तरह कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए। कृतज्ञता दरअसल हमारी पुरातन परंपरा है और यदि यह क़ायम रहे, तो इससे अच्छा साहित्य और क्या होगा।

मैं शहरयार के प्रथम काव्य संग्रह के लिए उन्हें बहुत बधाई देती हूँ। यह तो अभी यात्रा का आरंभ है और मुझे लगता है कि मंज़िल पर पहुँचने के बजाय यह यात्रा जारी रहे, इससे अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती। तो प्रेम के आरंभ से होती हुई, अपनों के प्रति सम्मान ज्ञापित करती चल रही यह यात्रा निर्बाध जारी रहे, यही शुभकामनाएँ।

000

प्यार का दरिया

स्मृति आदित्य

प्रेम कविताओं की सफलता इस बात में ही है कि पढ़ते हुए कविताओं से भी मोहब्बत हो जाए। शिवना प्रकाशन की अथक ज़िम्मेदारियों के बीच कब कवि होते शहरयार की लेखनी से कविताएँ झरने लगीं, ख़ुद उन्हें भी नहीं पता चला। प्रेम जितना मासूम, मोहक और मधुर होता है, शहरयार की कविताएँ भी उतनी ही मासूम, मोहक और मधुर हैं। भरोसा नहीं होता कि यह उनकी पहली किताब और पहला प्रयास है। इन कविताओं में दो दिलों के बीच अनायास खिल उठने वाले इश्क़ की पाकीज़ा ताज़गी है। स्वतंत्र लेकिन मर्यादा की डोर में बँधी अनुशासित और आकर्षक अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

इन कविताओं में सिर्फ रूमानी रिश्ते की बुनावट ही नहीं है बल्कि श्रद्धा और सम्मान में रचे उस भाव की भी प्रस्तुति है जो वे अपने गुरु, उस्ताद, साहित्यकार पंकज सुबीर के प्रति गहराई से महसूस करते हैं। इन कविताओं में धवल शुद्धता है, कच्ची कोमलता है और पवित्र प्यार की प्रगाढ़ता है। ये कविताएँ सरल-तरल शब्दों में भावों की उस झील में ले जाती हैं जहाँ शंख, सीप है, मोती है, रंगबिरंगे पत्थर हैं।

इन रचनाओं में फूल है, हवा है, आकाश है और साथ में आँचल है, नथ है, कजरारी आँखें हैं। सौंदर्य को देखने की अपनी ही अनूठी दृष्टि है। कविताओं को उसके मुकाम पर उसका नज़रिया या कहें कि विज़न ले जाता है, शब्द तो पन्ने पर धरे रह जाते हैं, भाव सुगंध मन में कहीं ठहर जाती है और बार-बार उन बीते दिनों की तरफ़ ले जाती है, जहाँ उम्र अपने गुलाबीपन में अनगढ़ स्वप्न गूँथा करती है। जहाँ चेहरे की रंगत किसी के दिख भर जाने से उन्नाबी हो जाए और चूनर धानी।

तुम खड़ी रहती हो मौन / पर आँखों में इतनी बातें होती हैं कि / प्रेम का शोर मच जाता है / मैं बस देखता रह जाता हूँ / तुम्हें तुम्हारी नथ को / और उन उड़ती हुई ज़ुल्फ़ों को, जिनमें मेरा जीवन / एक सुंदर सपना बनकर / हमेशा के लिए उलझ गया है।

कवि शहरयार प्रेम को इतनी शिद्दत से निभाते हैं कि हर कविता के साथ एक उजास गहरे तक बस जाती है कहीं भीतर और प्रेम की पवित्रता के प्रकाश से प्रेम हो जाता है। मन बरबस यह कह उठता है- प्यार बस ऐसा ही संदली और सलोना सा प्यार बना रहे उसे दुनिया की हर कालिख से बचाए रखना है।

वह मेरी आत्मा का / उसकी आत्मा से / पहला इश्क़िया संवाद था / उसने कहा अब तुम मेरे हो / और मैंने सुना-मैं हमेशा से तुम्हारी थी। अब यह दुनिया थोड़ी अलग दिखती है / क्योंकि इश्क़ का पहला स्पर्श / किसी ताले की चाबी जैसा था / जिसने मेरे दिल का / वह दरवाज़ा खोला / जहाँ से सिर्फ तुम गुज़र सकती हो।

कविताएँ शृंगार रस की होकर भी दायित्व बोध जगाती हैं, जहाँ एक प्रेमी अपने प्रिय के प्रति आकर्षित तो है मगर वह अपने प्रेम के इज़हार में सजग भी है और चौकस भी है, भावुक भी है और भोला भी और हाँ ख़ुद से ही चकित भी। यही सब मिलकर शब्दों एवं भावों का ऐसा चमत्कार पैदा करते हैं कि किताब हाथ से छूटती नहीं। एक दरिया प्यार का उमड़ आता है अपने ही पुराने मौसम को याद करते हुए।

किताब का शीर्षक- 'एक पुराना मौसम लौटा' पहले ही मन के शांत जल में हलचल मचाता है और फिर उम्मीद की गहरी हरी शाख़ को पकड़े आप जब पेड़ को निहारते हैं, तब वह शाख़ फूलों से भरने लगती है। ख़ुशबू का एक संसार आपका दूसरा हाथ थाम भी लेता है।

कल्पनाओं का नाज़ुक अभिस्पर्श इन कविताओं की असली रंगत है- हल्के नीले रंग का वह शरारा / जैसे सुबह के साफ आसमान का टुकड़ा / जिसके पाँवों पर लगी है / सुनहरी बूटियों वाली वह चौड़ी लेस।

उसके सफ़ेद और कोमल पैर / जैसे ताज़ी खिली कोई सफ़ेद कली / पीली साड़ी और गुलाबी किनारा / जैसे खिल उठा हो कोई बाग़ सारा / उसके बाल लंबे मगर थोड़े पतले भी जैसे किसी पुराने साज़ के महीन तार / उसके बिना दाग़ के चेहरे पर साँवलापन जैसे ढलती हुई शाम का नर्म उजाला हो / गुलमोहर की आभा / तुम्हारे साँवले चेहरे पर और भी गहरी उतर आई थी / वह सिर्फ गाल नहीं / प्रेम का घोषणा पत्र था।

कहना होगा कि कवि शहरयार के पास कहन की अपनी ही उर्वर ज़मीं है और अपनी ही लहलहाती शब्दों की हरी फ़सल, अपनी ही नज़र का आसमान और अपनी ही भाव-बरसात। ज़ाहिर है सुगंध भी उनकी अपनी है पर सुगंध को कौन बाँध सका है भला। इन पन्नों से रह-रह कर उठकर यह यश गंध अब हर तरफ़ लहरा रही है, इसीलिए अमेज़न की बेस्ट सेलर में इन दिनों शुमार है और दुआ है कि यह घर के हर उस कोने में सजी मिले जहाँ मोहब्बत साँस लेती है।

प्रेम इन कविताओं का मुख्य और मुखर स्वर है चाहे वह प्रियतम के प्रति हो, प्रकृति के प्रति या अपने अपनों के प्रति। या अपनी ही अनुभूतियों के प्रति।

कवि के ही शब्दों में कहूँ तो- यह किताब 'मोहब्बत की कभी अधूरी और कभी मुकम्मल सी दास्तान' है इसे सबको पढ़ना ही चाहिए।

000

शहद जैसे शब्द

पारुल सिंह

इस दुनिया में जितनी भाषाओं में जितना प्रेम लिखा गया है, उतना ही लिखा जाना अभी बाक़ी है। दुनिया की पहली कविता क्रोंच पक्षी के विरह से ही जन्मी थी-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधी: काममोहितम्॥

(हे निषाद (बहेलिये), तुम्हें शाश्वत काल (कभी भी) तक प्रतिष्ठा या शांति न मिले, क्योंकि तुमने प्रेम में मग्न (काममोहित) क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक (नर) की हत्या की है)

विरह का रूदन प्रेम की पराकाष्ठा ही तो है। प्रेम जताने को ही कविता का जन्म हुआ था। प्रेम कविता इसी लिए सदा रही हैं और रहेंगी। शहरयार का पहला कविता संग्रह 'एक पुराना मौसम लौटा' इसी कड़ी को आगे बढ़ाता हुआ कुछ सुन्दर प्रेम कविताओं के संसार में पाठक को लिए चलता है।

प्रेम की दुनिया नाज़ुक है गुलाबी रँग सी। प्रेम की दुनिया नर्म है रेशम सी। प्रेम की दुनिया बिल्कुल ऐसी ही है जैसी शहरयार की कविताओं में है। इन कविताओं में तुहिन की कोमलता और सुबह सवेरे की मिहिका की सी सोंधी गंध आपको उस युग में ले जाती है, जब आपने पहले पहल जीवन में प्रेम को महसूस किया होगा। पहला काव्य-संग्रह होने के कारण आप कवि का कच्चापन चिह्नित करने की ग़रज़ से पन्ने पलटते जाते हैं, और खो जाते हैं एक ऐसे संसार में, जिसमें शहद जैसे शब्द आपको रस और सरस के आनंद में डुबो देते हैं। आप आँखे मूँदे बस भीजते रहते हैं शब्दों की रस-वर्षा में।

कुछ बानगी देखिए- 'बस एक अनकही सहमति थी, इतना हल्का था वह स्पर्श, जैसे हवा का झोंका आया और गुज़र गया\ जब तुम मुस्कुराती हो, तो वह छोटी-सी गोलाकार ज्योति, तुम्हारे चेहरे के चारों ओर, एक प्रेम-चक्र रच देती है\ तुम खड़ी रहती हो मौन, पर आँखों में इतनी बातें होती हैं, कि प्रेम का शोर मच जाता है।'

प्रेम चक्र का रचना और मौन से प्रेम का शोर उठना। शहरयार अपनी पहले-पहल की कविताओं से ही इशारा कर दे रहे हैं कि उनकी लेखनी अभी कविताओं के कौन कौन से त्रिकोणों को छूने वाली है आने वाले समय में। उनकी भाषा उतनी ही सरल और सहज है, जितनी प्रेम की भाषा होनी चाहिए। प्रेम में भला क्लिष्टता का क्या काम!

प्रेम लिखना जितना आसान समझा जाता है और अगर मान लो कि है भी तो भी प्रणय-दृश्य रचते हुए शब्दों के चयन में हमने बड़े-बड़े लेखकों को डगमगाते देखा है। शब्दों से प्रगाढ़ दृश्य गढ़ते हुए भी, शब्द निवेदन शालीनता की चौखट नहीं छोड़ता इन कविताओं में। अश्लील होने का ज़रा भय नहीं। इस प्रखरता से रचा है शहरयार ने इन दृश्यों को। यह बहादुरी वह ही दिखा सकता है जिसे अपने स्किल पर पर भरोसा हो। वरना कवि ऐसे में शब्दों का नहीं इशारों का सहारा लेकर बच जाता है। पर शहरयार के यहाँ शब्दों की शालीन बुनावट ज़रा देखें-

'उस स्पर्श में मैने पूरी दुनिया को थाम लिया था / वह एक मिनट मेरे सारे जन्मों पर भारी था / उस एक पल में मैंने जान लिया था यही है प्रेम / मैंने ईमानदारी से, प्यार से, उस हिस्से को छुआ, जहाँ तुम्हारी धड़कनें सुनाई देती थीं।'

इन कविताओं के बारे में लिखते हुए पंकज सुबीर कविता के शिल्प और भाषा का ज्ञान होने की बात को तो मानते हैं। पर कुछ कविताओं के अनगढ़ेपन की बात भी करते हैं। प्रणय दृश्यों को वे पूरी तरह अनदेखा कर निकलते हैं। शायद वे उन पर पक्ष लेने के आरोप से बचना चाहते होंगे, या शहरयार के साथ अपने रिश्ते का पास होगा। पर मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ एक समीक्षक होने के नाते कहूँ तो ये कविताएँ बिल्कुल अनगढ़ नही हैं। पंकज जी ने सही लिखा है कि आपको ये कविताएँ आश्चर्य में डाल देती हैं। चकित करती हैं। और इन कविताओं में प्रेम तो स्थायी भाव है ही।

इन में कुछ कविताएँ दोस्तों के नाम है जिन से लड़कों की अल्हड़ दोस्ती का ब्योरा मिलता है। तो कुछ अपने गुरु पंकज सुबीर को समर्पित हैं। जो बहुत ही भावपूर्ण ढंग से लिखी गयी हैं। और एक बहुत ही सुंदर और अनोखे पिता पुत्र के, गुरु-शिष्य के रिश्ते से आपको मिलवाती हैं।

शीर्षक कविता बहुत ही सुंदर है उसके साथ ही किसी शहर की तलाश में और एक नन्हा ब्लैकहोल मेरी पसंदीदा कविताएँ हैं। किताब का शीर्षक हम जानते ही हैं गुलज़ार साब की एक ग़ज़ल का हिस्सा है। और उसके साथ नंगे पाँव पानी पर चलते क़दम वाला कवर बहुत ही मोहक है। होना ही था उसे, शिवना के कवर मशहूर हैं इसी लिए। किताब के कवर पर पीछे कवि का हँसता हुआ चित्र। कुल मिला कर यह वह रूमानी एहसास है किताब के रूप में, जो आपके घर की लायब्रेरी में होना ही चाहिए। शिवना प्रकाशन से आप इस किताब को ऑनलाइन मँगवा सकते हैं। और मुझे और कवि को ज़रूर बताएँ कि ये किताब आपको कैसी लगी!

000

फार्म IV

समाचार पत्रों के अधिनियम 1956 की धारा 19-डी के अंतर्गत स्वामित्व व अन्य विवरण (देखें नियम 8)।

पत्रिका का नाम : शिवना साहित्यिकी

1. प्रकाशन का स्थान : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001

2. प्रकाशन की अवधि : त्रैमासिक

3. मुद्रक का नाम : ज़ुबैर शेख़।
पता : शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एमपी नगर, भोपाल, मप्र 462011
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

4. प्रकाशक का नाम : पंकज कुमार पुरोहित।
पता : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

5. संपादक का नाम : पंकज सुबीर।
पता : रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

4. उन व्यक्तियों के नाम / पते जो समाचार पत्र / पत्रिका के स्वामित्व में हैं। स्वामी का नाम : पंकज कुमार पुरोहित। पता : रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

मैं, पंकज कुमार पुरोहित, घोषणा करता हूँ कि यहाँ दिए गए तथ्य मेरी संपूर्ण जानकारी और विश्वास के मुताबिक सत्य हैं।

दिनांक 10 मार्च 2026
हस्ताक्षर पंकज कुमार पुरोहित
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

पुस्तक समीक्षा

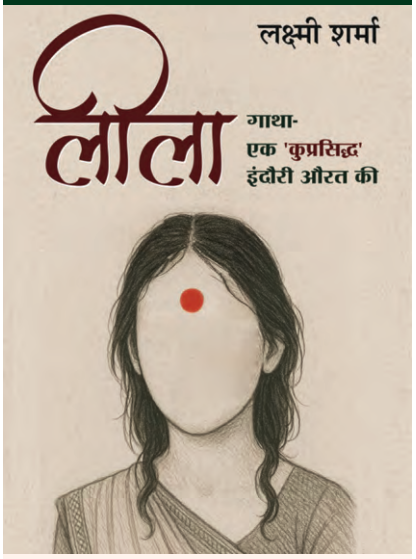

(उपन्यास)

लीला

समीक्षक : दीपक गिरकर

लेखक : लक्ष्मी शर्मा

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

दीपक गिरकर
28-सी, वैभव नगर, कनाडिया रोड,
इंदौर- 452016 मप्र
मोबाइल- 9425067036
ईमेल- deepakgirkar2016@gmail.com

कथाकार डॉ. लक्ष्मी शर्मा ने अपने कथा साहित्य में समाज और संस्कृति को विशेष स्थान प्रदान किया है। कथाकार ने न केवल समकालीन समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक ढांचे को छेड़ा है, बल्कि स्त्री स्वतंत्रता, संघर्ष, और शक्ति के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया है। कथाकार डॉ. लक्ष्मी शर्मा के उपन्यासों में, सांस्कृतिक अस्मिता, पारिवारिक मूल्य, और सामाजिक संरचनाओं का गहन अध्ययन किया गया है, जो पाठकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों और वर्तमान जीवन के बीच एक गहरे संवाद की ओर प्रेरित करता है।

डॉ. लक्ष्मी शर्मा का उपन्यास "लीला गाथा एक कुप्रसिद्ध इंदौरी औरत की" उनके रचनात्मक विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इससे पहले प्रकाशित उनके उपन्यास "सिधपुर की भगतणें" और "स्वर्ग का अंतिम उतार" ने उन्हें समकालीन हिन्दी कथाकारों की पंक्ति में एक विशिष्ट पहचान दिलाई थी। "लीला गाथा एक कुप्रसिद्ध इंदौरी औरत की" इन दोनों कृतियों से विषय और शिल्प, दोनों स्तरों पर संवाद करता हुआ आगे बढ़ता है, किंतु साथ ही यह स्पष्ट करता है कि लेखिका यहाँ किसी सुरक्षित या परीक्षित रास्ते पर चलने के बजाय एक अधिक जोखिमपूर्ण और आत्मसजग रचनात्मक भूमि को चुनती हैं।

उपन्यास की केन्द्रीय पात्र लीला एक ऐसी स्त्री है जो निरंतर संघर्ष और अभाव से गुज़रती है, परंतु लेखिका उसे करुणा की वस्तु में परिवर्तित नहीं होने देतीं। यहाँ स्त्री-विमर्श की पारंपरिक 'पीड़िता' छवि से सचेत दूरी दिखाई देती है। लीला का बिंदासपन उसके दु:खों का निषेध नहीं करता, बल्कि उन्हें झेलने की एक जीवन-दृष्टि के रूप में उभरता है। हालाँकि, कुछ स्थलों पर यह बिंदासपन इतना प्रमुख हो जाता है कि चरित्र की आंतरिक टूटन और मानसिक द्वंद्व अपेक्षाकृत कम उभर पाते हैं। इस कारण पाठक को लीला के भीतर चल रहे संघर्षों तक पहुँचने में कभी-कभी एक भावनात्मक दूरी महसूस होती है। "लीला गाथा-एक कुप्रसिद्ध इंदौरी औरत की" इंदौर की एक निम्न मध्यम वर्गीय बस्ती की सच्ची, संघर्षशील महिला की कथा है। लक्ष्मी शर्मा ने अपनी भावभीनी लेखनी से सन सत्तर के इंदौर की उस बस्ती और उसके निवासियों के जीवन, संघर्ष और संस्कृति को जीवंत किया है। कथा में लीला के कठिन वैवाहिक और सामाजिक अनुभवों के बावजूद उसका व्यक्तित्व और संघर्ष उसे और उज्ज्वल बनाते हैं। उपन्यास इंदौर को स्वयं एक पात्र बनाकर पाठक को उसी समय-काल में ले जाता है और पात्रों के सुख-दुख को महसूस करने का अवसर देता है। लीला का चरित्र इस सत्य को

गहराई से रेखांकित करता है कि साहस, विवेक और आत्मसम्मान किसी आर्थिक सक्षमता के अधीन नहीं होते। सीमित संसाधनों, अभावों और निरंतर संघर्ष के बीच जीवन जीते हुए भी व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकता है और स्वयं के लिए खड़े होने का साहस जुटा सकता है। लीला का संघर्ष यह सिद्ध करता है कि गुआडी जैसे हाशिये पर स्थित सामाजिक परिवेश में रहते हुए भी आत्मसम्मान को अक्षुण्ण रखा जा सकता है। गुआडी के जीवन का जो जीवंत, संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण किया है, वह न केवल उस समाज की वास्तविकताओं को सामने लाता है, बल्कि पाठक को उस जीवन-संघर्ष से भावनात्मक रूप से जोड़ भी देता है।

उपन्यास में जीवन की सच्चाइयों और आवश्यक जीवन-कौशलों को लेखिका ने समय-समय पर अत्यंत सहजता और स्वाभाविकता के साथ पिरोया है, जिससे कृति को एक गहरा दार्शनिक स्पर्श प्राप्त होता है। ये विचार न तो बोझिल उपदेश के रूप में आते हैं और न ही कथानक की गति को बाधित करते हैं, बल्कि कथा के साथ सहज रूप से प्रवाहित होते हुए पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं।

भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भों के निर्माण में लेखिका की दृष्टि अत्यंत सशक्त है। जूनी इंदौर, महू और आसपास के इलाकों का चित्रण केवल पृष्ठभूमि भर नहीं है, बल्कि वह कथा की संरचना में सक्रिय भूमिका निभाता है। मालवी और निमाड़ी शब्दों का प्रयोग वातावरण को प्रामाणिक बनाता है, परंतु जिन पाठकों का इन बोलियों से परिचय नहीं है, उनके लिए यह भाषा कहीं-कहीं अतिरिक्त प्रयास की माँग करती है। यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या लेखिका ने पाठक से अपेक्षित सहभागिता का स्तर जानबूझकर बढ़ाया है, या यह भाषा की स्वाभाविक परिणति है। यह द्वंद्व उपन्यास को आलोचनात्मक बहस के लिए खुला छोड़ देता है।

उपन्यास में इंदौर के तात्कालिक सार्वजनिक उत्सवों का विवेचन अत्यंत सजीव, सूक्ष्म और तथ्यात्मक गहनता के साथ किया गया है। कथाकार लक्ष्मी शर्मा ने न केवल उत्सवों के बाह्य स्वरूप, बल्कि उनसे जुड़ी सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक मनोवृत्तियों को भी प्रामाणिक ढंग से उद्घाटित किया है। इस कारण यह वर्णन अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ का विश्वसनीय दस्तावेज बन जाता है। परिणामस्वरूप, यह कृति भविष्य में इंदौर के नगर जीवन, लोक-संस्कृति एवं सार्वजनिक आयोजनों पर कार्य करने वाले शोधकर्ताओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ स्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

उपन्यास में लेखिका ने टर्की के जनजीवन, वहाँ की खान-पान परंपराओं तथा सांस्कृतिक परिवेश को शब्दों के माध्यम से अत्यंत जीवंत रूप में उकेरा है। यह चित्रण केवल सौंदर्यपरक न होकर व्यावहारिक यथार्थ से भी गहराई से जुड़ा हुआ है, जिससे पाठक उस भूगोल और समाज से सहज रूप में जुड़ जाता है। लेखिका की यह क्षमता कि वह विदेशी संस्कृति को भी स्वाभाविकता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं, उपन्यास को न केवल रोचक बनाती है, बल्कि उसे सांस्कृतिक समझ की दृष्टि से भी समृद्ध करती है।

भाषा इस उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति भी है और उसी के साथ उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी। लक्ष्मी शर्मा ने देशज, लोकप्रचलित और बोलचाल के शब्दों को जिस निर्भीकता से कथा में प्रवेश दिया है, वह प्रशंसनीय है। यह प्रयोग हिन्दी उपन्यास की उस परंपरा को आगे बढ़ाता है जो साहित्यिक 'शुद्धता' की संकीर्ण धारणा को अस्वीकार करती है। परंतु कुछ प्रसंगों में यह भाषिक प्रयोग स्वयं पर इतना केंद्रित प्रतीत होता है कि कथा-प्रवाह क्षणिक रूप से शिथिल पड़ जाता है। शब्दों से खेलना लेखिका की विशेषता है, किंतु कभी-कभी यह खेल कथ्य से अधिक ध्यान आकर्षित करने लगता है।

शिल्प की दृष्टि से लीला में एक प्रकार का ठहराव और गंभीरता दिखाई देती है, जो स्वर्ग का अंतिम उतार की तुलना में अधिक संयत है। यह परिपक्वता लेखिका के अनुभव का संकेत देती है, किंतु साथ ही कहीं-कहीं कथा की गति को धीमा भी कर देती है। कुछ प्रसंग विस्तार की माँग करते हैं, जबकि कुछ प्रसंग अपेक्षा से अधिक खिंच जाते हैं। यह असंतुलन उपन्यास की संरचनात्मक कसावट को प्रभावित करता है।

कुल मिलाकर लीला एक ऐसा उपन्यास है जो पाठक को सहज मनोरंजन नहीं, बल्कि सजग पाठ की माँग करता है। यह कृति लक्ष्मी शर्मा की रचनात्मक प्रतिबद्धता, भाषिक साहस और स्थानीय यथार्थ के प्रति उनकी निष्ठा को रेखांकित करती है, पर साथ ही यह भी स्पष्ट करती है कि यह लेखन अपने ही बनाए मानकों से संघर्ष कर रहा है। लीला एक महत्त्वपूर्ण, बहस योग्य और विचारोत्तेजक उपन्यास है, जो समकालीन हिन्दी साहित्य में लेखिका की स्थिति को सुदृढ़ तो करता है, पर उन्हें आलोचनात्मक निगाह से देखने का आमंत्रण भी देता है।

लक्ष्मी शर्मा की कथाओं के पात्र विचित्र मानसिक संघर्षों से जूझते हैं, जो अत्यंत वास्तविक और स्वाभाविक प्रतीत होते हैं। इन संघर्षों की तीव्रता पाठकों को अपनी भावनात्मक लहर में ऐसा बहा ले जाती है कि कहानी के अंत तक वे उससे मुक्त नहीं हो पाते। प्रत्येक कथा इस तथ्य की साक्षी है कि लक्ष्मी शर्मा अपनी कथाओं के रचाव को लगातार माँजती रहती हैं। उनका यह निरंतर प्रयास ही उनकी रचनाओं को एक विशिष्ट पूर्णता प्रदान करता है। इन कथाओं की प्रभावशीलता उनकी गहरी रचनात्मक दृष्टि का प्रतिफल है। लक्ष्मी शर्मा के पात्र अपने जीवन की जटिल परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि लेखिका उनसे केवल मानसिक नहीं, बल्कि गहरी रागात्मकता के साथ जुड़ती हैं। यही आत्मीय जुड़ाव उनके साहित्य को जीवंत और आत्मस्पर्शी बनाता है। लक्ष्मी शर्मा एक सशक्त और रोचक उपन्यास रचने के लिए बधाई की पात्र हैं।

000

पुस्तक समीक्षा

(उपन्यास)

सुर

समीक्षक : आशा दुबे

लेखक : नीलिमा शर्मा

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

आशा दुबे
रिटायर्ड हिन्दी अध्यापक
लाफार्ज, गोपालनगर, अकलतरा
बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 495663

"सुर...एक अनचाही लड़की का सफ़र " जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है यह किसी स्त्री केंद्रित विषय पर लिखा उपन्यास हैं। उपन्यास का आरंभ जिस वाक्य से होता है....

"ख़ुशियों के लिए हम तारीख़ें तय करके निमंत्रण कार्ड छापते हैं, पीड़ा बिना किसी तय तारीख़ के अकस्मात जीवन में आ जाती है।" वही इस कृति की मूल संवेदना को उद्घाटित कर देता है। यहाँ 'सुर' केवल एक लड़की की कथा नहीं, बल्कि उन असंख्य अनुभवों का संचित दस्तावेज़ है, जिन्हें स्त्रियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी जीती और चुपचाप ढोती आई हैं।

'सुर' उपन्यास की एक बड़ी रचनात्मक उपलब्धि उसका फ्लैशबैक का संयमित और सौंदर्यपूर्ण प्रयोग है। सुर स्वयं इस उपन्यास की सूत्रधार है। लेखिका ने अतीत और वर्तमान के बीच ऐसी स्वाभाविक आवाजाही रची है कि कहीं भी कथा का प्रवाह बाधित नहीं होता, बल्कि हर बार अतीत का कोई टुकड़ा वर्तमान को और अधिक अर्थपूर्ण बना देता है। यह फ्लैशबैक केवल स्मरण नहीं, बल्कि चरित्रों की मानसिक और भावनात्मक परतों को खोलने का सशक्त उपकरण बनकर सामने आता है। उपन्यास में जब-जब कथानक वर्तमान से अतीत की ओर लौटता है, वह किसी कृत्रिम तकनीक का परिणाम नहीं लगता, बल्कि पात्रों की अनुभूतियों के साथ सहज रूप से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। जैसे ही कोई प्रसंग, कोई शब्द, कोई दृश्य पात्र के भीतर किसी पुरानी स्मृति को जगाता है, कथा स्वत: ही उस समयखंड में प्रवेश कर जाती है। इस प्रक्रिया में कहीं भी "जोड़" दिखाई नहीं देता, सब कुछ एक सतत प्रवाह की तरह घटित होता है। यही कारण है कि पाठक समय-परिवर्तन को अलग से महसूस नहीं करता, बल्कि उसे जीता है।

फ्लैशबैक के माध्यम से लेखिका ने विशेष रूप से नायिका 'सुर' के मनोविज्ञान को गहराई से उकेरा है। उसके बचपन, उसके अनुभवों, उसके भीतर पनपी आशंकाओं और आकांक्षाओं को समझने में ये स्मृति-दृश्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान में उसका व्यवहार, उसकी चुप्पियाँ या उसके निर्णय किन बीते हुए क्षणों की देन हैं। इस प्रकार फ्लैशबैक यहाँ केवल कथानक की जानकारी देने का साधन नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण की आत्मा बन जाता है।

उपन्यास की एक और उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें पात्रों की अनावश्यक भीड़ नहीं है। जितने भी पात्र हैं, वे सभी कथा के ताने-बाने में आवश्यक और अर्थपूर्ण हैं। लेखिका ने किसी भी पात्र को केवल सजावट के लिए नहीं रखा; हर चरित्र का एक उद्देश्य है, एक भूमिका है, और एक स्मृति है जो पाठक के मन में अंकित हो जाती है। यही कारण है कि उपन्यास समाप्त होने के बाद भी पात्र धुँधले नहीं पड़ते, बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान के साथ स्मृति में बने रहते हैं।

कहानी की सबसे बड़ी ताक़त उसका प्रवाह है। इतने संवेदनशील और बहुपरत विषयों के बावजूद कथा कहीं भटकती नहीं, न ही अनावश्यक विस्तार में उलझती है। हर प्रसंग, हर फ्लैशबैक, हर संवाद एक केंद्रीय धुरी से जुड़ा हुआ है और वह धुरी है 'सुर' का जीवन और उसकी आंतरिक यात्रा। लेखिका ने इस धुरी को कभी ढीला नहीं पड़ने दिया, जिससे कथा में एकाग्रता बनी रहती है। फ्लैशबैक का प्रयोग यहाँ किसी रहस्य या रोमांच पैदा करने के लिए नहीं, बल्कि संवेदनात्मक गहराई रचने के लिए किया गया है। अतीत के दृश्य वर्तमान के दर्द, द्वंद्व और निर्णयों को प्रकाशमान करते हैं। कई बार पाठक को ऐसा लगता है कि जो अभी घट रहा है, उसकी जड़ें बहुत पहले रोपी जा चुकी थीं और यही बोध कथा को एक गहनता प्रदान करता है।

भाषा की सादगी और प्रवाह भी इस संरचना को सशक्त बनाते हैं। फ्लैशबैक के हिस्से कहीं भी बोझिल या जटिल नहीं लगते, बल्कि उतने ही सहज हैं जितना वर्तमान का वर्णन। यह संतुलन साधना सरल नहीं होता, पर लेखिका ने इसे अत्यंत कुशलता से निभाया है। फ्लैशबैक केवल एक तकनीकी कौशल नहीं, बल्कि एक कलात्मक संवेदना है। यह उपन्यास इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण बनता है कि किस प्रकार स्मृतियों के सहारे एक कथा को गहराई, निरंतरता और भावात्मक ऊँचाई प्रदान की जा सकती है, बिना पात्रों की भीड़ बढ़ाए, बिना कथानक को भटकाए, और बिना पाठक की पकड़ ढीली किए।यही कारण है कि 'सुर' पढ़ते हुए पाठक केवल एक कहानी नहीं पढ़ता, बल्कि समय के विभिन्न आयामों में एक साथ यात्रा करता है, जहाँ हर स्मृति, हर पात्र और हर क्षण एक स्थायी छाप छोड़ जाता है।

गर्भावस्था केवल शारीरिक परिवर्तन की अवस्था नहीं, बल्कि एक अत्यंत सूक्ष्म मानसिक और भावात्मक प्रक्रिया भी है। इस अवधि में माँ के अंतर्मन में जो संवेदनाएँ, आशंकाएँ, सुख-दु:ख और विचार प्रवाहित होते हैं, वे केवल उसी तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अचेतन स्तर पर गर्भस्थ शिशु के मानस में भी कहीं न कहीं अंकित हो जाते हैं। यही कारण है कि जीवन के किसी मोड़ पर वे अनकहे अनुभव, स्मृतियों की धुँधली परछाइयों की तरह उभरते प्रतीत होते हैं, मानो कोई बीता हुआ स्पर्श भीतर अब भी जीवित हो। प्राचीन परंपराओं में गर्भवती स्त्री की देखभाल को अत्यंत महत्त्व दिया जाता था। उसके आहार, व्यवहार, परिवेश और विशेषत: उसके मानसिक स्वास्थ्य का गहन ध्यान रखा जाता था, क्योंकि यह विश्वास था कि माँ की चेतना ही शिशु के व्यक्तित्व की प्रथम भूमि तैयार करती है। 'सुर' जैसे उपन्यास को पढ़ते हुए यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि गर्भकालीन अनुभव केवल जैविक नहीं, बल्कि गहन मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी रखते हैं।

इस प्रकार, यह कृति अपने कथ्य के माध्यम से एक अनकहा किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण संदेश देती है कि गर्भावस्था को केवल शारीरिक सुरक्षा तक सीमित न रखकर, उसे मानसिक शांति, संतुलन और सकारात्मकता से भी संपन्न किया जाना चाहिए। क्योंकि वही शांति, वही भावभूमि, आने वाले जीवन की आधारशिला बनती है।

यह उपन्यास स्त्री जीवन के उन अनकहे, असहज और अक्सर दबा दिए जाने वाले पक्षों को भी बेहद संयम और सच्चाई के साथ सामने लाता है, जिन पर समाज खुलकर बात करने से कतराता है। रिश्तों की आड़ में छिपी असुरक्षाएँ, असमानताएँ और मानसिक आघात.. ये सब कथा में बिना किसी शोर के, लेकिन पूरी तीव्रता के साथ उपस्थित हैं। सबसे पहले, लेखिका उस कठोर यथार्थ को छूती हैं, जिसे अक्सर परिवार की "इज़्ज़त" या "चुप्पी" के नाम पर ढक दिया जाता है। रिश्तेदार लड़कों द्वारा लड़कियों के साथ होने वाला छेड़छाड़ या दैहिक असहजता का अनुभव। उपन्यास इस विषय को सनसनीखेज़ बनाए बिना, बेहद संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है। यह दिखाता है कि कैसे एक किशोरी इन अनुभवों को समझ भी नहीं पाती, लेकिन भीतर कहीं एक असुरक्षा स्थायी रूप से बस जाती है। परिवार, जो सुरक्षा का स्थान होना चाहिए, वही कई बार मौन रहकर इस पीड़ा को और गहरा कर देता है। यह मौन ही सबसे बड़ी त्रासदी बनकर उभरता है।

लड़का–लड़की के बीच सुविधाओं और अवसरों का असंतुलन भी उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। बेटों को सहज रूप से मिलने वाली स्वतंत्रता, शिक्षा, निर्णय लेने की छूट और वहीं बेटियों पर लगे अदृश्य बंधन ये अंतर बहुत सूक्ष्मता से उकेरे गए हैं। कहीं यह खुलकर नहीं कहा गया, पर हर प्रसंग में यह महसूस होता है कि परिवार के भीतर ही समानता का भाव पूर्ण रूप से उपस्थित नहीं है।

उपन्यास में घर के भीतर की स्त्रियों का अकेलापन भी एक गहरी पीड़ा के रूप में सामने आता है। घर में रह रही बुआ, बहन या निसंतान स्त्री जो परिवार का हिस्सा होते हुए भी कहीं न कहीं उपेक्षित-सी रहती है। उनका जीवन मानो घर की चारदीवारी में सिमटकर रह जाता है, जहाँ उनकी भावनाओं, इच्छाओं और अस्तित्व को वह स्थान नहीं मिलता, जिसका वे हक़ रखती हैं। यह अकेलापन केवल भौतिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और मानसिक स्तर पर भी गहरा है।

विवाह के बाद स्त्री के जीवन में आने वाला परिवर्तन भी इस उपन्यास का महत्त्वपूर्ण आयाम है। मायके से धीरे-धीरे बनती दूरी, जो कभी परिस्थितियों से, कभी उपेक्षाओं, अपेक्षाओं से, तो कभी स्वयं स्त्री के भीतर उपजी संकोच/नैराश्य से निर्मित होती है। इसे

लेखिका ने अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। वह घर, जहाँ से एक लड़की ने जीवन की शुरुआत की, वही घर समय के साथ उसके लिए "पराया" होने लगता है। यह दूरी केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि भावनात्मक भी होती है। इसी क्रम में, एक और जटिल सत्य सामने आता है समय के साथ वही स्त्री, जो कभी बंधनों में थी, स्वयं उन बंधनों को संक्रमण की तरह फैलाने वाली बन जाती है। एक उम्र के बाद ससुराल में स्त्रियों का प्रभाव, उनका नियंत्रण, और कभी-कभी उनकी कठोरता यह भी उपन्यास में बिना किसी आरोप के, एक स्वाभाविक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह दर्शाता है कि कैसे पीढ़ियों से चली आ रही संरचनाएँ व्यक्ति के भीतर समा जाती हैं और वह अनजाने में उसी व्यवस्था को आगे बढ़ाने लगता है। आपसी ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा भी स्त्री जीवन की एक सच्चाई के रूप में सामने आती है। यह ईर्ष्या केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि उस सामाजिक ढाँचे की देन है, जहाँ संसाधन सीमित हैं और स्वीकार्यता के लिए संघर्ष निरंतर है। लेखिका इसे किसी नकारात्मकता के रूप में नहीं, बल्कि परिस्थितियों की उपज के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

पुरुष पात्रों की बात करें तो उपन्यास की एक बड़ी विशेषता यह है कि उन्हें एकरेखीय खलनायक नहीं बनाया गया।

बल्कि वे अक्सर "ख़ामोश चरित्र" के रूप में सामने आते हैं। घर के भीतर उपस्थित होते हुए भी कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर मौन, तटस्थ या असमर्थ। उनका यह मौन कई बार स्त्रियों के संघर्ष को और जटिल बना देता है। वे ग़लत नहीं, पर पूरी तरह सही भी नहीं, वे उस सामाजिक ढाँचे के प्रतिनिधि हैं, जहाँ संवेदनाएँ हैं, पर अभिव्यक्ति नहीं। लेखिका की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने इन सभी जटिल और संवेदनशील विषयों को बिना किसी आक्रोश या उपदेश के प्रस्तुत किया है। उनका स्वर शांत है, पर प्रभाव गहरा। वे पाठक को झकझोरती नहीं, बल्कि उसे सोचने के लिए बाध्य करती हैं। भाषा यहाँ भी अपनी सहजता में प्रभावी है। कोई अलंकारिक बोझ नहीं, कोई पांडित्य प्रदर्शन नहीं, बस वही भाषा, जो जीवन से निकलती है और सीधे हृदय तक पहुँचती है। यही कारण है कि हर पात्र, हर स्थिति विश्वसनीय लगती है। 'सुर' का मूल स्वर स्त्री सशक्तिकरण है, पर यह सशक्तिकरण किसी नारे या विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि एक भीतरी जागृति के रूप में उभरता है। यह उपन्यास बताता है कि परिवर्तन धीरे-धीरे आता है, सोच में, व्यवहार में, और संबंधों में।

उपन्यास में पंजाबियत बहुत ख़ूबसूरती से उभर कर आती हैं। पंजाबी परिवारों के भीतर का माहौल, राजनीति, संवेदना, आक्रोश, मजबूरियाँ सब सहजता से आती हैं। ऐसा प्रतीत होता जैसे मोहल्ले के किसी पंजाबी परिवार को सामने से देख सुन महसूस कर रहे हैं।

प्रेम भी इस उपन्यास में बहुत धीरे से आता हैं लेकिन यह प्रेम मर्यादित है। कहीं भी इस प्रेम में ऐसा कुछ नहीं कहा सुना जाता जिसे सुर जैसे संस्कारित लड़की का चरित्र कमज़ोर दिखता। पारिवारिक संवाद कहीं कहीं रुखे, चुभते हुए लगते हैं लेकिन शायद रोष में पंजाबी परिवारों में इसी तरह उच्च स्वर में वार्तालाप होता होगा और इसी तरह की शब्दावली का प्रयोग होता होगा। ऐसा लगता था कि कहीं न कहीं पंजाबी परिवारों में बोली जाने वाली गालियों का समावेश संवादों में होगा लेकिन लेखिका ने भाषा को रुखा लेकिन मर्यादित बनाए रखा।

उपन्यास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और चौंकाने वाला पक्ष यह भी है कि ट्रांसजेंडर मुद्दों को इतनी ख़ूबसूरती और संवेदनशीलता से उठाया गया है कि पाठक भी एक पल को ठिठक जाता है, ऐसा अप्रत्याशित मोड़ शायद उसने सोचा भी न था। लेखिका ने इसे न तो सनसनी बनाया है, न हाशिए पर रखा है, बल्कि कथा के भीतर एक मानवीय सत्य की तरह पिरोया है।

अंत को खोलना यहाँ उचित नहीं, किंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उसका संकेत आज के समाज द्वारा स्वीकार किया जाना ही समय की माँग है। उपन्यास समाप्त करने के बाद पाठक कुछ क्षण के बाद मौन बैठा रह जाता हैं और आगे क्या हुआ होगा का कयास लगाने लगता हैं। ऐसा लगने लगता है जैसे इस उपन्यास का भाग दो भी आएगा और उसे भी तुरंत जानना हैं कि अब सुर कैसी माँ बनेगी, अपने बच्चों का पालन पोषण परवरिश कैसे करेगी।

'सुर' एक ऐसी कृति है जो हमें हमारे ही समाज का आईना दिखाती है, उसकी ख़ूबसूरती भी, और उसकी दरारें भी। यह उपन्यास पढ़कर केवल कहानी समाप्त नहीं होती, बल्कि एक प्रक्रिया शुरू होती है अपने आसपास, अपने संबंधों और अपनी सोच को नए दृष्टिकोण से देखने की।

नीलिमा शर्मा की यह रचना इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि यह हमें यह स्वीकार करने का साहस देती है कि जो अनकहा है, वही सबसे अधिक सत्य है। अचेतन मन का स्वास्थ्य भी उतना ही ज़रूरी हैं जितना शरीर का। शिवना प्रकाशन से आया यह उपन्यास पुराने आम के अचार का स्वाद देता है। इसे पढ़ा/ पढ़ाया जाना चाहिए।

000

लेखकों से अनुरोध

सभी सम्माननीय लेखकों से संपादक मंडल का विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु केवल अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। वह रचनाएँ जो सोशल मीडिया के किसी मंच जैसे फ़ेसबुक, व्हाट्सएप आदि पर प्रकाशित हो चुकी हैं, उन्हें पत्रिका में प्रकाशन हेतु नहीं भेजें। इस प्रकार की रचनाओं को हम प्रकाशित नहीं करेंगे। साथ ही यह भी देखा गया है कि कुछ रचनाकार अपनी पूर्व में अन्य किसी पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ भी विभोम-स्वर में प्रकाशन के लिए भेज रहे हैं, इस प्रकार की रचनाएँ न भेजें। अपनी मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ ही पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजें। आपका सहयोग हमें पत्रिका को और बेहतर बनाने में मदद करेगा, धन्यवाद।

-सादर संपादक मंडल

पुस्तक समीक्षा

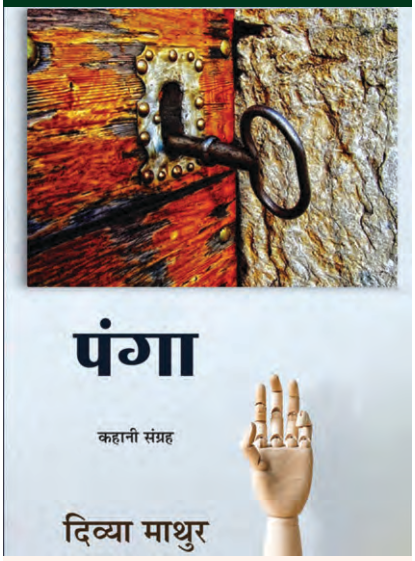

(कहानी संग्रह)

पंगा

समीक्षक : दीपक गिरकर
लेखक : दिव्या माथुर
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545
मोबाइल- +91-9806162184
ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

दीपक गिरकर
28-सी, वैभव नगर, कनाडिया रोड,
इंदौर- 452016 मप्र
मोबाइल- 9425067036
ईमेल- deepakgirkar2016@gmail.com

दिव्या माथुर के लेखन का सफ़र बहुत लंबा है। इनकी रचनाएँ निरंतर देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आपका नया कहानी संग्रह "पंगा" इस वर्ष शिवना प्रकाशन से प्रकाशित होकर आया है। इस संग्रह में छोटी-बड़ी 13 कहानियाँ हैं।

दिव्या माथुर की कहानियाँ स्त्री जीवन के संघर्ष, पीड़ा का सूक्ष्म और मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनके लेखन में यह स्पष्ट रूप से उभरकर आता है कि चाहे भारत हो या विदेश, स्त्रियाँ समाज और परिस्थितियों के भयंकर चक्रव्यूह में फँसी रहती हैं और उन्हें मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक शोषण का सामना करना पड़ता है। दिव्या माथुर अपने पात्रों के माध्यम से यह उद्घाटित करती हैं कि सफलता और स्वतंत्रता की आकांक्षा रखने वाली स्त्रियाँ भी हर कदम पर सामाजिक और निजी जटिलताओं में उलझ जाती हैं। विदेश की चमक-धमक में ढँकी कथाएँ नहीं, बल्कि उन्होंने ब्रिटेन का वास्तविक, धूसर और संघर्षपूर्ण चेहरा पाठक के समक्ष रखा है। उनके पात्रों की स्थिति अक्सर "आकाश से गिरा, खजूर पर अटका" जैसी प्रतीत होती है, न पूरी तरह स्वतंत्र, न पूरी तरह सुरक्षित। दिव्या माथुर की कहानियाँ स्त्री विमर्श में गहन संवेदना और गंभीरता का परिचायक हैं। ये कथाएँ यह संदेश देती हैं कि स्त्री जीवन में हर स्थान और परिप्रेक्ष्य में असमानता और पीड़ा के रंग विद्यमान हैं, और उनका सामना करने की चुनौती अटल है।

"अभिनय" कहानी आधुनिक दाम्पत्य संबंधों की जटिलता, अंतर्विरोध और आंतरिक विडंबना का अत्यंत सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है। इसमें पति-पत्नी के बीच विद्यमान बाह्य सामंजस्य वस्तुत: एक आवरण मात्र सिद्ध होता है, जिसके भीतर असंतोष, भावनात्मक दूरी और रिक्तता का गहन संसार छिपा रहता है। कहानी यह प्रतिपादित करती है कि सुखी दाम्पत्य जीवन एक मृग-मरीचिका के समान है, जिसकी प्राप्ति की आकांक्षा में मनुष्य अपना समस्त जीवन व्यतीत कर देता है, किंतु अंतत: उसके हाथ निराशा ही लगती है। इस प्रकार, यह कथा आधुनिक जीवन की कृत्रिमता, संबंधों में क्षीण होती आत्मीयता तथा मानवीय अपेक्षाओं की अपूर्णता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उद्घाटित करती है। कहानी "अंतिम तीन दिन" माया नामक स्त्री के आत्म-साक्षात्कार, अदम्य साहस और जीवन के प्रति नवोन्मेषी दृष्टिकोण की मार्मिक अभिव्यक्ति है। मृत्यु के सन्निकट होने के सजीव स्वप्न से उद्विग्न होने के स्थान पर माया उसे आत्म-जागरण का माध्यम बना लेती है। भय से अभिभूत होने के बजाय वह अपने शेष समय को सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने का संकल्प धारण करती है। इसी क्रम में वह नारायण नामक व्यक्ति की सहायता हेतु एक साहसिक निर्णय लेती है, जो न केवल उसके जीवन को नई दिशा प्रदान करता है, अपितु उसके अस्तित्व को गहन अर्थवत्ता से भी आलोकित करता है। यह कथा मृत्यु-भय के अंधकार को दूर कर जीवन के अंतिम क्षणों के सदुपयोग का प्रेरक संदेश देती है तथा परोपकार और सेवा की उदात्त भावना को उजागर करती है। साथ ही, यह भी प्रतिपादित करती है कि कभी-कभी एक भयावह स्वप्न भी मनुष्य के भीतर सुप्त पड़ी जीवन-दृष्टि को जाग्रत कर उसे सकारात्मक और उद्देश्यपूर्ण जीवन-पथ की ओर अग्रसर कर सकता है। कहानी "बचाव" में इंग्लैंड प्रवासी भारतीय स्त्री निंदिया के माध्यम से स्त्री-सम्मान, आत्मरक्षा और सांस्कृतिक अस्मिता का सशक्त चित्रण किया गया है। विपरीत परिस्थितियों में भी निंदिया साहस और तत्परता का परिचय देती है; जब उसका बॉस उसकी अस्मिता पर आघात करने का प्रयास करता है, तब वह निर्भीक होकर खौलता पानी डालकर स्वयं को बचाती हुई वहाँ से निकल जाती है। यह घटना केवल शारीरिक रक्षा का प्रसंग नहीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान और आंतरिक शक्ति का उद्घोष बन जाती है। कहानी यह भी संकेत करती है कि यद्यपि इंग्लैंड में बसे भारतीय समाज में समय के साथ अनेक परिवर्तन आए हैं, तथापि निंदिया जैसी स्त्रियों के भीतर भारतीय संस्कारों की उज्ज्वल चेतना अभी भी विद्यमान है। वह अपने स्त्रीत्व की गरिमा की रक्षा करना जानती है और किसी भी प्रकार के अन्याय के समक्ष झुकने के बजाय उसका प्रतिकार करती है। स्पष्ट है कि लेखिका की सहानुभूति निंदिया के साथ

है; वह उसके साहस, आत्मगौरव और संघर्षशीलता को सम्मानित करते हुए स्त्री-सशक्तिकरण का प्रभावशाली संदेश प्रस्तुत करती है। यह संवेदना और शिल्प के संतुलित प्रयोग से लिखी गई एक यथार्थवादी कहानी है।

"कथा सत्यनारायण की" और "एक था मुर्गा" कहानियों में पारम्परिक कथा-शैली और समानांतर कथा-विन्यास का अत्यंत सफल एवं सृजनात्मक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। "कथा सत्यनारायण की" में सत्यनारायण कथा के वाचन को सूत्र रूप में ग्रहण कर कथाकार दिव्या माथुर ने सुशीला, रूपा और निधि के जीवन की घटनाओं को बड़ी कुशलता से पिरोया है। इस संरचना के माध्यम से एक ओर पारंपरिक धार्मिक आख्यान की परिचित धारा प्रवाहित होती है, तो दूसरी ओर समकालीन जीवन की वास्तविकताओं, स्त्री-अनुभवों और सामाजिक विडंबनाओं को समानांतर रूप से उभारा गया है। दोनों कथाएँ परस्पर जुड़कर न केवल कथानक को गहराई प्रदान करती हैं, बल्कि पाठक को विचारोत्तेजक अनुभव भी देती हैं।

"खल्लास" कहानी अपराध, हिंसा और व्यक्तिगत संघर्ष की दुनिया को बेहद कड़वी सच्चाई के साथ पेश करती है। कहानी का केंद्र हेनरी और उसके परिवार के जीवन पर है, जो गुंडों और ख़तरों से भरे हारल्सडन शहर में रहता है। कहानी में परिवार, प्यार और विश्वास के रिश्ते हिंसा और धोखे की मार झेलते हैं। कहानी की सबसे बड़ी ताक़त इसकी यथार्थपरक हिंसा और चरित्र चित्रण है। हेनरी की मौत, रोज़ी की बहादुरी, नीरा की असुरक्षा और पीटर की कमज़ोरी सभी पात्रों के भावनात्मक और मानसिक संघर्ष को उजागर करते हैं। "खल्लास" शब्द कहानी का प्रतीक बन जाता है, जो अंतत: सभी के जीवन को समाप्त करने वाले अपराध और हिंसा की अटल वास्तविकता को दर्शाता है। कहानी "निशान" घरेलू हिंसा और उसके भावनात्मक प्रभावों को उजागर करती है। मुख्य पात्र रानी अपने पति बलबीर के क्रोध और शराब के नशे में होने के कारण होने वाले अत्याचार झेलती है। बलबीर की हिंसा के निशान रानी के चेहरे पर स्थायी रूप से रह जाते हैं, जिन्हें वह छिपाने की कोशिश करती है। कहानी में यह दिखाया गया है कि शारीरिक और मानसिक हिंसा के निशान सिर्फ शरीर पर नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और मनोबल पर भी गहरे पड़ते हैं। रानी का अपने चेहरे के निशान छिपाने का प्रयास उसकी असुरक्षा और समाज में अपने स्थान को बचाने की लड़ाई को दर्शाता है।

संग्रह की शीर्षक कहानी "पंगा" ब्रिटेन के जीवन पर आधारित कहानी है। कहानी पन्ना के व्यक्तित्व और दैनिक जीवन पर केंद्रित है। कहानीकार ने उसे एक आत्मनिर्भर, तेज़-तर्रार और कभी-कभी झल्लाती हुई महिला के रूप में चित्रित किया है, जो कार में अपनी स्वतंत्रता और सुरक्षा महसूस करती है। कहानी में सड़क, ट्रैफिक, पेड़-पत्ते, बाज़ार और शहर की विविध परिस्थितियाँ जीवंत तरीक़े से प्रस्तुत की गई हैं, जिससे पाठक पन्ना की यात्रा और उसके मनोभावों को आसानी से महसूस कर सकता है। कहानी का आकर्षण पन्ना के मन के विचारों और संवादों में है। उसकी झुँझलाहट, पर्यावरण और तकनीक पर टिप्पणियाँ और परिवार के साथ उसकी बातचीत कहानी को जीवंत बनाती हैं। लेखक ने वास्तविक जीवन की छोटी-छोटी परेशानियों, जैसे ट्रैफिक, लाल बत्तियाँ, पार्किंग की चिंता, और बाज़ार की हलचल, को बहुत सूक्ष्मता से दिखाया है।

"उत्तरजीविता" कहानी एक साधारण-सी घटना - आँगन में पड़ी मरी हुई चुहिया के माध्यम से मानव-मन की जटिलताओं का सूक्ष्म और व्यंग्यात्मक चित्रण करती है। नायिका की घृणा, भय और असहायता के साथ-साथ उसका आत्ममुग्ध भाव उजागर होता है, जब वह चुहिया के लिए प्रार्थना कर स्वयं को संवेदनशील मानती है, किंतु उसे हटाने का साहस नहीं जुटा पाती। कहानी में बचपन की स्मृतियाँ, चूहों के प्रति जड़ित भय, तथा सामाजिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों का प्रभाव प्रभावशाली ढंग से उभरता है। प्रवासी जीवन, जातीय भेदभाव और मानवीय संबंधों की विडंबनाओं पर भी तीखा व्यंग्य किया गया है। "योग्यतम की उत्तरजीविता" जैसे विचार के माध्यम से कथा दार्शनिक गहराई प्राप्त करती है। अंत में, समस्या के स्वत: समाधान के बाद नायिका का अंधविश्वासपूर्ण निष्कर्ष मानव की तर्कहीन प्रवृत्ति को उजागर करता है। इस प्रकार, यह कहानी साधारण प्रसंग के माध्यम से मानव स्वभाव की कमजोरियों, भय, पूर्वाग्रह और आत्मवंचना पर सार्थक टिप्पणी करती है।

दिव्या माथुर में जीवन को नई दृष्टि से चित्रित करने का अद्वितीय कौशल है। उनकी कहानियाँ न केवल कथा-संरचना में मौलिकता प्रस्तुत करती हैं, बल्कि पाठक को जीवन के गहन और सूक्ष्म अनुभवों से भी अवगत कराती हैं। माथुर की लेखनी में फैंटेसी का सौंदर्य और यथार्थ जीवन की मार्मिकता एक साथ मौजूद है। उनके पात्र केवल दृश्य या घटनाओं के प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक संघर्षों का जीवंत चित्रण करते हैं। विशेषत:, दिव्या माथुर उन अनछुए प्रसंगों और अलिखित जीवन-छवियों की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं, जिन्हें सामान्य दृष्टि से अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। वे इन क्षणों और अनुभवों को इतनी सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं कि पाठक स्वयं उन परिस्थितियों का अनुभव करने लगता है। इसके साथ ही, उनका भाषा प्रयोग सहज और प्रेषणीय है, जो जटिल भावनाओं और विचारों को सरलता और प्रभावी ढंग से पाठक तक पहुँचाने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार, दिव्या माथुर की कहानियाँ केवल साहित्यिक सौंदर्य की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक यथार्थ की दृष्टि से भी समृद्ध हैं। वे पाठक को यह एहसास कराती हैं कि साहित्य केवल कल्पना का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन के सूक्ष्म और गहन पहलुओं का दर्पण भी है। आशा है कि कथाकार दिव्या माथुर के इस नवीन कहानी संग्रह "पंगा" का हिन्दी साहित्य जगत् में भरपूर स्वागत होगा।

000

पुस्तक समीक्षा

अपने समय के साक्षी

(साक्षात्कार संग्रह)

अपने समय के साक्षी

समीक्षक : नीरज दइया

लेखक : नंद भारद्वाज

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

डॉ. नीरज दइया
सी-107, वल्लभ गार्डन,
पवनपुरी, बीकानेर (राजस्थान)
पिन- 334003
मोबाइल- 9461375668

साहित्य केवल रचनाओं में नहीं, बल्कि उन रचनाकारों के विचारों, चिंतनानुभवों और आत्मस्वरों में भी बसता है जो अपने समय को समेकित रूप से शब्द देते रहता है। जब ये स्वर एक साक्षात्कार के रूप में सामने आते हैं तो वे किसी निजी वक्तव्य से आगे बढ़कर अपने युग की चेतना का दस्तावेज़ बन जाते हैं। साहित्य में साक्षात्कार विधा केवल संवाद या प्रश्नोत्तर नहीं, बल्कि रचनात्मक व्यक्तित्व और उसके चिंतन की एक जीवित अभिव्यक्ति है। यह विधा लेखक को अपने शब्दों, अनुभवों और दृष्टिकोणों के माध्यम से पाठक के निकट लाती है वहीं साक्षात्कार कर्ता के बहुपठित और साहित्य के गंभीर अधेयता होने का साक्ष्य भी देते हैं। शिवना प्रकशन, सीहोर से प्रकाशित साक्षात्कार-संग्रह 'अपने समय के साक्षी' इसी दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक नंद भारद्वाज द्वारा लिए गए बीस साक्षात्कारों का संकलन है, जिसमें हिन्दी और राजस्थानी साहित्य के प्रतिनिधि कवि, कथाकार, आलोचक, नाटककार और संस्कृति-कर्मी शामिल हैं। इस संग्रह में नंद भारद्वाज की संवेदनशीलता, अध्ययनशीलता और संवाद की परिपक्वता जिस रूप में प्रकट होती है, वह इसे सामान्य साक्षात्कारों के दायरे से ऊपर उठाकर साहित्यिक विमर्श की भूमि पर ले आती है। यह कृति हमारे सृजनशील समय का एक जीवंत अभिलेख है जिसमें विभिन्न विधाओं से जुड़े कलमकारों ने अपने आधुनिक स्वर और चिंतन को आकार दिया। किसी कृति में यह विभेद नहीं किया जाना चाहिए कि इसे लिया उसे नहीं अथवा इसमें केवल दो महिलाएँ शेष पुरुष है। हमें देखना यह है कि यह कृति क्या संभव कर सकी है।

इस पुस्तक के कुछ साक्षात्कार मूलत: उन वर्षों की परिणति है जब नंद भारद्वाज

आकाशवाणी, दूरदर्शन, जेएलएफ अथवा अन्य किसी माध्यम से जुड़े रहे। उस अवधि में उन्होंने अनेक साहित्यकारों से वार्ताएँ और साक्षात्कार किए, जिनमें वे स्वरयं साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैचारिक दृष्टि से गहराई से जुड़े थे। 'अपने समय के साक्षी' में वे साक्षात्कार केवल संग्रहित नहीं हैं, बल्कि उन्हें एक आलोचनात्मक संदर्भ में संयोजित किया गया है। प्रत्येक साक्षात्कार से पहले लेखक का परिचय, जीवनवृत्त और उनके साहित्यिक योगदान पर टिप्पणी दी गई है। यह परिचयात्मक लेखन पुस्तक की एक विशेषता है, क्योंकि इससे पाठक को उस लेखक की पृष्ठभूमि समझने का अवसर मिलता है। कहने का अभिप्राय है कि यह केवल कहने को साक्षात्कार भर है किंतु इनके पीछे एक विशद दृष्टिकोण रहा है कि अपने समकालीन तथा पूर्ववर्ती समय को देखते हुए भविष्य के बारे में विचार विमर्श किया जाए। यह बहुत ज़रूरी इसलिए भी है कि भविष्य में बहुत सारी ऐसी बातें संवाद समय के गर्भ में चली जाएँगी। नई पीढ़ी इस कृति द्वारा अनेक महान् हस्तियों की जानकारी का लाभ उठाते हुए उन्हें जानने को उत्सुक होंगी। उदाहरण के लिए इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मैं यह जान सका कि हमारे समय में काज़ी अब्दुलसत्तार जी का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक अंश देखें - "जो यह कहते हैं कि 'शब ग़जीदा' बहुत अच्छा नॉविल है, लेकिन शायद आपको सुनकर ख़ुशी हो कि 'दारा शिकोह' पर मुझे पद्मश्री मिला। 'सलाउद्दीन अय्यूबी' पर मुझे ग़ालिब एवार्ड मिला। 'गुब्बारे शब' पर मुझे यू पी अकादमी के एवार्ड मिले, तो मैं ईमानदारी से ख़ुद भी यह नहीं बता सकता कि किस नॉविल में मैंने अपने आपको ज़्यादा बेहतर तरीक़े से पेश किया है। मैं तो यह बात बड़ी ईमानदारी से कहता हूँ कि जो नॉविल मैं लिखना चाहता हूँ और ख़ुदा से दुआ है कि जो ख़्वाब मेरा है, एक नॉविल ऐसा लिख लूँ जिसको लिखने के बाद लिखने की ख़्वाहिश ना रहे।" (पृ.- 82)

नंद भारद्वाज की शैली में आदर और सौजन्य का स्वर निरंतर बना रहता है। वे प्रश्न पूछते समय किसी भी लेखक के प्रति पूर्वाग्रह नहीं रखते। उनके प्रश्नों में न तो किसी प्रकार का चमत्कारिक प्रदर्शन होता है, न बौद्धिक आडंबर। वे लेखक को उसकी अपनी रचनात्मक भूमि पर ले जाकर संवाद करते हैं। यही कारण है कि इस पुस्तक के साक्षात्कार केवल प्रश्नोत्तर नहीं लगते, बल्कि दो रचनात्मक व्यक्तियों के बीच होने वाली विचारमूलक संवाद के रूप में सामने आते हैं।

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता है। इसमें समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे से लेकर आलोचक रामविलास शर्मा और नामवर सिंह तक, कथा-साहित्यकार भीष्म साहनी, असगर वजाहत और सूर्यबाला तक, कवि हरीश भादानी, अशोक वाजपेयी और नंद चतुर्वेदी तक हर वर्ग के प्रतिनिधि शामिल हैं। नंद भारद्वाज इन सभी से अलग-अलग स्तर पर संवाद करते हैं। उनके प्रश्न प्रत्येक लेखक की प्रकृति और चिंतन के अनुकूल हैं। इससे यह संग्रह एक बहुस्तरीय दस्तावेज बन जाता है, जो न केवल अपने समय के साहित्यिक विमर्शों को सँजोता है, बल्कि उन्हें आलोचनात्मक दृष्टि से सामने भी रखता है। एक विशेष बात यह भी कि अंतिम साक्षात्कार सूर्यबाला जी को एक पत्र संवाद के रूप में कृति विशेष के रूप में संग्रहित किया गया है।

साक्षात्कार एक जीवंत विधा है, लेकिन यह तभी प्रभावी होती है जब दोनों पक्षों में समान रूप से संवाद की तत्परता हो। नंद भारद्वाज के साक्षात्कारों में यह संतुलन साफ दिखाई देता है। वे अपने प्रश्नों से लेखक को उकसाते नहीं, बल्कि सहजता से उस बिंदु तक ले जाते हैं, जहाँ लेखक अपनी रचनात्मक दृष्टि को खोलकर रख देता है। हालाँकि कुछ साक्षात्कारों में यह समानता पूरी तरह नहीं बन पाती। कुछ लेखक अपने उत्तरों में शुष्कता या औपचारिकता बनाए रखते हैं। वहीं कुछ अन्य साक्षात्कार ऐसे हैं जिनमें संवाद अत्यंत आत्मीय और विचार-प्रवर्तक बन गया है।

रामविलास शर्मा से संवाद में नंद भारद्वाज साहित्य और इतिहास-दृष्टि की परतें खोलते हैं। नामवर सिंह के साथ वार्ता परम्परा और पुनर्मूल्यांकन के प्रश्नों पर केंद्रित है। नामवर सिंह जी और अन्य रचनाकारों की अनेक बातें और तथ्य रेखांकित किए जाने योग्य है। यहाँ उदाहरण स्वरूप नामवर सिंह जी का कथन देखें- "साहित्य के इतिहास में, बल्कि संस्कृति के इतिहास में एक से अधिक परंपराएँ होती हैं। होता यह है कि आमतौर पर जिसे प्रतिष्ठान या व्यवस्था मुख्य-धारा के रूप में स्वीकार करती है, वह होती नहीं है, बल्कि कुछ आलोचकों द्वारा वह बनाई जाती है और वह परंपरा आमतौर से उन साहित्यकारों की होती है जो साहित्यकार किसी व्यवस्था के लिए अनुकूल होते हैं, जो उनके प्रतिष्ठानों के मूल्यों का समर्थन करते हैं। इस कारण होता यह है कि कुछ वे साहित्यकार जो प्रतिष्ठित मूल्यों को और व्यवस्था की मान्यताओं को चुनौती देते हैं, जो एक तरह से प्रतिपक्ष में होते हैं, सामान्यत: उन साहित्यकारों की उपेक्षा होती है।" (पृष्ठ- 55) यहाँ इस कथन के आलोक में कहना उपयुक्त होगा कि प्रस्तुत कृति में नंद जी इसी प्रतिपक्ष को भी पक्ष के साथ आलोकित कर रहे हैं।

भीष्म साहनी से कथा और आलोचना के संबंधों पर बातचीत इस पुस्तक को विशेष महत्त्व देती है। इन साक्षात्कारों में नंद भारद्वाज न केवल प्रश्न पूछते हैं, बल्कि अपने प्रश्नों के माध्यम से समकालीन साहित्यिक विमर्श को भी आगे बढ़ाते हैं।

इस पुस्तक की एक विशेष बात यह भी है कि इसमें नंद भारद्वाज केवल साक्षात्कार-कर्ता नहीं, बल्कि एक सजग पाठक, सृजनधर्मी और आलोचक के रूप में भी उपस्थित हैं। उनके प्रश्नों में लेखक के रचनात्मक विकास की यात्रा का ज्ञान झलकता है। वे किसी लेखक से बात करते हुए उसकी रचनाओं के साथ-साथ उसके समय और सामाजिक संदर्भ को भी जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, नंद चतुर्वेदी से बातचीत में वे कविता और सामाजिक यथार्थ के सवालों को इस रूप में उठाते हैं कि पाठक को लगता है जैसे यह संवाद आज के समाज की बहसों से भी जुड़ा हुआ है। एक रचनाकार के संबंध में अन्य रचनाकारों की अवधारणाओं को जानना-समझना भी यहाँ सुखद अनुभव है।

पुस्तक में विविध विधाओं के लेखकों से संवाद है- कवि, कथाकार, आलोचक, समाजशास्त्री, उपन्यासकार, लोक-संस्कृति के शोधकर्ता सभी यहाँ 'अपने समय के साक्षी' बनकर उपस्थित हैं। यह साक्षात्कार शीर्षक केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि सार्थक है। हर लेखक अपने समय का साक्षी इसलिए है क्योंकि उसने अपने लेखन के माध्यम से उस समय की संवेदनाओं, संघर्षों और चिंताओं को शब्द दिए हैं। नंद भारद्वाज इन साक्षियों को एक मंच पर लाकर न केवल उन्हें पुनर्पाठ के लिए प्रस्तुत करते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि रचना और रचनाकार का संवाद समय के साथ कैसे बदलता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि नंद भारद्वाज साक्षात्कार में केवल साहित्यिक प्रश्न नहीं पूछते। वे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तरों पर भी लेखक की स्थिति को समझने का प्रयास करते हैं। श्यामाचरण दुबे से समाज और संस्कृति पर बातचीत इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी तरह, हरिराम मीणा से आदिवासी साहित्य पर संवाद यह दिखाता है कि नंद भारद्वाज समकालीन विमर्शों की नई दिशाओं के प्रति कितने सजग हैं।

साक्षात्कार संग्रह के अनुक्रम को देखकर यह स्पष्ट होता है कि नंद भारद्वाज ने किसी कालानुक्रमिक या प्रसिद्धि के आधार पर क्रम तय नहीं किया। यह उनका आत्मनिर्धारित अनुक्रम है, जो उनकी दृष्टि और अनुभव का द्योतक है। इसमें श्यामाचरण दुबे से आरंभ कर सूर्यबाला तक की यात्रा एक वैचारिक निरंतरता प्रस्तुत करती है। यह क्रम पाठक को साहित्यिक चिंतन के विविध रूपों से गुज़ारता है।

कई साक्षात्कारों में नंद भारद्वाज ने प्रश्नों से पहले लेखक की रचना-दुनिया का छोटा परिचय दिया है। यह परिचय मात्र सूचना नहीं, बल्कि एक आलोचनात्मक टिप्पणी है। इससे लेखक के लेखन को समझने की दृष्टि विकसित होती है। यह पद्धति पुस्तक को एक अध्ययनपरक स्वरूप देती है।

इस संग्रह के साक्षात्कारों में प्रश्नों की विविधता उल्लेखनीय है। हर लेखक से एक जैसे प्रश्न नहीं पूछे गए। यह बात इस कृति को अलग बनाती है। अनेक साक्षात्कारों में नंद भारद्वाज लेखक की निजी लेखन प्रक्रिया, रचना के पीछे की प्रेरणा, विचार और समय की स्थितियों पर प्रश्न करते हैं। उदाहरण के लिए, चित्रा मुद्गल से आधी आबादी के सच पर बातचीत केवल नारी विमर्श नहीं है, बल्कि स्त्री जीवन की सामाजिक जटिलताओं को भी उजागर करती है।

एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि नंद भारद्वाज संवाद को कभी एकतरफा नहीं होने देते। वे कई बार लेखक के उत्तरों के आधार पर प्रतिप्रश्न करते हैं। यह प्रक्रिया संवाद को जीवंत और गहन बनाती है। इसी के कारण यह पुस्तक केवल साक्षात्कार संग्रह नहीं रह जाती, बल्कि एक आलोचनात्मक संवाद-ग्रंथ बन जाती है।

साहित्यिक दृष्टि से 'अपने समय के साक्षी' को पढ़ते हुए यह महसूस होता है कि यह संग्रह हिन्दी आलोचना के लिए भी सामग्री प्रदान करता है। इसमें लेखक के अपने विचार, उनकी रचनात्मक दृष्टि, समाज और समय के प्रति उनका रुख आदि सब कुछ दर्ज है। कई बार यह पुस्तक लेखक के आत्मवृत्त की तरह लगती है, और कई बार आलोचक के नोट्स जैसी। यह दो स्तरों पर एक साथ काम करती है- रचनाकार के जीवन और साहित्य के पारस्परिक संबंध को सामने लाती है, और आलोचना के लिए आधार तैयार करती है।

इस संग्रह में कुछ साक्षात्कार आकार में लंबे हैं, कुछ छोटे। लेकिन हर संवाद का अपना महत्त्व है। कुछ में लेखक अपने समय के सवालों को पूरी गंभीरता से उठाते हैं, कुछ में वे अपनी रचना-यात्रा के अनुभव साझा करते हैं। इस विविधता में भी एक एकता है - साहित्य और समाज के संबंध की चिंता। यही एकता इस पुस्तक को एक सशक्त आलोचनात्मक दस्तावेज़ बनाती है।

नंद भारद्वाज की यह पुस्तक इस अर्थ में भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें हिन्दी, उर्दू और राजस्थानी साहित्य तीनों के साथ अन्य कला माध्यमों की भी उपस्थिति है। वे इन माध्यमों और भाषाओं को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक मानते हैं। उनके साक्षात्कारों में यह विचार बार-बार सामने आता है कि क्षेत्रीयता और राष्ट्रीयता के बीच कोई विरोध नहीं होना चाहिए। नामवर सिंह और नंद चतुर्वेदी के साथ हुए संवाद इस मुद्दे को और स्पष्ट करते हैं।

यह पुस्तक समकालीन साहित्यिक परिदृश्य को समझने के लिए भी एक दस्तावेज है। इसमें न केवल बीस रचनाकारों के विचार हैं, बल्कि बीस दृष्टियाँ हैं जो इक्कीसवीं दृष्टि स्वयं नंद भारद्वाज के साथ समन्यवक के रूप में अपने समय को देखने का अवसर देती हैं। हर लेखक अपने समाज, अपनी भाषा, अपने युग के प्रश्नों से जूझता दिखाई देता है। यही कारण है कि यह संग्रह केवल लेखकों का नहीं, बल्कि पूरे समय का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

'अपने समय के साक्षी' पढ़ते हुए यह अनुभव होता है कि साक्षात्कार जैसी सरल विधा कितनी गहरी हो सकती है, जब उसके पीछे एक सजग और संवेदनशील लेखक हो। नंद भारद्वाज का यह संग्रह पाठक को केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि सोचने की प्रेरणा देता है। यह प्रेरणा ही इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि 'अपने समय के साक्षी' एक ऐसी कृति है जो संवाद, साहित्य और आलोचना को एक साथ जोड़ती है। यह न केवल बीस रचनाकारों का परिचय कराती है, बल्कि साक्षात्कार विधा की संभावनाओं को भी नए आयाम देती है। इसमें लेखक और साक्षात्कारकर्ता दोनों अपने-अपने स्तर पर सृजनशील हैं। नंद भारद्वाज ने इसे जिस गरिमा, विवेक और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत किया है, वह इस पुस्तक को एक स्थायी महत्त्व प्रदान करता है। यह संग्रह अपने शीर्षक के अनुरूप सचमुच अपने समय का साक्ष्य है- जिसे हम विचारों, संवादों और संवेदनाओं के एक जीवंत दस्तावेज़ को, धरोहर के रूप में सहेजने का एक सार्थक प्रयास कह सकते हैं।

000

पुस्तक समीक्षा

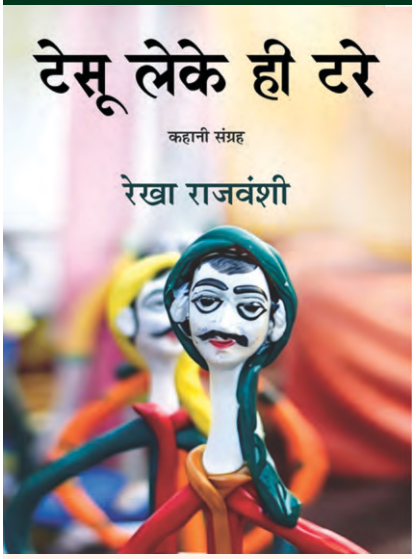

(कहानी संग्रह)

टेसू लेके ही टरे

समीक्षक : दीपक गिरकर

लेखक : रेखा राजवंशी

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

दीपक गिरकर
28-सी, वैभव नगर, कनाडिया रोड,
इंदौर- 452016 मप्र
मोबाइल- 9425067036
ईमेल- deepakgirkar2016@gmail.com

"टेसू लेके ही टरे" सुपरिचित प्रवासी कथाकार रेखा राजवंशी का तीसरा कहानी संग्रह है। रेखा राजवंशी सिडनी में कई वर्षों से रह रही हैं। रेखा राजवंशी के लेखन का सफ़र बहुत लंबा है। इनकी रचनाएँ निरंतर देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इनकी कहानियों में आधुनिकता का बोध है। कहानियों के कथ्यों में विविधता हैं। विषयवस्तु और विचारों में नयापन है। जीवन के अनेक तथ्य एवं सत्य इन कथाओं में उद्भासित हुए हैं। लेखिका अपने आसपास के परिवेश से चरित्र खोजती है। वे आम जीवन से अपने पात्र उठाती हैं। कहानियों के प्रत्येक पात्र की अपनी चारित्रिक विशेषता है, अपना परिवेश है जिसे लेखिका ने सफलतापूर्वक निरूपित किया है। लेखिका के पास गहरी मनोवैज्ञानिक पकड़ है। इस कहानी संग्रह में छोटी-बड़ी 10 कहानियाँ हैं। रेखा राजवंशी अपनी कहानियों के पात्रों के अंतस के तार-तार खोलकर सामने लाती हैं। इनकी कहानियों में यथार्थवादी जीवन का सटीक चित्रण है। इस कहानी संग्रह की कहानियों में कथाकार ने रिश्तों का बदलता व्यवहार, मानसिक प्रशिक्षण, धैर्य और स्वीकार्यता, रिश्तों में संवाद की कमी, वैवाहिक संबंधों की जटिलताओं और कानूनी व्यवस्था के संभावित दुरुपयोग, जड़ों से जुड़ाव, निस्वार्थ सेवा, मानव मन की ईर्ष्या और असुरक्षा, सामुदायिक सहयोग की भावना, वृद्ध लोगों का मनोविज्ञान, पारिवारिक रिश्तों का विद्रूप चेहरा इन सब आयामों को विश्लेषित किया है।

संग्रह की पहली शीर्षक रचना "टेसू लेके ही टरे" कहानी एक अत्यंत भावनात्मक और प्रभावशाली है, जिसमें सिडनी के दशहरे के दृश्य से शुरू होकर बचपन की कड़वी स्मृतियों तक की यात्रा बहुत सहज ढंग से दिखाई गई है। "टेसू" का प्रतीक पूरे कथानक को जोड़ता है और अतीत व वर्तमान के बीच सुंदर सेतु बनाता है। कहानी की सबसे बड़ी ताक़त इसकी सच्चाई और मार्मिकता है। रोटियों का हिसाब, पुराने कपड़ों का प्रसंग और रिश्तों का बदलता व्यवहार पाठक को गहराई से छूता है। भाषा सरल और स्वाभाविक है, जिससे भाव सीधे दिल तक पहुँचते हैं। "घंटियाँ" कहानी एक संवेदनशील और मनोवैज्ञानिक यथार्थ को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। इसमें अपूर्व नामक पात्र के माध्यम से टिनिटस जैसी अदृश्य लेकिन गंभीर समस्या को उभारा गया है। कहानी यह दिखाती है कि शारीरिक बीमारी केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के मानसिक संतुलन और दैनिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित करती है। कथाकार ने अपूर्व की परेशानी, उसकी बढ़ती चिंता और अवसाद को बहुत सहज और मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। श्रेया का सहायक और समझदार व्यवहार दांपत्य जीवन के सकारात्मक पक्ष को सामने लाता है। कहानी का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें बीमारी से लड़ने के लिए केवल दवाइयों पर नहीं, बल्कि मानसिक प्रशिक्षण, धैर्य और स्वीकार्यता पर भी ज़ोर दिया गया है। "घंटियाँ" केवल एक बीमारी की कथा नहीं, बल्कि जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलने की प्रेरणा देने वाली कहानी है, जो हमें सिखाती है कि कठिनाइयों को स्वीकार कर उनसे जीना सीखना ही वास्तविक समाधान है।

"सपने और सच्चाई" एक ऐसे परिवार की कहानी है जिसने मेहनत से आर्थिक सफलता तो हासिल कर ली, लेकिन रिश्तों में संवाद की कमी रह गई। रमन और लक्ष्मी अपने काम में इतने व्यस्त रहे कि बच्चों को समय और भावनात्मक सहारा नहीं दे पाए। इसका असर यह हुआ कि शीला अपनी पहचान को लेकर अकेले संघर्ष करती रही, जबकि सूर्या ग़लत संगत में पड़कर नशे की ओर चला गया। आख़िर में परिवार को समझ आता है कि असली सफलता पैसे या प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि आपसी समझ, प्रेम और स्वीकार्यता है। कहानी का मूल संदेश यही है कि सिर्फ आर्थिक सफलता या सुविधाएँ देना ही माता-पिता की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं करता। बच्चों को समय, समझ और भावनात्मक सहारा भी उतना ही ज़रूरी है। जब घर में बातचीत बंद हो जाती है, तो बच्चे बाहर सहारा ढूँढ़ते हैं। कभी ग़लत रास्तों में, कभी अपनी पहचान से संघर्ष में। "मेन टू..." कहानी आधुनिक वैवाहिक संबंधों की जटिलताओं और कानूनी व्यवस्था के संभावित दुरुपयोग को उजागर करती है। आरव मेहता के माध्यम से लेखक ने यह दिखाने की

कोशिश की है कि पुरुष भी मानसिक, भावनात्मक और कानूनी उत्पीड़न का शिकार हो सकते हैं। कहानी की शुरुआत सामान्य और सुखद वैवाहिक जीवन से होती है, जो धीरे-धीरे तनाव, अविश्वास और संघर्ष में बदल जाती है। प्रीति का बदलता व्यवहार कथा में रहस्य और तनाव पैदा करता है, जिससे पाठक की रुचि बनी रहती है। कहानी का सबसे मज़बूत पक्ष इसका सामाजिक संदेश है कि न्याय प्रणाली को निष्पक्ष होना चाहिए और किसी भी पक्ष के साथ पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, चाहे वह पुरुष हो या महिला। अंत में आरव का संघर्ष से उभरकर दूसरों की मदद करना प्रेरणादायक है। यह कहानी समाज के एक संवेदनशील मुद्दे को सामने लाती है।

"वापसी" कहानी एक प्रवासी जीवन की संवेदनशील और प्रेरणादायक झलक प्रस्तुत करती है। महावीर के संघर्ष, आत्मनिर्भरता और परिवार के प्रति समर्पण को सरल भाषा में प्रभावशाली ढंग से उकेरा गया है। कहानी की सबसे बड़ी ताक़त इसकी भावनात्मक गहराई है। विशेषकर डिमेंशिया के माध्यम से यादों का धुँधलाना और बचपन की स्मृतियों का फिर से जीवंत होना। अंत बहुत मार्मिक है, जहाँ महावीर की अंतिम इच्छा "गाँव लौटने" की उनके जीवनभर के जुड़ाव को दर्शाती है। साथ ही, उनके द्वारा गाँव के स्कूल के लिए किए गए गुप्त योगदान कहानी को एक प्रेरणादायक मोड़ देते हैं, जो उनके चरित्र की महान्ता को उजागर करता है। कुल मिलाकर, यह कहानी जड़ों से जुड़ाव, निस्वार्थ सेवा और जीवन के चक्र को भावुकता और सादगी के साथ प्रस्तुत करती है। "आर्नी" एक संवेदनशील, मार्मिक और सोचने पर मजबूर करने वाली कहानी है, जो प्रेम, ईर्ष्या और पुन: आशा पाने की यात्रा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। कहानी की शुरुआत एक ख़ुशहाल जीवन से होती है, जहाँ एली, नैथन और आर्नी के बीच प्रेम और अपनापन दिखाया गया है। यह शुरुआती सुखद वातावरण पाठक को पात्रों से जोड़ता है। लेकिन अचानक आई त्रासदी, नैथन द्वारा आर्नी के साथ किया गया क्रूर कृत्य - कहानी को झकझोर देने वाला मोड़ देता है। यह मोड़ न केवल चौंकाता है बल्कि मानव मन की ईर्ष्या और असुरक्षा की गहराई को भी उजागर करता है। कहानी का सबसे मज़बूत पक्ष है भावनात्मक प्रभाव, आर्नी की मासूमियत, एली का टूटना, और अंत में "होप" के रूप में नई शुरुआत। अंत उम्मीद भरा है, जो पाठक को दर्द के बावजूद एक सकारात्मक संदेश देता है कि जीवन आगे बढ़ता है।

"शुरुआत" कहानी एक सुखी परिवार से शुरू होकर अचानक आए संकट, मीरा को अफेशिया होने के माध्यम से जीवन की अनिश्चितता को प्रभावशाली ढंग से दर्शाती है। कथाकार रेखा राजवंशी ने बीमारी के भावनात्मक और व्यावहारिक प्रभाव को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक आसानी से जुड़ पाता है। रोहित का सहयोग और अंजुला का मासूम साथ कहानी को मानवीय ऊष्मा देता है। वहीं "वॉइसेस ऑफ होप" जैसे सपोर्ट ग्रुप का उल्लेख यह दिखाता है कि सामुदायिक सहयोग पुनर्वास में कितना महत्त्वपूर्ण होता है। कहानी की सबसे बड़ी ताक़त मीरा का संघर्ष, अपनों का साथ और उसका धीरे-धीरे आत्मविश्वास वापस पाना है। सूर्य की तलाश कहानी में मारग्रेट जीवन भर रोशनी ढूँढ़ती रही थी। वह उसी रोशनी में समा गई। कुछ लोग जीवन को नहीं, जीवन उन लोगों को चुनता है। मारग्रेट उन्हीं में से एक थी। यह मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती एक मर्मस्पर्शी, भावुक कहानी है। इस कहानी में मारग्रेट के तीनों पुरुष पार्टनर्स की अवसरवादी प्रवृत्ति दर्शित हुई है। "मुक्ति" कहानी को लेखिका ने काफी संवेदनात्मक सघनता के साथ प्रस्तुत किया है। रेखा राजवंशी ने इस कहानी में वृद्ध लोगों के मन की अनुभूतियों को और उनके मनोविज्ञान को बहुत ही स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त किया है। "मिस्टर X" कहानी में कथाकार की परिवेश के प्रति सजग दृष्टि है। कहानी रोचक है। कहानी में सहजता है।

कहानीकार ने भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक जीवनधारा को सहज भाव से आत्मसात किया है। इस कहानी-संग्रह की रचनाएँ लेखिका के ऑस्ट्रेलिया-प्रवास के अनुभवों की सजीव परिणति हैं। इनमें प्रवासी मन की गहन पीड़ा, देश-वियोग की कसक और स्मृतियों की मृदुल आहट निरंतर स्पंदित होती रहती है। यहाँ यह तथ्य भी उभरकर सामने आता है कि भौतिक समृद्धि के बावजूद प्रवास जीवन अपनी विशिष्ट चुनौतियों से घिरा रहता है, सांस्कृतिक विसंगतियाँ, पहचान का द्वंद्व और आत्मीयता का अभाव। साथ ही, कुछ कहानियाँ ऑस्ट्रेलियाई समाज की विविधता और वहाँ की बहुसांस्कृतिक संवेदनाओं से प्रेरित होकर एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार, यह संग्रह प्रवासी जीवन के भावनात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों का अत्यंत संवेदनशील एवं मार्मिक चित्रण करता है।

इस संग्रह की कहानियों का कथानक निरंतर गतिशील बना रहता है, पात्रों के आचरण में असहजता नहीं लगती, संवाद में स्वाभाविकता बाधित नहीं हुई है। कथाकार ने जीवन के यथार्थ का सहज और सजीव चित्रण अपने कथा साहित्य में किया है। कहानियों के पात्र अपनी ज़िंदगी की अनुभूतियों को सरलता से व्यक्त करते हैं। कहानियों के चरित्र वास्तविक चरित्र लगते हैं, कृत्रिम या थोपे हुए नहीं। इन कहानियों में अनुभव एवं अनुभूतियों की प्रामाणिकता है। इस संग्रह की कहानियों में व्याप्त स्वाभाविकता, सजीवता और मार्मिकता पाठकों के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। इस संग्रह की कहानियों के शीर्षक कथानक के अनुसार है और शीर्षक कलात्मक भी है। जीवन के गहरे मनोभावों को लेखिका ने पात्रों के माध्यम से अधिकाधिक रूप से व्यक्त किया है। इन कहानियों के पात्र अपने दैनंदिन कार्यों से अपने चरित्र का उद्घाटन करते हैं और जीवन से सबक लेते हुए दिखते हैं। आशा है कि रेखा राजवंशी के इस कहानी संग्रह "टेसू लेके ही टरे" का साहित्य जगत् में भरपूर स्वागत होगा।

000

पुस्तक समीक्षा

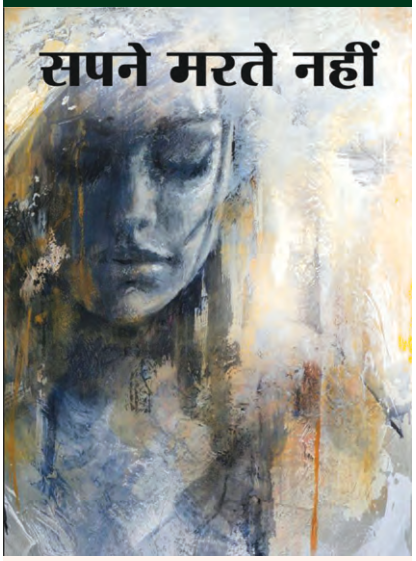

(कहानी संग्रह)

सपने मरते नहीं

समीक्षक : डॉ. मधु संधु

लेखक : तेजेन्द्र शर्मा

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

डॉ. मधु संधु

13 प्रीत विहार, आर. एस. मिल, जी. टी. रोड, अमृतसर, 143104, पंजाब

मोबाइल- 8427004610

ईमेल- madhu_sd19@yahoo.co.in

तेजेन्द्र शर्मा ने प्रवास में रहकर हिन्दी साहित्य में एक स्तरीय पहचान बनाई है। वैश्विक परिवर्तनों को स्वीकारते मूल्यवत्ता की, मानवीयता की बात करना, भीतर की वेदना, हल चल को पहचान देना, नई खिड़कियाँ खोलना, अनछुई समस्यायों का प्रस्तुतीकरण तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों की विशेषता है। उनकी यात्रा कविता से कहानी की ओर मुडती है। ब्रिटेन की रानी एलीज़ाबेथ द्वारा 2017 में 'मेम्बर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एंपायर' सम्मान (M B E) दिया गया। हिन्दी के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मान 'अंतर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा सम्मान' प्रदान करने वाली संस्था 'कथा यू. के.' के वे महासचिव हैं। अपने अद्वितीय कृतित्व के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है- डॉ. मोटूरी सत्यनारायण सम्मान (2011), प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान (2003), हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी सम्मान (2012) महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार (1995), निर्मल वर्मा सम्मान (2017), हरिवंश राय बच्चन सम्मान (2008)। उनका प्रथम कहानी संग्रह काला सागर 1990 में प्रकाशित हुआ। ढिबरी टाइट (1994), देह की क़ीमत (1999), यह क्या हो गया (2003), बेघर आँखें (2007), सीधी रेखा की परतें (2009), क़ब्र का मुनाफ़ा (2010), दीवार में रास्ता (2012), तू चलता चल (2021), संदिग्ध (2023), मौत-एक मध्यांतर (2024,)गोद उतराई (2025) उनके कहानी संग्रह हैं।

'सपने मरते नहीं में कुल बारह कहानियाँ हैं- खिड़की, ज़मीन भुरभुरी क्यों है, कुछ आख़िरी दिन, एक पारदर्शी चेहरा, प्यार क्या यही है...?, मर्द अभी ज़िंदा है !, क्या मुझमें कोई कमी है, सीली आँखों में भविष्य, एक छोटी कहानी, गंदगी का बक्सा, हाथ से फिसलती ज़मीन, सपने मरते नहीं।

शीर्ष कहानी 'सपने मरते नहीं' डिप्रेशन, मनोविश्लेषण और पारिवारिक स्नेह- सौहार्द को लिए है। मृत बच्चे का जन्म शीशम के पेड़ सी सुदृढ़ इला को गहरा आघात दे जाता है, खाना पीना छूट जाता है, हर बात भूल- भूल जाती है। जीवन आँसुओं और अंधकार में डूबने लगता है। 'मैं असफल इंसान हूँ, ख़राब मशीन हूँ'- बात उसका पीछा नहीं छोड़ती। काउंसलिंग विफल रहती है। जबकि भारत आकर परिजनों का साथ और स्नेह, परिचित स्थलों पर बिखरे सुख और स्मृतियाँ उसे डिप्रेशन से मुक्त करने में सहायक बनते हैं।

'हाथ से फिसलती ज़मीन' जातिभेद- रंगभेद की देशीय- वैश्विक स्थिति को लिए है। त्रासदी यह है कि नायक को भारत के जातिभेद और विदेश के रंगभेद ने ऐसे घाव दिये हैं कि उस टीस, उस दर्द, उस दुख से वह आजीवन मुक्त नहीं हो पाता। नरेन को लगता है कि देशीय समाज से मिले जातिभेद के सामाजिक दंश के दर्द से ब्रिटेन आकर छुटकारा पा लिया है। ब्रिटिश युवती से प्रेमविवाह कुछ दिन उसे कुंठामुक्त भी रखता है। अब उसके पास पत्नी जैकी है, बेटा जै और बेटी शीला है, नाती- नातिने हैं। पर स्थिति 'आकाश से गिरा खजूर पर अटका' वाली है। उसके अपनों ने उसे ब्लैक कहकर पराया कर दिया है। बिना कोई लड़ाई लड़े वह हार चुका है। अपनो के दिये यह बेआवाज़ दुख हैं और वह अजनबीपन- अकेलेपन के गडडों में असहाय तड़प रहा है। भारत में जातिभेद के कारण प्रेमिका मीना चोपड़ा के भाई गालियों, जूतों, डंडों से उसे अधमरा कर देते है और विदेश में पत्नी बनी प्रेमिका जैकी रंगभेद के कारण उसके मकान, वेतन, बच्चों पर एकाधिकार जमा उसे लाचार बनाए रखती है। यहाँ या वहाँ- कहीं भी उसकी गाड़ी को पटरी पर नहीं आने दिया जाता, मानो वह विरोधी शिविर में खड़ा हो।

'गंदगी का बक्सा' प्रेम और विवाह में समाये विरोधाभासों की कहानी है। विवाह अपनी जात- बिरादरी में हो या अंतर्देशीय यानी- ईरानी मुस्लिम, पाकिस्तानी मुस्लिम या भारतीय मुस्लिम से – सब की परिणति एक सी ही होती है- आशा के विपरीत।

जातिभेद रंगभेद ही नहीं और भी अनेक वैभिन्य हो सकते हैं। 'प्यार !- -क्या यही है ?' में मुंबई में बिहार के फ्रीलांसर शेखर का अपने से पंद्रह वर्ष बड़ी, परित्यक्ता, 14 वर्षीय बेटी की गुजरातिन माँ संपादक पर मन आ जाता है।

'हाथ से फिसलती ज़मीन' का नायक जीवट संघर्ष में नंबर दो की हैसियत से, विसंगति और व्यर्थताबोध से भी जूझ रहा है। वह दिल्ली विश्व विद्यालय से ग्रेजुएट है, पर लंदन की कोई अभिजात कंपनी उसे नौकरी देने को तैयार नहीं।

'खिड़की' का साठ वर्षीय नायक विगत पंद्रह वर्षों से रेलवे स्टेशन की टिकिट खिड़की पर पूरी संवेदनशीलता से अपना कर्त्तव्य निभा रहा है। पत्नी और बेटा होने के बावजूद वह अकेला रह रहा है, लेकिन इस अकेलेपन को उसने गले नहीं लगाया है। वह इटली की सबरीना, ओल्ड पीपल होम में रहने वाले जॉन, अफ्रीका से आए पटेल साहब, अबाना, सत्तर साल की कैसी और स्कूली बच्चे आदि से स्टेशन पर ही अपना परिवार खड़ा कर लेता है। यानी मन की खिड़की खोल कर भी स्वर्ग की रचना की जा सकती है।

'ज़मीन भुरभुरी क्यों है' दांपत्य की डोर में गहरे धँसी उस स्त्री की कहानी है, जिसका पति घोटाला/ अपराध करता है, उसे तो एक ही सज़ा होती है- यानी जेल, पर पत्नी को सज़ाओं का/ दुखों का धारावाहिक सिलसिला घेर लेता है। पहला दुख यह है कि पति जेल में है, दूसरा कि किसी को उससे कोई सहानुभूति नहीं, लोग यही कहते हैं कि हजारों पाउंड्स हजम कर वह मगरमच्छ के आँसू बहा रही है, तीसरा कि घर के चरमरा रहे अर्थतन्त्र को कैसे संभाले, चौथा और सबसे बड़ा दुख यह है कि अखबारों में स्पष्ट आया है कि पति राजन के आयरिश कैथलीन से यौन संबंध थे। पूरे गुजराती समाज से उसे आँखें चुरानी हैं। राजन को तो एक ही सज़ा मिली- जेल जाने की, जबकि कोकिला बेन सज़ाओं के चक्रवात में फँस जाती है। एक नितांत घरेलू स्त्री कोकिला बेन घर के अर्थतन्त्र को सँभालती है। गाड़ी चलानी सीखती है, ताकि अढ़ाई घंटे की ड्राइव करके पति से कारावास में मिलने जा सके। मन इतना आहत है कि वह बालों पर डाई लगाना, सामाजिक कार्यक्रमों में जाना छोड़ देती है। बहुत कम बोलती है। चेहरा नूर खो देता है और वह अपनी उम्र से कहीं बड़ी लगाने लगती है, जबकि पति राजन जेल में रहकर कंप्यूटर सीख लेता है। वहाँ की दिनचर्या से उसका लटका हुआ पेट अंदर चला जाता है, वह पहले से कहीं स्वस्थ, पुष्ट और युवा होकर लौटता है।

'कुछ आख़िरी दिन' में प्रभुत्व कामना से ग्रस्त नायक समीर है। निम्नम ध्यवर्गीय जीवन की कुंठाओं से मुक्त होने के लिए वह ख़ूब पैसा कमाता है। दिल्ली, हैम्पस्टन, दुबई में उसके पास आलीशान घर हैं, महँगी कारें हैं, सब को देना भी जानता है। लेकिन देते समय पत्नी- बच्चों- भाई- भतीजों सब पर कुछ इतना अहसान जाता देता है कि न कोई उससे आत्मीयता रख पाता है और न कृतज्ञता ज्ञापित करता है। उसकी स्थिति उस बकरी सी है, जो दूध तो देती है, पर उसमें मेंगने डाल देती है।

'सीली आँखों में भविष्य' में एक ओर वह युवा वर्ग है, जो गति को जीवन मानता है, जो जीवन स्पीड से जीना चाहता है। यही स्पीड प्रतीक की दुर्घटना मृत्यु का कारण बनती है और यही त्रासदी छोटे भाई अक्षत के मन को भयाक्रांत करती हर पल संत्रस्त किए रहती है।

'मर्द अभी ज़िंदा है' में रूबीन, अभय, राज फिल्म समीक्षक हैं। खरे को खरा और खोटे को खोटा कहने वाले पिछड़ रहे हैं। सफल वही है, जो इंटेलेक्चुवल लुक की आड़ में शब्दों का हेरफेर जानता है।

समय का चेहरा सोशल मीडिया बदल रहा है। जीवन खुली किताब सा हो गया है। आज हमारे पास अंतर्जाल है, फेसबुक है, गूगल सर्च इंजिन है। फेसबुक के बड़े परिवार ने तो हमारे जीवन, हमारे मानस, हमारे भाव जगत् में हलचल मचा दी है। देश- विदेश की सीमाओं का अतिक्रमण कर दिया है। स्वयं ही अपनी हर एक्टिविटी हम यहाँ सांझा करते हैं। अपने जीवन को पारदर्शी सा बना देते हैं। 'एक पारदर्शी चेहरा' की नायिका एक प्रवासी लेखक की फेसबुक मित्र है। उसके भारत आने पर मिलने भी आती है। वह कुछ कह तो नहीं पाती, लेकिन मित्र उसके पारदर्शी चेहरे के सारे भाव पढ़ ही लेता है। 'एक छोटी सी कहानी' सम्पादकीय आग्रह और लेखकीय मंथन, चिंतन, ऊहापोह को लिए है। एक छोटी कहानी सी कहानी किस विषय पर लिखी जाए- देशप्रेम, प्रेम, वैवाहिक जीवन, प्रवास- पर.....। अंतत: वह संपादकों को टाल देता है।

'क्या मुझमें कोई कमी है' अवसाद/डिप्रेशन की मन:स्थिति का विश्लेषण लिए है। यहाँ आसन्न प्रसवा उस स्थिति से जूझ रही है, जहाँ वह किसी दैहिक विकार के कारण नवजात को दूध पिलाने में नाकाम है। यह अवसाद की वह स्थिति है जब नायिका संतान को खोने की आशंका में स्वयं को अपराधी मानने लग जाती है। अवसाद के मूल में अपने को दूसरों की तुलना में कमतर, अयोग्य, शारीरिक रूप से अपूर्ण/ कमज़ोर पाना/मानना है। किन्तु कहानी में नर्स, दाई, डॉक्टर, सास, पड़ोसिनें, पति सब उसके साथ हैं और फिर डिब्बाबंद दूध के इस युग में डिप्रेशन की यह कोई समस्या नहीं है।

1.इंसान को जानवर से अलग करने वाली चीज़ है सम्प्रेषण।

2.जो लोग शॉर्ट कट से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, वे कभी लंबी रेस का घोड़े नहीं बन सकते।

3.फिल्म स्टार टी. वी. के माध्यम से हमारे बेडरूम का हिस्सा बन जाते हैं।

4.अगर ज़माने से लड़ना है तो आँखों की नमी पर एक परदा चढ़ा कर रखो।

5.हम सारी दुनिया को कोसते रहते हैं कि सब ने चेहरे पर चेहरा चढ़ा रखा है, किन्तु स्वयं भी तो चेहरे पर चेहरा चढाये रखना चाहते हैं।

6.कड़वा आदमी बहुत हिम्मती होता है।

7.महायुद्ध करके सबको पछाड़ना तो आसान है मगर रोज़-रोज़ घटने वाली छोटी छोटी लड़ाइयों से पार पाना बहुत कठिन है।

हर कहानी अलग कथ्य, विषय वस्तु, समस्या, विचार लिए है। यहाँ मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण है, स्नेह- सौहार्द तथा असंगति/ अकेलापन है, प्रेम- अनुराग एवं जातिभेद- रंगभेद है, उत्कट आशा और घोर निराशा है, धनाभाव और धनाढ्यता है, वेदना और संघर्ष है, अवसाद और सफलता है, गति और संत्रास है।

000

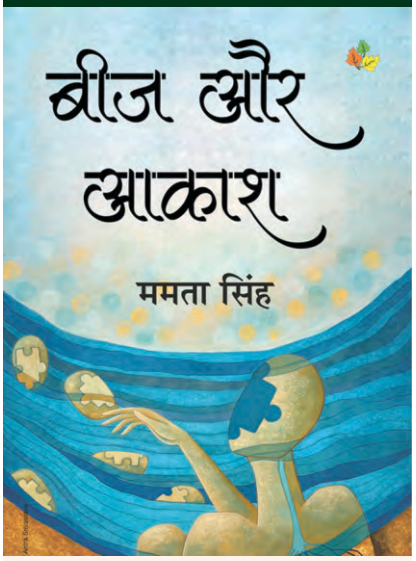

(उपन्यास)

बीज और आकाश

समीक्षक : सृष्टि उपाध्याय

लेखक : ममता सिंह

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

सृष्टि उपाध्याय

सिल्वर स्प्रिंग्स फेज़-1, डी-509

इंदौर, मध्य प्रदेश 452020

मोबाइल- 9407348703

ईमेल- shrishtiupadhyay0304@gmail.com

खुल चुकी है एक मुठ्ठी जो सदियों से बंद थी, वो मुठ्ठी जिसमें क़ैद है न जाने कितने सपने और एक मीठी सी अनजानी धुन, जिसकी लय पर तीन स्त्रियों की ज़िंदगी थिरक रही है, इन स्त्रियों की ज़िंदगी की परवाज़ की उड़ान में बड़े संघर्ष हैं और हैं अपनी-अपनी व्यथाएँ। यह तीन स्त्रियाँ हैं - तन्वी, करिश्मा और मोनिका जो उपन्यास "बीज और आकाश" की नायिकाएँ हैं, जिसकी लेखिका हैं जानी-मानी कथाकार और रेडियो प्रस्तोता - ममता सिंह।

कहानी की पहली नायिका तन्वी, जो तूफ़ानी ज़िंदगी की आदी हो चुकी है, बतौर उपसंपादक और टेलीविजन शोज़ की स्क्रिप्टिंग करती वह धीरे-धीरे महसूस करने लगती है कि गृहस्थी की वेदी पर वह अकेली ही धीरे-धीरे स्वाहा हो रही है। जीवन में कुछ पैसे आएँ, इसके लिए अपने आप को धीरे-धीरे खोखला करते जाना कहाँ की बुद्धिमानी है? न जाने कितने तरह के साइड इफेक्ट्स को जानते हुए भी अपनी कोख को उसने वेंडिंग मशीन बना डाला। अस्पताल के कॉरिडोर में बैठे-बैठे एक सूनापन उसे आ घेरता है, बिल्कुल उस लंबे गलियारे की तरह जहाँ मरीज़ों की लंबी लाइन रोज़ आ लगती है। शाम की धूप जब सीढ़ियों पर अठखेलियाँ करते हुए कंधों से आ लगे तो अपनी ही परछाईं देखकर बगल में किसी दूसरे के बैठने का अहसास गहरा जाता है, कैसे परछाई के साथ अपना अस्तित्व गड्डमड्ड होकर विलीन हो जाता है, आजकल ऐसा ही एहसास तन्वी को भी हो रहा है। उसके बच्चे ठीक-ठाक परवरिश पा लें इसके लिए वह क्या-क्या जतन नहीं कर रही है, पर सागर साथ होते हुए भी साथ नहीं। मन की गहराई में दुख नहीं, अनकही बातों का अवशिष्ट है, जिसका भार ढोते-ढोते वह उस समय में पहुँच जाती है जब हर रोज़ ख़्वाबों में कचनार खिलते थे, हवाओं में सुर थे शहनाई के, वे ख़्वाबों के दिन थे। घर में बड़ा सा आँगन हो, बच्चे हों, खुली छत हो, मगर तन्वी के सपने बाज़ारवाद की भेंट चढ़ गए। ज़माने की रफ्तार ने इंसान को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया, बच्चे जो ईश्वर की अनुपम कृति माने जाते थे, अब वही बच्चे ईश्वर की देन नहीं रह गए, स्त्री की कोख तो अब किसी लैब और मशीन का हिस्सा बन गई है। अलग-अलग अस्पतालों में ईश्वर की यह कृति कितने अनुपम रूपों में बिखरी पड़ी है, यह तन्वी बड़े अच्छे से समझ चुकी है। जब माँ नहीं बन पा रही थी तब उसने भी तो बच्चों के लिए इन्हीं मशीन और लैब का सहारा लिया था और आज वो भी इस बाज़ारवाद का एक हिस्सा बन चुकी है। सागर पहले कुछ-कुछ समझता था मगर अब उसकी ज़िंदगी में बहुत सारी अनिश्चितता है, इसका कारण शायद यह भी है कि मौजूदा दौर के युवा पुरुष तमाम तरह की दुविधा से ग्रस्त हैं जो न आधुनिक विचारों के साथ कदम मिला पा रहे हैं और न पुराने संस्कार को छोड़ पा रहे हैं। मन पढ़ने की सहूलियत सबके पास नहीं होती और मन बिखरा हो तो उसे पढ़ना और भी मुश्किल, यही मुश्किल दिनों-दिन सागर और तन्वी के रिश्तों को धीरे-धीरे ख़त्म कर रही है, बिना किसी उम्मीद के पूरे समर्पण के

साथ तन्वी ने सागर को चाहा था, तब न कोई सवाल थे, न जवाब। और अब यह स्थिति है कि रोज़ न जाने कितने सवालों के साथ तन्वी का दिन शुरू होता है और सागर के पास किसी भी सवाल का कोई जवाब नहीं, शायद पूर्ण समर्पण में न प्रश्न बचे रहते हैं न उत्तर की कामना। सागर इस बात को कभी समझ ही नहीं सका और तन्वी फर्टिलिटी नेटवर्क का अनचाहा हिस्सा बन गई, अचानक नेहा अपनी माँ की बीमारी के चलते उसी नेटवर्क का हिस्सा बनने उसके पास आई, तब तन्वी जैसे एक स्वप्न से जागी, संकल्प का वह मार्ग जो तन्वी ने चुना, क्या थी वह राह?

कुदरत एक रहस्य की तरह हमेशा आपके साथ रहती है। चाँद, आकाश, साँसें यह सब नित आपको कुछ अलग सा एहसास कराते हैं, हमारे नज़रिए की तरह ही हमारे एहसास भी हर पल बदलते रहते हैं। कुदरत के बनाए हुए दुनिया में जीव-जंतु भी हैं, और स्त्री और पुरुष भी, इन सब के अलावा एक और जेंडर है जिस पर अक्सर हमारा समाज बात नहीं करता, जिसका ख़ामियाज़ा कभी किसी करिश्मा को या कभी किसी राज को भुगतना पड़ता है। उपन्यास "बीज और आकाश" की दूसरी नायिका है करिश्मा। एक स्त्री और पुरुष के प्रेम की पूरकता का अर्थ समाज में विवाह और विवाह के बाद बच्चे होने से ही आँका जाता है, मगर यहाँ करिश्मा का विवाह राज के साथ नहीं, एक धोखे के तहत हो गया। करिश्मा अपनी कामनाओं में डूबती-उतरती राज के साथ चलने की कोशिश में कभी ठिठकती, तो कभी लड़खड़ाती, मगर साथ नहीं छोड़ती। अपनी सास के मानसिक दबाव की वजह से वह गर्भ धारण करती है, और एक सुंदर-सलोना बच्चा घर में किलकारी भरने लगता है। यह बच्चा राज का नहीं, यह बात राज को दिन-रात टीसती है और सागर की तरह राज भी पलायन का रास्ता चुन लेता है। आगे बढ़ने से पहले मैं पाठकों से एक आग्रह करना चाहूँगी कि वे इस उपन्यास पढ़ने से पहले ममता सिंह का लिखा पहला उपन्यास "अलावा पर कोख" ज़रूर पढ़ें क्योंकि दोनों उपन्यासों के तार एक दूसरे से जुड़े हैं। एक बार "अलावा पर कोख" पढ़ने के बाद जब यह उपन्यास पढ़ेंगे तो पाठक स्वयं "बीज और आकाश" के हर किरदार और हर घटना के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेगा।

उपन्यास की तीसरी नायिका हैं मोनिका, उसके जीवन में प्रेम बाढ़ की तरह आया और जब पानी जमा तो पीछे रह गए प्रेम के वे छंद कतरे जिसमें मोनिका न पूरी तरह डूब सकी न ही पार लग सकी। विवेक और उसके बीच तितली का आना मोनिका के लिए किसी सदमे से कम नहीं था। विवेक की बेवफाई से वह टूटी ज़रूर मगर उसने प्रेम को बचाने की कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ी, मोनिका की सोच, कि कठिन समय में हौसला रखना ही प्रेम करने का एक दूसरा तरीक़ा है, मगर विवेक का विवेक तितली के सौंदर्य में गुम हो गया। प्रेम में अक्सर यह होता है कि हम सतह पर जाते हैं। सतह तक के रास्ते तो बड़े आसान होते हैं मगर जब गहराई में उतरते हैं तब वे रास्ते हमें चौंकाते हैं, उदास करते हैं, तब इंसान घबराकर सतह से ऊपर आता है और सामने जो सच्चाई है, उससे उसकी पूरी जड़ें हिल जाती हैं, विवेक के साथ भी ऐसा ही हुआ। मगर मोनिका के प्रेम से रिश्तों की केमिस्ट्री बदली, उसने अपने प्रेम से साबित किया कि प्रेम सिर्फ एक अहसास नहीं, या सिर्फ एक इन्वॉल्वमेंट है, यह भावनाओं का वो उद्रेक है जिसे हम इश्क़, प्रेम और मोहब्बत का नाम देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास "बीज और आकाश" एक सफ़र है, तीन स्त्रियाँ इस सफ़रनामा की यात्री हैं, यह सफ़र न तो उनके काम को लेकर है न ही उनकी किसी सफलता की गाथा है, यह उन तीन स्त्रियों की जिजीविषा की कहानी है जहाँ वे किसी मोड़ पर टूटती नहीं, एक मज़बूत हौसला दिल में लिए आने वाले हर पल का बड़ी मज़बूती से सामना करती रहती हैं। भाषा का प्रवाह और गुण-संपन्नता को देखते हुए पाठक सोच भी नहीं सकते कि यह लेखिका का दूसरा उपन्यास है, भले ही इस उपन्यास में तीन जोड़ी रिश्ते किसी धनुष पर चढ़े तीर-कमान की तरह प्रत्यंचा में कसे ज़रूर हैं मगर आद्योपांत उपन्यास पढ़कर पाठक स्वयं महसूस करेंगे कि लेखिका की लेखनी से रिश्तों का सत्व बरस रहा है, अपने ज़ख्म को मुस्कराहट के पीछे धकेलती इन स्त्रियों की कहानी सरक कर पाठक की मन:स्थिति पर पूरी तरह कब्जा जमा लेती है। पाठक तब चेतता है जब उपन्यास अपने अंतिम छोर पर आ जाता है, जिस भी कथाकार ने अपने समय की निर्मम वास्तविकता को संवेदना के धरातल पर परखकर उसे पन्नों पर उतारा है वे कहानियाँ साहित्य जगत् में अपने विशिष्ट कथ्य की वजह से पाठकों के मानस पर देर तक अंकित रहकर, उनके हृदय में लंबे समय तक बनी रहती हैं। बाज़ार क्या बस एक पैकेज बन कर रह गया है? यह एक बात पाठकों को सोचने पर मजबूर करेगी, लेखिका ने संवेदना की बाज़ारवाद की बर्फ पर निर्मम प्रहार किया है, देखना यह है कि यह बर्फ कब तक पिघलेगी।

शीर्षक की थाह लगाएँगे तो पाएँगे कि 'बीज' में छिपी है दस्तक जीवन की और जीवन क्या है, या फिर क्या है उस जीवन के पार.? एक नया लोक? एक नया आकाश? बड़े गहरे अर्थ हैं इसके।

लेखिका ने इस उपन्यास का धरातल हमारे आसपास के संसार से उठाया है, इसमें छलकता जीवन एक अलग तरह की जिज्ञासा पृष्ठ दर पृष्ठ पाठकों के सम्मुख खोलता है। यह उपन्यास एक साँचा है जहाँ तीन स्त्रियों के जीवन आकार लेते हैं। एक छोटे से बीज से इन स्त्रियों की कहानी की शुरुआत होती है और वे पर तौलती आकाश तक उड़ने का साहस दिखाती हैं, लेखिका ने उपन्यास में किसी एक दृष्टिकोण का औचित्य सिद्ध करने के बजाय तीन कहानियों को अलग-अलग डोर में बाँधकर अपनी लेखनी में प्रेम और दर्द के स्वर को एक साथ बुन दिया है। साहित्य जगत् के नए मान-मूल्यों के बीच उपन्यास "बीज और आकाश" पाठकों को विचार और भावनाओं की दुनिया में ले जाएगा, लेखिका ममता सिंह की सृजनशील लेखनी अनवरत नए-नए विषयों पर चलती रहे, अनंत शुभकामनाएँ।

000

पुस्तक समीक्षा

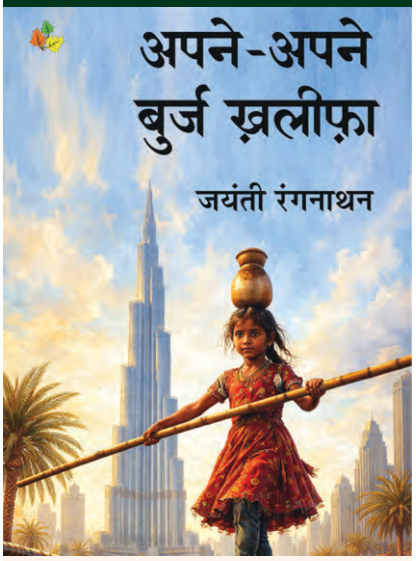

(उपन्यास)

अपने अपने बुर्ज ख़लीफ़ा

समीक्षक : दीपक गिरकर

लेखक : जयंती रंगनाथन

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

दीपक गिरकर
28-सी, वैभव नगर, कनाडिया रोड,
इंदौर- 452016 मप्र
मोबाइल- 9425067036
ईमेल- deepakgirkar2016@gmail.com

समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य की वरिष्ठ और सशक्त हस्ताक्षर जयंती रंगनाथन का रचनात्मक व्यक्तित्व बहुआयामी और प्रभावशाली है। उनके लेखन-संसार में अब तक आठ उपन्यास, चार कहानी-संग्रह, दो संस्मरणात्मक उपन्यास तथा बाल-पाठकों के लिए दो कहानी-संग्रह और तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं, जो उनकी सृजनात्मक ऊर्जा और वैचारिक व्यापकता का साक्ष्य हैं। पिछले चार दशकों से वे मीडिया और साहित्य, दोनों ही क्षेत्रों में सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराती रही हैं। धर्मयुग, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन, वनिता, अमर उजाला, दैनिक हिन्दुस्तान और नंदन जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में संपादक के रूप में उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा है, जहाँ उन्होंने न केवल संपादकीय दृष्टि को समृद्ध किया, बल्कि रचनात्मकता को भी नई दिशा प्रदान की। वे एक लोकप्रिय पॉडकास्टर होने के साथ-साथ ऑडियो बुक, फिल्म, टेलीविजन और वेब-सीरीज़ लेखन में भी समान रूप से सक्रिय हैं। उनके बहुआयामी सृजन और साहित्यिक अवदान को अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष उनका शिवना प्रकाशन से प्रकाशित नवीनतम उपन्यास "अपने-अपने बुर्ज ख़लीफ़ा" काफी चर्चित हुआ है।

इस उपन्यास की कथा बहुत ही रोचक व संवेदनशील है। यह उपन्यास एक साधारण लड़की जागती की असाधारण यात्रा का संवेदनशील और प्रेरक चित्रण है। कहानी न केवल एक कलाकार के उत्थान-पतन को दिखाती है, बल्कि जीवन के गहरे यथार्थ - संघर्ष, मोहभंग, रिश्ते, और पुनर्निर्माण को भी उजागर करती है। कहानी का आरंभ एक ऐसे परिवेश से होता है जहाँ जागती परिवार की केंद्रबिंदु है। बचपन से ही उसके करतब उसे विशेष बनाते हैं और वह प्रसिद्धि की ओर बढ़ती है। विदेशी टीम द्वारा उसकी ज़िंदगी पर फ़िल्म बनना उसके जीवन का पहला बड़ा मोड़ है। उपन्यास का रोमांच धीरे-धीरे आपको अपनी गिरफ्त में लेना शुरू कर देता है। कहानी की शुरुआत एक प्रतिभाशाली, लाड़-प्यार में पली लड़की से होती है, जो अपने करतबों से प्रसिद्धि हासिल करती है। लेकिन दुर्घटनाओं, पारिवारिक संकटों और भावनात्मक आघातों के कारण उसका जीवन बिखर जाता है।

कथानक में कई उतार-चढ़ाव आते हैं - निकोल के प्रति आकर्षण (भावनात्मक द्वंद्व), दुर्घटनाएँ और शारीरिक चोट, करियर का टूटना, परिवार का बिखराव (माँ का जाना, आर्थिक संकट)। यहाँ से कहानी यथार्थ के अधिक क़रीब हो जाती है। जागती का संघर्ष उसे भीतर से

बदलता है। एसिड पीड़ितों पर डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से उसे जीवन का नया उद्देश्य मिलता है। अंततः, दुबई में बुर्ज ख़लीफ़ा पर स्टंट करना कहानी का चरम बिंदु है, जो उसके आत्मविश्वास और पुनर्जन्म का प्रतीक बनता है।

जागती का चरित्र बहुआयामी है। शुरुआत में वह आत्मविश्वासी लेकिन भावनात्मक रूप से अपरिपक्व है। मध्य में वह टूटी हुई, भ्रमित और असहाय दिखाई देती है। अंत में वह मज़बूत, परिपक्व और प्रेरणादायक व्यक्तित्व बन जाती है। उसका यह विकास उपन्यास की सबसे बड़ी ताकत है। अश्विनी मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में उभरती है। वह व्यावसायिक होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है और जागती को हर मोड़ पर दिशा देती है। रोमी एक सहायक, समझदार और स्थिर चरित्र है। वह जागती के जीवन में संतुलन और भावनात्मक सहारा प्रदान करता है। निकोल एक आकर्षण और भ्रम का प्रतीक है। उसके माध्यम से जागती की भावनात्मक अपरिपक्वता और बाद में उसका विकास दिखाया गया है।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी ताक़त यही है कि इसके पात्र हमारे आसपास के ही लोग प्रतीत होते हैं। उन पात्रों की इच्छाएँ, संघर्ष और द्वंद्व हमारे अपने अनुभवों से मेल खाते हैं। रस्सी पर करतब दिखाने वाली नट लड़की जागती का चरित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह केवल एक कलाकार नहीं, बल्कि जीवन के जोखिमों, असंतुलन और संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरती है। उसकी जिजीविषा, साहस और अपने कौशल को लगातार साधने की प्रक्रिया, ये सब मिलकर उसे एक गहरे मानवीय और प्रेरक रूप में प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में रस्सी केवल एक भौतिक वस्तु नहीं रह जाती, बल्कि वह जीवन के उस नाज़ुक संतुलन का रूपक बन जाती है, जिस पर हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में चल रहा है। जागती का हर क़दम जोख़िम से भरा है, फिर भी वह डगमगाए बिना आगे बढ़ती है, यही उसका संघर्ष और उसकी जीत है। साथ ही, जयंती रंगनाथन ने इस पात्र के माध्यम से एक हाशिए पर खड़े समुदाय को एक नई दृष्टि से देखने का अवसर दिया है। यह प्रस्तुति सहानुभूति भर नहीं, बल्कि सम्मान और समझ पर आधारित है, जहाँ जागती की कला, मेहनत और आत्मबल को केंद्र में रखा गया है, न कि केवल उसकी सामाजिक स्थिति को।

उपन्यास का मुख्य संदेश यही है कि असफलता अंत नहीं होती। जागती का जीवन इस विचार को सशक्त रूप से प्रस्तुत करता है। जागती को अपनी असली पहचान प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि संघर्षों से मिलती है। निकोल के प्रति आकर्षण से लेकर रोमी के साथ सच्चे रिश्ते तक की यात्रा जागती के मानसिक विकास को दर्शाती है। एसिड अटैक पीड़ितों की कहानी के माध्यम से समाज की कठोर सच्चाई सामने आती है।

जागती की कथा अपनी परिस्थितियों (स्टंट, दुर्घटना, पुनर्वास) के कारण विशिष्ट है, फिर भी इसका मूल भाव - संघर्ष, आत्मबल, असफलता के बाद पुनः उठना और सपनों को साकार करना निम्न उपन्यासों से काफी हद तक मेल खाता है :- द अलकेमिस्ट - पाउलो कोएल्हो, द ओल्ड मैन एंड द सी - अर्नेस्ट हेमिंग्वे, मालगुडी डेज – आर.के. नारायण।

कथाकार की भाषा सरल, सहज और संवादप्रधान है। कथा प्रवाह तेज है, जिससे पाठक की रुचि बनी रहती है। लेखन की जीवंतता कहानी को दिलचस्प बनाए रखती है। कथाकार ने घटनाओं, स्थानों और परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन इस तरह से किया है कि जागती के करतब, दुर्घटनाओं के दृश्य, बुर्ज ख़लीफ़ा का स्टंट इन सभी का चित्रण ऐसा है कि पाठक के सामने दृश्य जीवंत हो उठते हैं। इस उपन्यास का कथानक प्रेरणादायक और सशक्त है। उपन्यास में सामाजिक मुद्दों का समावेश है।

यह उपन्यास केवल एक कलाकार की कहानी नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की कहानी है जो जीवन में कभी न कभी टूटता है और फिर ख़ुद को समेटकर आगे बढ़ता है। जागती का चरित्र यह सिखाता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, दृढ़ इच्छाशक्ति और सही मार्गदर्शन से व्यक्ति अपने जीवन को नई दिशा दे सकता है। अंततः, यह कृति पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ते हुए उन्हें प्रेरित करती है कि वे अपने जीवन की चुनौतियों से हार न मानें, बल्कि उन्हें अपनी ताकत बनाएँ। यह कृति आत्मविश्वास, साहस और जीवन में दोबारा उठ खड़े होने की भावना को उजागर करती है और पाठकों को प्रेरित करती है। कुल मिलाकर, यह उपन्यास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हर व्यक्ति अपने-अपने "बुर्ज ख़लीफ़ा" बनाने की कोशिश में है और उस यात्रा में संतुलन, साहस और धैर्य सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

कथाकार जयंती रंगनाथन की लेखनी में सहजता, जीवन का स्पंदन, आत्मिक संवेदनशीलता प्रतिबिंबित होती है। इनके कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति की सौंधी महक है। वे अपने कथा साहित्य के द्वारा भारतीय मूल्यों को पुर्नस्थापित करते हैं। कथाकार जयंती रंगनाथन के कथा साहित्य में रोचकता तथा सकारात्मकता पाठकों को आकर्षित करती है। कथाकार ने पात्रों के विभिन्न भावों को मार्मिकता, सहजता और सकारात्मक रूप से अपने उपन्यास में अभिव्यक्त किया हैं। इस उपन्यास में नयापन के साथ अनुभूतियों की सच्चाई है। कथाकार ने बड़ी कुशलता से जागती की भावनाओं के उफान का सृजन इस उपन्यास में किया हैं। इस उपन्यास को पढ़ने वाले की उत्सुकता बराबर बनी रहती है वह चाहकर भी उपन्यास को बीच में नहीं छोड़ सकता। उपन्यास की कहानी में प्रवाह है, अंत तक रोचकता बनी रहती है। कथाकार ने जागती के अदम्य जिजीविषा तथा असीम सहन शक्ति का अंकन किया है। कथाकार ने पात्रों का चरित्रांकन स्वाभाविक रूप से किया है। कथाकार ने किरदारों को पूर्ण स्वतंत्रता दी है। जीवन के गहरे मनोभावों को लेखिका ने पात्रों के माध्यम से अधिकाधिक रूप से व्यक्त किया है। जयंती रंगनाथन सशक्त और रोचक उपन्यास रचने के लिए बधाई की पात्र हैं।

000

पुस्तक आलोचना

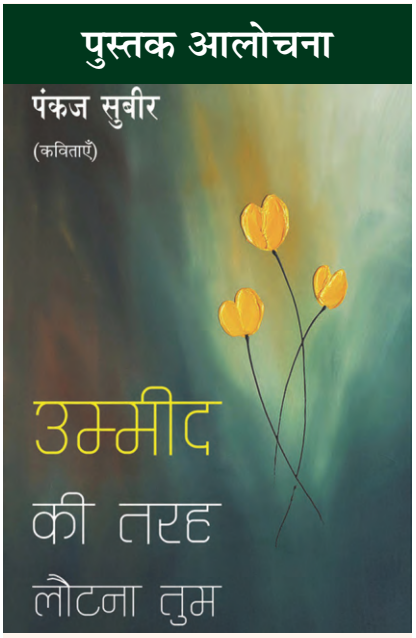

(कविता संग्रह)

उम्मीद की तरह लौटना तुम

समीक्षक : तिलक राज कपूर

लेखक : पंकज सुबीर

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र 466001, फ़ोन-07562405545

मोबाइल- +91-9806162184

ईमेल- shivna.prakashan@gmail.com

तिलक राज कपूर
3 डी / 168
साकेत नगर
भोपाल 462024 मप्र
मोबाइल- 9425024320
ईमेल- kapoor.tilakraj@gmail.com

पंकज सुबीर की कविताओं का संकलन "उम्मीद की तरह लौटना तुम" हाल ही में प्रकाशित हुआ है। संग्रह के कवर पृष्ठ पर पीतवर्णी पुष्पों के साथ गहरे नीले रंग की पृष्ठभूमि में सुनहरा शब्द "उम्मीद" एक बार ठहर कर सोचने को विवश करता है लेकिन यहीं एक जिज्ञासा जन्म लेती है जो संग्रह में दिये गये पुस्तक परिचय को पढ़ने को आमंत्रित करती है और स्पष्ट होता है कि इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ पंकज सुबीर द्वारा पिता को खोने के बाद तीन-चार माह की अवधि में लिखी गयी हैं।

क्या हम किसी पुस्तक के कवर पृष्ठ की रचनाधर्मिता को नकार सकते हैं?

अधिकांश पुस्तकों पर हुई चर्चाओं में पुस्तक प्रकाशन से जुड़े अन्य कला पक्षों पर मौन ही देखने को मिलता है जबकि लेखन के बाद उसे मुद्रित रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया में बहुत की सक्रिय भूमिकाएँ होती हैं जो पुस्तक को कलेवर देती हैं। इन्हीं में किताब का आवरण, कम्पोज़िंग, काग़ज़ की गुणवत्ता, छपाई की गुणवत्ता, बाइंडिंग आदि को गिना जा सकता है। ऐसे में इस पुस्तक पर कुछ कहूँ उसके पूर्व कवर पृष्ठ और संग्रह के शीर्षक की बात नहीं की तो कवर पृष्ठ के रूपांकन से अन्याय होगा। कवर पर पीतवर्णी पुष्पों का गहरे नीले रंग पर सुनहरी "उम्मीद" शब्द का संयोजन मिलकर पाठक को संदेश देता है कि यह संग्रह केवल दु:ख की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन, प्रेम और स्मृतियों के माध्यम से एक पिता के प्रति सकारात्मक श्रद्धान्जलि है।

मृत्यु को अंत न मानते हुए पिता की स्मृतियाँ, शिक्षाएँ और प्रेम को शोक के अंधकार में एक उम्मीद की किरण के रूप में सोचना इस शीर्षक का सकारात्मक पहलू है और भारतीय दर्शन में मृत्यु को आत्मा का नहीं देह का अवसान मानने के विश्वास को प्रस्तुत करता है।

जहाँ कवर पृष्ठ पर पीले फूल श्रद्धा, स्मरण और जीवन को प्रस्तुत करते हैं वहीं सुनहरा शब्द "उम्मीद" इन पुष्पों के साथ मिलकर जीवन की निरंतरता को इंगित करता है। यह पिता की विरासत ही मानी जा सकती है जो ऐसे कठिन समय में भी "उम्मीद" का दीपक जलाए रखती है।

प्रथम भाग 'प्रवेश' की प्रथम कविता का शीर्षक है "अचानक"

शिल्प की दृष्टि से देखें तो कविता "अचानक" पाठक से सीधा संवाद स्थापित करती है और संवादात्मक आरंभ से विचार का विकास करती हुई तार्किक विचार-प्रवाह के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचती है और इस प्रकार कविता का निष्कर्ष भी क्रमश: विकसित होता है, अचानक प्राप्त नहीं होता है।

कविता शब्द, भाव और शिल्प तीनों स्तरों पर सफल रचना है और सामान्य जीवन के अनुभव को असामान्य गहराई से प्रस्तुत करने में सफल है। ब्लैक-होल और पूर्व-पीठिका जैसे रूपक मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की क्षमता के परिचायक हैं। यह कविता न केवल पाठक को विचार के लिए प्रेरित करती है, बल्कि उसे अपने आसपास के लोगों के आंतरिक संघर्षों के प्रति संवेदनशील भी बनाती है। इस कविता में विशेष रूप से देखने के शब्द "थोड़ा-थोड़ा",

"ब्लैक-होल" और "पूर्व-पीठिकाएँ" हैं। जहाँ "थोड़ा-थोड़ा" क्रमिक बदलाव दर्शाता है वहीं "ब्लैक-होल" जैसे वैज्ञानिक शब्द का कुशल प्रयोग और पृष्ठभूमि के स्थान पर "पूर्व-पीठिकाएँ" जैसे साहित्येतर अप्रचलित शब्द का प्रयोग गहराई में इस समझ तक ले जाता है कि अचानक कुछ नहीं होता। यह कविता बड़ी सफ़ाई से सरल शब्दों में इस बात की पुष्टि पाठक के मन में अंकित करने में सक्षम है कि दर्शन की दृष्टि से देखें या व्यवहारिकता की दृष्टि से, अचानक कुछ नहीं होता है।

कविता "घट रहा होता है", "खींचता है", "मर रहा होता है" क्रियाओं के माध्यम से निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का बोध कराती है।

कविता मानसिक उदासीनता और अवसाद की क्रमिक प्रक्रिया की स्थिति में बाह्य दिखावे और आंतरिक यथार्थ के अंतर को रेखांकित करते हुए मनोवैज्ञानिक गहराई तक पहुँचने में सफल रही है और "अचानक" की धारणा को सफ़लता से चुनौती देती है।

कविता जैसे-जैसे आगे बढ़ती है "थोड़ा-थोड़ा" का बार-बार प्रयोग करते हुए क्रमिकता पर बल देती है और वहीं "अचानक" शब्द की आवृत्ति केंद्रीय भाव को सुदृढ़ करती चलती है।

कविता में जहाँ "उसके अंदर का यह ब्लैक-होल दिन-ब-दिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ता है" में "ब्लैक-होल" रूपक के माध्यम से आंतरिक शून्यता और आत्महास सामने आते हैं वहीं- 'अचरज' और 'अचानक' के बीच के कोहरे में छिपे होते हैं" में "कोहरा" रूपक के माध्यम से सामान्य मनुष्य की समझ की अस्पष्टता सामने आती है।

"वह कई दिनों से हर रोज़ मर रहा होता है थोड़ा-थोड़ा" के माध्यम से क्रमिक मृत्यु का बिंब शारीरिक मृत्यु से पूर्व की आंतरिक मृत्यु का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

द्वितीय भाग 'प्रकृति' की प्रथम कविता का शीर्षक है "अगला मौसम"।

"अगला मौसम" कविता सूक्ष्म अवलोकन और गहन दार्शनिक चिंतन का सुंदर समन्वय है। कविता में मौसम के बदलाव जैसी सामान्य घटना को मानव जीवन की नश्वरता और अनिश्चितता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

कविता का विशेष उल्लेखनीय बिंदु घरेलू दृश्यों के माध्यम से जीवन के गूढ़ सत्य का उद्घाटन है। "इंसान बीत चुका होता है"- इस अंतिम पंक्ति में संपूर्ण कविता का सार समाहित है और सामान्य में असामान्य और स्थूल में सूक्ष्म देखने की रचनाकार की क्षमता को प्रस्तुत करने में सक्षम है। कविता में जहाँ ख़राशें जैसा शब्द मन पर पड़ने वाले सूक्ष्म प्रभाव का सूचक है वहीं इलेक्ट्रानिक मीडिया की शब्दावली के प्रभाव में प्रचलन से बाहर होता जा रहा देसी शब्द "दुछत्ती" बड़ी सहजता से पिरोया गया है। ऐसे ही "स्वेटर, टोपियाँ, मफ़लर, ऊनी जुराबें, शॉल" जैसी सर्दियों की वस्तुओं की सूची मूर्त बिंब निर्मित करती है।

कविता में अस्तित्ववादी चिंतन के साथ-साथ समय की नश्वरता और मानवीय मोह का द्वंद्व, भविष्य के प्रति आश्वस्ति और उसकी अनिश्चितता के बीच का तनाव उभर कर सामने आता है। "मन के अंदर ख़राशें छोड़ जाता है" समय बीतने के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की संवेदनशील अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

कविता की वर्णनात्मक शैली दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियों के माध्यम से गहन विचार प्रस्तुत करती है और एक सरल घटनाक्रम दार्शनिक निष्कर्ष तक पहुँचता है।

"अगला मौसम कभी-कभी आकर भी नहीं आता" पर पाठक एकबारगी ठिठक जाता है और चिंतन के लिए विवश हो जाता है।

केंद्रीय रूपक "मौसम" यह सोचने को विवश करता है कि प्रकृति चक्र में जिस मौसम की वार्षिक पुनरावृत्ति होती रहती है वह इस अवधि में चले गये के लिये कोई अर्थ नहीं रखती है।

"एक और मौसम का बीत जाना हमारे हिस्से में आये हुए समय का कुछ और कम हो जाना" प्रकृति के चक्र के माध्यम से मानव जीवन की सीमा और उसकी नश्वरता का समर्थ रूपक प्रस्तुत करता है।

"गर्म कपड़े तहा कर रख दिये जायेंगे" सर्दियों के सामान का सार्थक बिंब भविष्य के प्रति आश्वस्ति और तैयारी का प्रतीक लिये है तो "अलाव की राख ख़ाली कर उसे उल्टा रख दिया गया है" में अलाव की राख का बिंब बीते समय की स्मृतियों तक ले जाता है। इसी प्रकार "बिजली वाला हीटर भी रख दिया गया है वापस पैक कर के" आधुनिकता और परंपरा का समन्वय प्रस्तुत करता है।

"गुनगुनी होने लगी हैं सुबहें" प्राकृतिक परिवर्तन को प्रस्तुत करता है तो "गर्म कपड़े तहा कर रख दिये जायेंगे" मौसम के बदलाव के प्रति स्वाभाविक मानवीय प्रतिक्रिया को प्रस्तुत करता है और "इंसान बीत चुका होता है" दार्शनिक विमर्श के लिये आमंत्रित करता है।

"अगला मौसम कभी-कभी आकर भी नहीं आता" पूरी कविता के भाव को एकाएक परिवर्तित कर देने में सक्षम है।

कविता सामान्य वस्तुओं यथा स्वेटर, अलाव, हीटर आदि के माध्यम से असामान्य अर्थ का सृजन करती है और घरेलू दृश्यों से जीवन-मृत्यु के दार्शनिक सत्य को उद्घाटित करती है।

कविता में सामान्य जीवनचर्या के वर्णन से अस्तित्ववादी प्रश्नों तक की यात्रा को सुगम बनाया गया है।

तृतीय भाग 'प्रेम' की प्रथम कविता का शीर्षक है "शेष प्रेम"।

"शेष प्रेम" दार्शनिक गहराई और काव्यात्मक सुंदरता का सुंदर समन्वय है। यह कविता प्रेम को देह की सीमाओं से मुक्त करके अनंत आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती है।

कविता के विशेष उल्लेखनीय बिंदु विज्ञान, गणित और दर्शन का काव्य में सफल समन्वय, "शेष" की अवधारणा, प्रेम की स्थायिता और शाश्वतता के प्रतीक हैं।

यह कविता पाठक को प्रेम के संबंध में पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती है और उसे भौतिकता के पार के आध्यात्मिक प्रेम तक ले जाती है।

कविता प्रश्नोत्तर शैली में परस्पर संवाद

करते हुए कुछ ऐसे सरल से प्रश्नों से प्रारंभ होती है जिनका उत्तर दर्शन की प्रक्रिया से गुज़रे बिना प्राप्त नहीं हो सकता है। प्रश्नों के बाद जब 'देह एक उपक्रम है' पर पहुँचती है तो दर्शन प्रक्रिया में एकाएक एक ठहराव पैदा करता हुआ एक विचार मिलता है। यही स्थिति पुन: उत्पन्न होती है 'किन्तु प्रेम अवशेष नहीं होता प्रेम शेष रहता है' के माध्यम से जब "अवशेष" और "शेष" में सूक्ष्म अंतर स्थापित होता है। एक बार फिर "देह के समीकरण" में सारे जोड़-घटाव के बाद भी प्रेम के शेष रह जाने की बात सोचने पर विवश करती है।

कविता में "आकाशगंगा", "तारे", "इकाई", "अनंत" आदि को सीमित महत्त्व देते हुए प्रेम को अनंत तक ले जाने का दर्शन देखते ही बनता है।

कविता देह और प्रेम के परस्पर संबंध की खोज करते हुए द्वैत और अद्वैत के दर्शन के माध्यम से स्थूल से सूक्ष्म और सीमित से असीम की यात्रा का अनुभव देते हुए प्रेम की परिभाषा का विस्तार करती है।

कविता में समीकरण तथा बर्तन और पानी के रूपक का कुशल उपयोग किया गया है।

जहाँ "आकाशगंगा में तारे हैं या तारों में आकाशगंगा है?" के माध्यम से ब्रह्मांडीय बिंब विशाल और सूक्ष्म के अविभाज्य संबंध का दर्शन कराता है वहीं "स्वर में सुर हैं या सुरों में स्वर है ?" का संगीतमय बिंब कला और भाव के अंतर्संबंधों का सूक्ष्म चित्रण करता है।

देह-प्रेम संबंध की जिज्ञासा के प्रश्न का सार्वभौमिक दृष्टांतों के उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण से "शेष प्रेम" की अवधारणा की स्थापना निष्कर्ष और फिर उसका अनंतता से आगे की ओर प्रेम की यात्रा का विस्तार कविता को एक तार्किक विकास का ढाँचा देता है।

"अवशेष" और "शेष" के बीच सूक्ष्म अंतर द्वारा भाषा की सजगता, गणितीय और वैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग अंतर्विषयक दृष्टि दर्शाता है।

चतुर्थ भाग 'प्रारूप' की प्रथम कविता का शीर्षक है "मुसलसल ख़्वाब"।

"मुसलसल ख़्वाब" कविता स्मृति, कल्पना और संस्कृति का सुंदर समन्वय है। सपनों की निरंतरता और नानी की कहानियों की निरंतरता के बीच एक मार्मिक संबंध इसमें देखने लायक है।

यह कविता पाठक को उसके अपने बचपन और दादी-नानी की स्मृतियों की ओर ले जाती है, साथ ही यह विश्वास दिलाती है कि प्रेम संबंध मृत्यु के बाद भी किसी न किसी रूप में जीवित रहते हैं।

कविता में एक शब्द "गोड़सी" आया है जो मेरे लिये तो नया है ही, इसे अर्न्तजाल पर तलाशने का प्रयास भी व्यर्थ गया। शायद यह गोरसी (अंगीठी) का स्थानीय रूप है। गोरसी, जो पहले गोरस (गाय का दूध) गरम करने और रखने के लिये उपयोग में ली जाती थी और शायद अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रयोग व्यवहार में हो।

कविता आत्मीयता से भरी संवादात्मक शैली में है। कविता में बचपन की नानी की कहानियाँ और वर्तमान के सपनों का अद्‌भुत संयोग अतीत की सुखद स्मृतियों के वर्तमान में पुनर्जीवन के समान है। इसमें पीढ़ीगत संबंधों की कोमलता के साथ-साथ पारिवारिक बंधनों और सांस्कृतिक विरासत का खूबसूरत चित्रण भी है।

नानी की कहानी कहने की कला की बात करते हुए "क्या मजाल, जो एक सूत भी इधर या उधर से शुरू हो" के माध्यम से नानी की कहानी कहने की कला के प्रति विशेष सम्मान प्रदर्शित होता है जो संस्कारों का परिचायक है।

केंद्रीय रूपक: "मुसलसल ख़्वाब- नानी का क़िस्सा" बड़ी ख़ूबसूरती से सपने और कहानी का समानांतर संबंध स्थापित करता है।

इसी प्रकार "ख़्वाब भी अपना छूटा सिरा पकड़ लेता है, आगे की कहानी कहने लगता है नानी की तरह" सपनों की निरंतरता और नानी की कहानियों की निरंतरता का सादृश्य प्रभाव देते हुए दो अलग-अलग अनुभवों में एकरूपता स्थापित करता है।

अलाव और गोड़सी के बिंब सामूहिकता, गर्मजोशी और पारिवारिक एकता के माध्यम से सुरक्षा और आत्मीयता का भाव उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार बुनावट और जुड़ाव का दृश्य चित्रण प्रभाव लिये "जो एक सूत भी इधर या उधर से शुरू हो" नानी की कहानी की निरंतरता और अखंडता का बिंब सूत के माध्यम से बनता है। इसी निरंतरता में यथार्थ और कल्पना के सहअस्तित्व का प्रभाव लिये "बीच में बस खाना खाने के लिए रुकता था कथा-प्रवाह" में कथा-प्रवाह का बिंब दैनिक गतिविधियों और कहानी कहने की कला का समन्वय प्रस्तुत करता है।

कविता "नानी की कहानी कहने की शैली" अतीत की स्मृति से अतीत और वर्तमान के समानांतर संबंध स्थापित करते हुए नानियों का मुसलसल ख़्वाब बनने के काल्पनिक निष्कर्ष तक ले जाती है।

"मुसलसल" शब्द के केंद्रीय महत्त्व, गोड़सी जैसा स्थानीय शब्द देसी और उर्दू शब्दों का सहज समन्वय रखते हुए शब्द चयन की सांस्कृतिक समृद्धि दर्शाता है।

"शायद दुनिया की सारी नानियाँ मरने के बाद मुसलसल ख़्वाब बन जाती हैं" मृत्यु को अंत न मानकर एक नए रूप में निरंतर परिवर्तन का विचार प्रस्तुत करती है।

पंचम भाग 'प्रतिरोध' की प्रथम कविता का शीर्षक है "यह समय"।

"यह समय" कविता समकालीन सामाजिक यथार्थ का शक्तिशाली दस्तावेज़ है। कवि ने डिजिटल युग की सामूहिक मानसिकता और स्वतंत्र व्यक्तित्व के टकराव को बहुत ही सटीक ढंग से चित्रित किया है।

इस कविता के विशेष उल्लेखनीय बिंदु सोशल मीडिया के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण, धर्म और राजनीति के व्यावसायीकरण पर करारा प्रहार और "भीड़ में कंधे रगड़ते हुए" के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की विवशता का शक्तिशाली बिंब प्रस्तुत करना है।

यह कविता पाठक को आत्ममंथन के लिए विवश करती है कि कहीं हम भी इस भीड़ का हिस्सा तो नहीं बनते जा रहे, जहाँ व्यक्तिगत सोच और स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं रह गया है।

कविता जहाँ एक ओर "मुफ़ीद" (अनुकूल), "विशेषण", "छवियों का समुद्र"

जैसी सामाजिक-मनोवैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग करती है वहीं इसमें "अलग रह जाने का भय", "पीछे छूट जाने का भय", "वह नहीं कर पाने का भय" आदि भय के प्रकारों का सूक्ष्म वर्गीकरण कर व्याप्त भयों का स्पष्ट नामकरण किया गया है।

जहाँ "फ़र्क़ इस बात से पड़ता है कि आप वह कर रहे हो या नहीं जो बाक़ी सारी दुनिया कर रही है" के माध्यम से प्रचलित "कुछ छूट जाने का डर" की सामाजिक अनुरूपता के दबाव के मनोविज्ञान का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वहीं "यह समय बहुत मुफ़ीद होता है धर्म और राजनीति दोनों के लिए" के माध्यम से इसी सामूहिक भय के राजनीतिक उपयोग पर प्रहार कर राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है। यह और अधिक प्रबल हो जाता है "दोनों का कारोबार चलता है भीड़ से" के माध्यम से।

कविता में सीधे और बिना लाग-लपेट के यथार्थ का वर्णन करते हुए पाठक को सीधे संबोधित करने वाली शैली अपनाई गयी है।

कविता का प्रमुख रूपक "समुद्र" है जिसका "छवियों का समुद्र, लाखों छवियों का उफनता समुद्र" में उपयोग करते हुए सोशल मीडिया की अतिचित्रण संस्कृति से डिजिटल बाढ़ के भयावह स्वरूप का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार "दोनों का कारोबार चलता है भीड़ से" में कारोबार रूपक धर्म और राजनीति के व्यावसायीकरण के परिणाम 'आस्था और नेतृत्व के मूल्यह्रास' को प्रस्तुत किया गया है।

"भीड़ में कंधे रगड़ते हुए चलने का समय है" में "भीड़" बिंब व्यक्तित्व के विलोपन और सामूहिकता का शक्तिशाली दृश्य प्रस्तुत करता है और "हाथों को आसमान की तरफ़ उठाए चुनौतीपूर्ण मुद्रा" में चुनौतीपूर्ण मुद्रा का बिंब ईश्वरीय हस्तक्षेप के बिना असंभव प्रतीत होती व्यक्तिवादिता के प्रति विद्रोह का दृश्य और "छवियाँ... जिनमें कोई 'यह' कर रहा है कोई 'वह' कर रहा है" में छवियों का बिंब, सोशल मीडिया की तुलनात्मक संस्कृति का सटीक चित्रण सार्थक बिंब-योजना प्रस्तुत करते हैं।

कविता तार्किक क्रम में "हम भय को जी रहे हैं" द्वारा भय की सार्वभौमिकता और भय के प्रकारों द्वारा विस्तृत वर्णन के साथ भय के कारण का विश्लेषण "छवियों का समुद्र" के द्वारा करती है और व्यक्तिगत पसंद के अवमूल्यन रूपी सामाजिक प्रभाव और इस सबसे धर्म-राजनीति का लाभ होने से होती हुई भीड़ में विलीन होने की बाध्यता के निष्कर्ष तक पहुँचती है।

यह कविता समग्र रूप से तर्कपूर्ण और विचारोत्तेजक अभिव्यक्ति है।

"अब इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आपको क्या अच्छा लगता है" में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अवमूल्यन का कटु सत्य सशक्त अभिव्यंजना है।

संग्रह के पाँचों भागों की प्रथम कविता पर प्रस्तुति अधूरी रहेगी यदि अन्तिम कविता "तुम्हारी चुप" पर बात न रखी जाये।

"तुम्हारी चुप" कविता आस्था के संकट का अत्यंत संक्षिप्त परंतु गहन चित्रण है। इसमें मानवीय संबंधों की भाषा में ईश्वर और मनुष्य के बीच के एकतरफ़ा संवाद को भी प्रस्तुत किया है और संग्रह की भूमिका को देखें तो यह कविता एक भिन्न रूप भी लेती है जो निष्प्राण पिता से पुत्र के संवाद का है।

इसके विशेष उल्लेखनीय बिंदु प्रारंभ में ईश्वर का सीधा उल्लेख न करते हुए संकेतों की कला का उपयोग अंतिम पंक्ति में अचानक ईश्वर का संबोधन का नाटकीय मोड़ और सहायता की अपेक्षा और ईश्वरीय मौन के द्वंद्व की विडंबना हैं।

जहाँ एक ओर यह कविता पाठक को उस मूलभूत प्रश्न से सामना कराती है जो हर आस्तिक के मन में कभी न कभी उठता है - "हे ईश्वर, संकट के समय तुम चुप क्यों रहते हो?" वहीं निष्प्राण पिता से पुत्र के संवाद में "ऐ अदृश्य ईश्वर" का प्रयोग जीव में समग्र चेतना के संचार को दर्शाता है। संग्रह की भूमिका और प्रथम कविता को देखें तो इस संग्रह का अंत निष्प्राण पिता से पुत्र के संवादरूपी कविता से होना अधिक तार्किक लगता है।

इस कविता का केन्द्रीय शब्द "चुप" है और जहाँ "प्रतीक्षा" शब्द से सामूहिक अपेक्षा का भाव निर्मित होता है वहीं "अनुमान" अनिश्चितता और जिज्ञासा का सूचक है। "नहीं दे रहा", "नहीं हो रहा", "हो ही नहीं" अनुपस्थिति और उदासीनता के भाव को सुदृढ़ करते हैं।

कविता में मौन की विडंबना, अपेक्षा और निराशा के बीच का तनाव, आस्था का संकट के साथ-साथ "क्या अनुमान लगाया जाये तुम्हारे बारे में" में जहाँ ईश्वर के अस्तित्व और उदासीनता पर प्रश्नचिह्न दिखता है वहीं निष्प्राण पिता से सीधा-सीधा संवाद भी दिखता है।

एक ओर "क्या अनुमान लगाया जाये तुम्हारे बारे में" पाठक को सोचने पर मजबूर करने वाली अभिव्यक्ति है तो "ऐ अदृश्य ईश्वर...।" का नाटकीय अंत अचानक पूरी कविता के अर्थ को बदल देता है। "तुम उस समय बिलकुल चुप थे जब बहुत आवश्यक था तुम्हारा बोलना" के रूप में आवश्यकता के समय की चुप्पी का मार्मिक चित्रण है।

"जैसे तुम वहाँ हो ही नहीं" में निहित अनुपस्थिति का भाव अदृश्यता को दृश्यमान बनाता है। ऐसे ही "जैसे तुम्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा है" में निहित अनदेखी का बिंब उदासीनता को दर्शाते हुए मानवीय पीड़ा और दिव्य उदासीनता का विरोधाभास का प्रभाव छोड़ता है। "कि तुम गूँगे हो ...?" में गूँगेपन का बिंब अभिव्यक्तिहीनता और संवादहीनता की तीव्र अनुभूति कराता है।

"तुम चुप थे" में स्थिति का वर्णन, "बहुत आवश्यक था" में संदर्भ का निर्माण, "तुम चुप रहे" में प्रतिक्रिया का अभाव, "जैसे कुछ हो ही नहीं रहा" में उदासीनता का चित्रण, "क्या अनुमान लगाया जाये" में प्रश्न का उदय और "ऐ अदृश्य ईश्वर" में नाटकीय समापन द्वारा क्रमिक विकास देखते ही बनता है।

कविता संग्रह "उम्मीद की तरह लौटना तुम" एक ऐसी साहित्यिक कृति है जो व्यक्तिगत शोक को सार्वभौमिक दार्शनिक चिंतन में रूपांतरित करने का सफल प्रयास करती है। पिता की मृत्यु के बाद तीन-चार माह की अवधि में रची गई संग्रह की अधिकांश

कविताओं में दु:ख की अभिव्यक्ति मात्र नहीं, बल्कि जीवन, मृत्यु और अस्तित्व के गूढ़ प्रश्नों की खोज है।

रचनाधर्मिता और कलात्मक संवेदना:

पंकज सुबीर की रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी विशेषता है सूक्ष्म अवलोकन और गहन मनोवैज्ञानिक दृष्टि। "अचानक" कविता में वे इस भ्रम को तोड़ते हैं कि कोई परिवर्तन अचानक होता है। "थोड़ा-थोड़ा" की आवृत्ति के माध्यम से क्रमिक परिवर्तन के सिद्धांत को रेखांकित करना उनकी कलात्मक परिपक्वता को दर्शाता है। "ब्लैक-होल" और "पूर्व-पीठिकाएँ" जैसे रूपकों का प्रयोग उनकी अंतर्विषयक दृष्टि का परिचायक है।

दर्शन और काव्यभावना का समन्वय:

इस संग्रह की विशिष्टता दर्शन और काव्यभावना के अद्‌भुत समन्वय में निहित है। "शेष प्रेम" कविता में वे प्रेम को देह की सीमाओं से मुक्त करके शाश्वत आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करते हैं। गणितीय अवधारणा "शेष" का काव्यात्मक उपयोग उनकी मौलिक चिंतनशीलता को दर्शाता है। भारतीय दर्शन के अनुसार मृत्यु को देह का अवसान मानने का विश्वास इसमें प्रभावी रूप से व्याप्त है।

शिल्प-वैविध्य और भाषायी सामर्थ्य:

सुबीर की शिल्प-कुशलता उनकी कविताओं को विशिष्ट बनाती है। "अगला मौसम" में मौसम के बदलाव के माध्यम से मानव जीवन की नश्वरता का चित्रण करना उनकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। "गोड़सी" जैसे स्थानीय शब्दों के प्रयोग से उनकी भाषा में सांस्कृतिक समृद्धि आई है। "मुसलसल ख़्वाब" में स्मृति और कल्पना का समन्वय उनके शिल्प-वैविध्य को प्रदर्शित करता है।

सामाजिक सरोकार और समकालीन चिंताएँ:

"यह समय" कविता में सुबीर समकालीन सामाजिक यथार्थ का शक्तिशाली चित्रण करते हैं। डिजिटल युग की सामूहिक मानसिकता, धर्म और राजनीति के व्यावसायीकरण पर उनकी क़लम ने सटीक प्रहार किया है। "भीड़ में कँधे रगड़ते हुए" का बिंब आधुनिक मनुष्य की विवशता को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

आशावादी दृष्टिकोण:

संग्रह का शीर्षक "उम्मीद की तरह लौटना तुम" ही इसकी आशावादी दृष्टि को इंगित करता है। कवर पृष्ठ पर पीतवर्णी पुष्पों और सुनहरे "उम्मीद" शब्द का संयोजन शोक के अंधकार में आशा की किरण का प्रतीक है। "तुम्हारी चुप" कविता में की गई वार्ता आस्था के संकट को दर्शाते हुए भी जीवन के प्रति आस्था बनाए रखती है।

प्रस्तुति हेतु कविताओं का चयन

किसी पुस्तक के विषय में विचार प्रस्तुत करने की मर्यादा को विचार में लेते हुए मेरे लिये कठिन था कि किन कविताओं को चर्चा में लिया जाये। संग्रह में पाँच भाग प्रवेश, प्रकृति, प्रेम, प्रारूप और प्रतिरोध हैं। बहुत विचार कर मुझे उचित लगा के प्रत्येक भाग की प्रथम कविता पर विस्तार से बात करना पर्याप्त होगा लेकिन संग्रह की अंतिम कविता का समावेश भी मुझे आवश्यक लगा अत: वह भी चर्चा के लिये सम्मिलित कर ली है। शायद मेरा इतना प्रयास संग्रह की अन्य कविताओं को उस दृष्टि से देखने में सहायक हो सके जो रचनाकार की होती है और जिस तक पहुँचने का समय नहीं दे पाने से अधिकांश पाठक रचनात्मकता के पूर्ण सौन्दर्य से वंचित रह जाते हैं।

निष्कर्ष:

यह संग्रह निस्संदेह समकालीन हिंदी काव्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। व्यक्तिगत दु:ख को सार्वभौमिक सत्य में रूपांतरित करने की क्षमता, दार्शनिक गहराई और काव्यात्मक सामर्थ्य का अद्‌भुत समन्वय इसकी विशेषता है। यह संग्रह पाठकों को न केवल विचार के लिए प्रेरित करता है, बल्कि जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। स्मृतियों, प्रेम और आस्था के माध्यम से मृत्यु को जीवन का अंत न मानने का दर्शन इस संग्रह को एक विशिष्ट साहित्यिक कृति बनाता है।

000

लेखकों से अनुरोध

'शिवना साहित्यिकी' में सभी लेखकों का स्वागत है। अपनी मौलिक, अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जाएँगी। रचना को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। बहुत अधिक लम्बे पत्र तथा लम्बे आलेख न भेजें। अपनी सामग्री यूनिकोड अथवा चाणक्य फॉण्ट में वर्डपेड की टैक्स्ट फ़ाइल अथवा वर्ड की फ़ाइल के द्वारा ही भेजें। पीडीऍफ़ या स्कैन की हुई जेपीजी फ़ाइल में नहीं भेजें, इस प्रकार की रचनाएँ विचार में नहीं ली जाएँगी। रचनाओं की साफ़्ट कॉपी ही ईमेल के द्वारा भेजें, डाक द्वारा हार्ड कॉपी नहीं भेजें, उसे प्रकाशित करना अथवा आपको वापस कर पाना हमारे लिए संभव नहीं होगा। रचना के साथ पूरा नाम व पता, ईमेल आदि लिखा होना ज़रूरी है। आलेख, कहानी के साथ अपना चित्र तथा संक्षिप्त सा परिचय भी भेजें। पुस्तक समीक्षाओं का स्वागत है, समीक्षाएँ अधिक लम्बी नहीं हों, सारगर्भित हों। समीक्षाओं के साथ पुस्तक के कवर का चित्र, लेखक का चित्र तथा प्रकाशन संबंधी आवश्यक जानकारियाँ भी अवश्य भेजें। एक अंक में आपकी किसी भी विधा की रचना (समीक्षा के अलावा) यदि प्रकाशित हो चुकी है तो अगली रचना के लिए तीन अंकों की प्रतीक्षा करें। एक बार में अपनी एक ही विधा की रचना भेजें, एक साथ कई विधाओं में अपनी रचनाएँ न भेजें। रचनाएँ भेजने से पूर्व एक बार पत्रिका में प्रकाशित हो रही रचनाओं को अवश्य देखें। रचना भेजने के बाद स्वीकृति हेतु प्रतीक्षा करें, बार-बार ईमेल नहीं करें, चूँकि पत्रिका त्रैमासिक है अत: कई बार किसी रचना को स्वीकृत करने तथा उसे किसी अंक में प्रकाशित करने के बीच कुछ अंतराल हो सकता है।

धन्यवाद

संपादक

shivnasahityiki@gmail.com

(शोध आलेख)

समकालीन कथा साहित्य में पंकज सुबीर का योगदान

डॉ. अमित कुमार

नई सदी में भ्रष्टाचार एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभरा है, जिसके परिणामस्वरूप अन्याय और शोषण अपने चरम पर हैं। रिश्वत, नौकरी या पदोन्नति के लिए शोषण जैसी प्रवृत्तियाँ वर्तमान समाज के कटु यथार्थ को उजागर करती हैं। नई सदी का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश पूर्ववर्ती युग की तुलना में अधिक जटिल है। वैश्वीकरण के प्रभाव में नई पीढ़ी का अनुभव-जगत् बदला है, इसलिए उसकी रचनाएँ भी बीसवीं सदी से भिन्न धरातल पर खड़ी दिखाई देती हैं।

भूमंडलीकरण ने 'सारा विश्व हमारा है' की अवधारणा दी, लेकिन इसके साथ आतंकवाद, नक्सलवाद, अलगाववाद और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ भी बढ़ीं। इस संबंध में एंथोनी गिड्डन कहते है कि "विभिन्न लोगों और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुई पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता सामाजिक और आर्थिक संबंधों में होती है। इसमें समय और स्थान सिमट जाते हैं।"1 आधुनिकता ने जिस सुनहरे भविष्य का सपना दिखाया था, उसका मोहभंग नई सदी के साहित्य में स्पष्ट है। जड़ों से कटे वृक्ष की तरह मनुष्य भी अपने मूल्यों से दूर होकर अंदर से सूखता जा रहा है।

वरिष्ठ रचनाकार सुमन केसर इस संबंध में कहती है कि "मानव सभ्यता प्रकाश की गति से ही आगे बढ़ रही है। सब कुछ उलट-पुलट करती हुई हर चीज़ को देखने का नज़रिया बदल रहा है, वस्तु से लेकर भावबोध तक का। अब लगता है कुछ भी दूर नहीं- हाथ बढ़ाते ही कुछ भी मिल जाने की संभावना इतनी बढ़ गई है कि 'मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहो' अब पकड़ की हद में है। पानी में छाया रूप में नहीं बल्कि इस चंद्रमा पर चलना उसे रौदना तक संभावना की हद में है और यहीं से शुरू होती है- 21वीं सदी में लेखन की चुनौतियाँ भी और ख़तरे भी।"2 21वीं सदी में सभ्यता तीव्र गति से आगे बढ़ रही है, जिससे वस्तुओं और भावबोध के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है। असंभव लगने वाली चीज़ें भी आज संभव प्रतीत होने लगी हैं, और यहीं से इस सदी के लेखन की चुनौतियाँ और ख़तरे जन्म लेते हैं। इस प्रकार नई सदी एक ओर आधुनिकता और वैज्ञानिक उपलब्धियों का विस्तार है, तो दूसरी ओर सामाजिक समस्याओं और कुंठाओं का यथार्थ भी। समकालीन साहित्य इन्हीं द्वंद्वों को विषय बनाकर मानवीय चेतना को जाग्रत करता है, जिससे आज का साहित्य अधिक जीवंत, समावेशी और आशावादी रूप में सामने आता है।

नई सदी के उपन्यासकारों ने समकालीन जन-जीवन को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है और उसे यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यास समाज में व्याप्त शोषण, दमन और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज़ बनते हैं तथा साहित्य को समाज का दर्पण बना देते हैं। आज का समय विमर्शों का समय है, जहाँ स्त्री, दलित, आदिवासी, किसान, मज़दूर, किन्नर, वृद्ध और विकलांग जैसे अनेक विमर्श साहित्य में प्रमुखता से उभरे हैं। समकालीन उपन्यासकारों ने इन विमर्शों के माध्यम से समाज की जटिल सच्चाइयों को उजागर किया है।

नई सदी के कथाकारों में डॉ. सुधा ओम ढींगरा, शिवमूर्ति, संजीव, अब्दुल बिस्मिल्लाह, सुशीला टाकभौरे, शहरयार, राजू शर्मा, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, अखिलेश और रणेंद्र जैसे रचनाकारों के उपन्यास समकालीन यथार्थ को उजागर करते हैं। इन रचनाओं में स्त्री, किसान, मज़दूर, आदिवासी और हाशिए के समाज की पीड़ा तथा उनके संघर्षों को प्रमुखता से स्थान मिला है। भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के प्रभाव में आदिवासियों का विस्थापन, किसानों की बदहाली और मजदूरों का शोषण इन उपन्यासों के केंद्रीय विषय हैं, जिससे आम जन की सामाजिक अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान संकटग्रस्त होती दिखाई देती है।

इसी परंपरा में पंकज सुबीर नई सदी के एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार के रूप में सामने आते हैं। उनके उपन्यास 'ये वो सहर तो नहीं...', 'अकाल में उत्सव' और 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था' समकालीन समाज की जटिल समस्याओं जैसे संप्रदायिकता, स्त्री-शोषण, किसान और मज़दूर जीवन को गहराई से प्रस्तुत करते हैं। किसान की फसल नष्ट होने पर मुआवजा न मिलने की समस्या को पंकज सुबीर अपने उपन्यास में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हैं–

डॉ. अमित कुमार
(सहायक प्राध्यापक) हिन्दी विभाग,
मॉडल कॉलेज राजमहल, साहिबगंज,
झारखंड - 816116
मोबाइल- 7720955627
ईमेल- dr.amitkumar4391@gmail.com

"लेकिन सर किसान तो सरकार के ही भरोसे हैं न ? अगर सरकार उसको मदद नहीं करेगी तो कौन करेगा ? खेतों में खड़ी फ़सल अगर बर्बाद हो गई तो किसान क्या करें क्या मर जाए?"3

पंकज सुबीर का लेखन ग्रामीण और शहरी जीवन दोनों से गहरे जुड़ा हुआ है। वे लोक-जीवन, स्त्री-स्थिति, दलित उत्पीड़न और किसान समस्याओं को निरंतर अपनी रचनाओं का विषय बनाते हैं। उनका उपन्यास 'अकाल में उत्सव' किसान जीवन का मार्मिक और यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करता है। रामप्रसाद के चरित्र के माध्यम से लेखक भारतीय किसान की दयनीय स्थिति, छोटी जोत, क़र्ज़, मौसम की अनिश्चितता और टूटती उम्मीदों को प्रतीकात्मक रूप में उभारते हैं। किसान की पत्नी के गहनों का धीरे-धीरे बिकना उसकी समाप्त होती आशाओं का संकेत बन जाता है।

'अकाल में उत्सव' में किसान जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं जैसे फसल नष्ट होने पर मुआवज़ा न मिलना, सरकारी उदासीनता, बाज़ारवाद और शोषण का गहन चित्रण है। यह उपन्यास आधुनिक, सुविधा संपन्न समाज के बीच किसान और मज़दूरों की पशुवत् स्थिति पर तीखा प्रश्न उठाता है और पाठक को आत्ममंथन के लिए विवश करता है।

इस प्रकार 'अकाल में उत्सव' किसान जीवन की त्रासदी को उजागर करने के साथ-साथ आशा और सामूहिक संघर्ष का संकेत भी देता है। उपन्यास आत्महत्या की ओर धकेले जा रहे किसान की वास्तविक परिस्थितियों को सामने लाकर सामाजिक चेतना को जाग्रत करता है और किसान जीवन के पुनर्निर्माण की आवश्यकता पर बल देता है।

पंकज सुबीर का उपन्यास 'ये वो सहर तो नहीं' राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ का सशक्त दस्तावेज़ है। यह कृति 1947 से 2007 के बीच के समय को केंद्र में रखकर उन मूल्यों की पड़ताल करती है, जिनके लिए स्वतंत्रता आंदोलन हुआ था। उपन्यास में यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि सत्ता और प्रशासन में औपनिवेशिक मानसिकता अब भी विद्यमान है। समांतर कालखंडों में चलती कथाएँ इस उपन्यास को एक व्यापक समय-समीक्षा का रूप देती हैं। चरित्र-चित्रण इतना जीवंत है कि पात्र वास्तविक जीवन के लगते हैं, जो लेखक की सामाजिक समझ और गहन अध्ययन को प्रमाणित करता है।

'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज़ था' पंकज सुबीर का तीसरा उपन्यास है, जिसमें फैंटेसी के माध्यम से साम्प्रदायिकता जैसे ज्वलंत विषय पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। ख़ैरपुर शहर में घटित दंगे की पृष्ठभूमि में यह उपन्यास बताता है कि सांप्रदायिक हिंसा के पीछे प्राय: व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वार्थ छिपे होते हैं। यद्यपि दंगे की आग पूरे शहर में फैलती है, फिर भी लेखक आशा और मानवीयता का संकेत देता है। यह कृति केवल प्रश्न नहीं उठाती, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से समाधान की दिशा भी सुझाती है। सांप्रदायिकता पर यह उपन्यास एक तीखा और सार्थक प्रहार है।

पंकज सुबीर की कथा-प्रविधि परंपरा से जुड़ी हुई है, किंतु उसमें आधुनिक प्रयोगशीलता भी दिखाई देती है। वे पाठकों को कलात्मक भ्रमों के माध्यम से कथा से बाँधे रखते हैं और अंत तक एक गहन संवेदनात्मक प्रभाव छोड़ते हैं। उनके साहित्य में ग्रामीण और शहरी जीवन की जटिलताओं का संतुलित चित्रण मिलता है। उनका संघर्षपूर्ण जीवन अनुभव उनकी रचनाओं में यथार्थ और संवेदना के रूप में उभरता है।

उनकी कृतियों का केंद्र ग्रामीण जीवन है, जहाँ स्त्री, दलित, किसान और मज़दूर जैसे शोषित वर्ग प्रमुखता से उपस्थित हैं। वर्ण और जाति आधारित सामाजिक विषमताओं, दलित शोषण और मज़दूर वर्ग की असंगठित स्थिति को वे पूरी ईमानदारी से उजागर करते हैं। पंकज सुबीर के यहाँ साहित्य सामाजिक संघर्ष और चेतना का माध्यम बनता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संदर्भ में वे बाज़ारवाद और पूँजीवादी नीतियों की आलोचना करते हैं। भूमंडलीकरण के बाद कृषि संकट, बेरोज़गारी, पलायन और किसानों की आत्महत्या जैसी समस्याएँ और गहरी हुई हैं। गिरती आय, बढ़ता क़र्ज़, महँगी कृषि सामग्री और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दबाव खेतिहर समाज को तोड़ रहा है। लेखक इन समस्याओं के लिए सरकारी नीतियों को ज़िम्मेदार मानते हुए आर्थिक असमानता के ख़तरे की ओर संकेत करते हैं।

कुल मिलाकर, पंकज सुबीर का साहित्य समकालीन समाज की सच्चाइयों को निर्भीकता से सामने लाता है। उनकी रचनाओं में पूँजीवाद, ग़रीबी, स्त्री, किसान, मज़दूर और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं का व्यापक चित्रण मिलता है। भाषा, शिल्प और संवेदना के तीनों स्तरों पर उनके उपन्यास प्रभावशाली हैं और आज के यथार्थ को गहराई से अभिव्यक्त करते हैं। सुबीर के बारे में बताते हुए सुशील सिद्धार्थ कहते हैं कि- "सन 2000 के बाद उभरे और प्रतिष्ठित हुए कथाकारों में पंकज सुबीर का नाम प्रमुख है। वे ऐसे समर्थ कथाकार हैं जो कहानी और उपन्यास के समान, समानांतर और समर्थ समझ रखते हैं। पंकज का पहला उपन्यास था 'ये वो सहर तो नहीं'। इसे भारतीय ज्ञानपीठ ने नवलेखन पुरस्कार से नवाज़ा था। इस उपन्यास ने यह बता दिया था कि युवा रचनाकारों में पंकज ऐसे लेखक हैं जिनके रचनात्मक संकल्प दूर तक जाएँगे। इसलिए जब 'अकाल में उत्सव' उपन्यास आया और आते ही इसने पाठकों को आंदोलित कर दिया, इसके कई संस्करण हुए तब भरोसा हुआ कि पंकज समकालीन कथा लेखन में एक संकल्प सिद्ध कथाकार है।"4

नई सदी का साहित्य अपने समकाल से गहरे और सार्थक सरोकारों का साहित्य है। यह मनुष्य की वर्तमान जटिल परिस्थितियों, उसकी घटती स्वतंत्रता और अदृश्य बंधनों को पहचानता है। नई सदी के रचनाकार इन मानव-विरोधी शक्तियों के प्रति सजग हैं और अपने लेखन के माध्यम से उनका प्रतिरोध करते हुए मनुष्य की मुक्ति और स्वतंत्रता की आकांक्षा को स्वर देते हैं। यद्यपि राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो चुकी है, किंतु सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर मनुष्य पहले से अधिक अस्वतंत्र हुआ है और यही नई सदी के साहित्य की केंद्रीय चिंता है।

नई सदी की हिन्दी कहानी वर्तमान जन-जीवन से जुड़कर मानवीय चेतना को जागृत करती है। ये कहानियाँ अपने समय के भयावह यथार्थ, विसंगतियों और अंतर्विरोधों से पाठक को रूबरू कराती हैं। यथार्थ का यह चित्रण किसी मानसिक कल्पना से नहीं, बल्कि समय के ठोस अनुभवों से प्रेरित है। इस दौर में कहानी ने वैयक्तिकता और सामाजिकता के संतुलन को पुनः स्थापित किया है, जहाँ व्यक्ति के माध्यम से व्यापक सामाजिक यथार्थ अभिव्यक्त होता है।

विज्ञान, तकनीक और बाज़ारवाद ने जहाँ नई संभावनाएँ खोली हैं, वहीं मानवीय संबंधों और सामूहिक अस्मिता को भी संकट में डाला है। पूँजीवाद, उपभोक्तावाद और धार्मिक असहिष्णुता नई सदी की कहानियों के प्रमुख विषय हैं। समकालीन कहानीकार इन शक्तियों को तोड़ने और मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करते हैं। लोक-जीवन, लोक-संस्कृति, लोक-मानसिकता से जुड़ाव आज भी कहानी की आत्मा बना हुआ है।

इस परिप्रेक्ष्य में संजीव, शिवमूर्ति, हृदयेश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, उदय प्रकाश, तेजेंद्र शर्मा, अखिलेश, कमल कुमार, राजू शर्मा, पंकज मित्र, प्रियदर्शन, गौरीनाथ, राकेश मिश्र, कुणाल सिंह और तरुण भटनागर जैसे कथाकारों की कहानियाँ समकालीन समाज की जटिल सच्चाइयों को उजागर करती हैं। इनमें किसान, मज़दूर, स्त्री, दलित, आदिवासी और निम्न-मध्यवर्ग के संघर्ष, शोषण और प्रतिरोध का सशक्त चित्रण मिलता है।

समकालीन हिन्दी कहानी में पंकज सुबीर का स्थान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को गहराई से पकड़ती हैं और विषय को केंद्र में रखकर व्यापक कथ्य-वृत्त रचती हैं। उनकी कथा-कल्पना जीवन की सच्चाइयों को सहज, कौतुहलपूर्ण और संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करती है। किसान आत्महत्या, बाज़ारवादी संस्कृति, सांप्रदायिकता, स्त्री शोषण, मीडिया की भूमिका और सत्ता-साहित्य के संबंध जैसे विषय उनकी कहानियों में प्रमुख हैं।

'कुफ्र', 'घेराव', 'कसाब.गांधी @ यरवदा.इन', 'इन दिनों पाकिस्तान में रहता हूँ', 'आंसरिंग मशीन', 'तमाशा' और 'सुबह अब होती है... अब होती है... अब होती है' जैसी कहानियाँ धर्म, राजनीति, हिंसा, पितृसत्ता और मानवीय संकटों पर तीखा प्रहार करती हैं। विशेष रूप से स्त्री जीवन की त्रासदी और उसकी मुक्ति की आकांक्षा को सुबीर अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ न केवल यथार्थ को उद्घाटित करती हैं, बल्कि पाठक को आत्मविश्लेषण और सामाजिक हस्तक्षेप के लिए प्रेरित भी करती हैं।

इस उत्तर-आधुनिक दौर में, जब साहित्य और संस्कृति पर ही संकट है, पंकज सुबीर का कथा-साहित्य मानवीय संवेदना, लोकजीवन और सामाजिक उत्तरदायित्व की सशक्त अभिव्यक्ति बनकर सामने आता है। उनकी कहानियाँ नई सदी की हिन्दी कहानी को न केवल वैचारिक गहराई देती हैं, बल्कि उसे एक ज़रूरी सामाजिक हस्तक्षेप के रूप में भी स्थापित करती हैं। चित्रा मुद्गल इनकी कहानियों के बारे में कहती है कि- "पंकज सुबीर की कहानियाँ, मील के शिलाखंड को संस्पर्शित करने का एक ऐसा उल्लेखनीय प्रयास है जिसे नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता।"5

नई सदी के कथा-साहित्य में पंकज सुबीर का योगदान उल्लेखनीय है। वैश्वीकरण और बाज़ारवाद से उत्पन्न चुनौतियों को उन्होंने अपनी रचनाओं का केंद्रीय विषय बनाया और समकालीन कथा-साहित्य को वैचारिक स्पष्टता प्रदान की। उनकी रचनाएँ किसान, मज़दूर और आम जनता के जीवन-संघर्षों से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

पंकज सुबीर के लेखन में रचनात्मक ईमानदारी, सशक्त कथन और मानवीय संवेदना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनकी कहानियाँ केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों को समग्रता में प्रस्तुत करती हैं। वरिष्ठ कथाकार महेश कटारे उचित ही लिखते हैं कि- "पंकज सुबीर मात्र आम भारतीय जन की विडंबना ही नहीं दिखाते बल्कि उसके काइंयापन को भी दर्ज करते हैं और विडंबना भी। पंकज सुबीर अपनी रचनाओं में उन सभी धार्मिक-सामाजिक पदों को उजागर कर देते हैं।"6

उनका साहित्य मूलतः राजनीतिक चेतना से प्रेरित है, जिसमें धर्म और राजनीति के गठजोड़ पर तीखे प्रश्न उठाए गए हैं। वे जनता में विश्वास रखते हुए उसकी कमजोरियों और अंतर्विरोधों को भी उजागर करते हैं।

विमर्शों के इस दौर में पंकज सुबीर का साहित्य दलित, स्त्री, किसान, मज़दूर और अन्य वंचित वर्गों की पीड़ा, शोषण और असमानता के विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर बनकर उभरता है। वे आर्थिक विषमता, सरकारी नीतियों की विफलता और बाज़ारवादी संस्कृति के दुष्परिणामों को प्रभावी ढंग से सामने रखते हैं। इस प्रकार पंकज सुबीर का कथा-साहित्य भारतीय लोकजीवन और मानवीय मूल्यों से जुड़ते हुए नई सदी के साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण और सशक्त हस्तक्षेप सिद्ध होता है।

000

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1.दोषी. एस. एल., आधुनिकता-उत्तरआधुनिकता एवं नवासमाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. सं.- 123

2.सं.- राजेश अग्रवाल, हिन्दी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. सं.- 07

3.पंकज सुबीर, अकाल में उत्सव, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य प्रदेश, पृ. सं.- 107

4.डॉ. सुधा ओम ढींगरा, विमर्श-अकाल में उत्सव, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य प्रदेश, पृ. सं.- 19

5.पंकज सुबीर, कसाब . गांधी @ यरवदा .इन, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य प्रदेश, पृ. सं.- कवर पेज

6.सं.- राकेश कुमार, विमर्श दृष्टि (पंकज सुबीर की कहानियाँ), शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य प्रदेश, पृ. सं.-15

शिवना साहित्य समागम में लोकार्पित शिवना प्रकाशन के नए सेट में शामिल 25 पुस्तकें

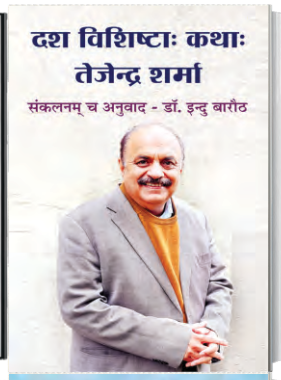

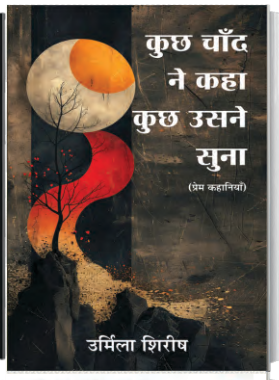

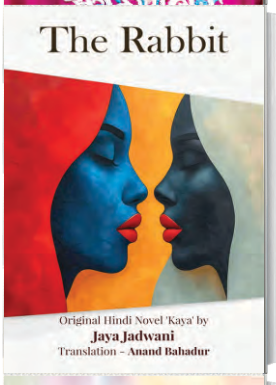

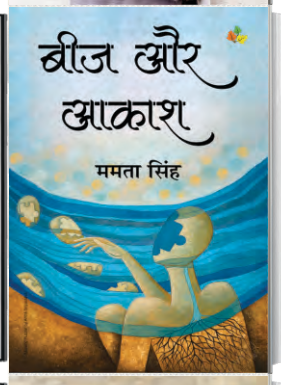

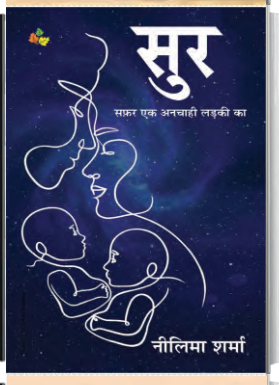

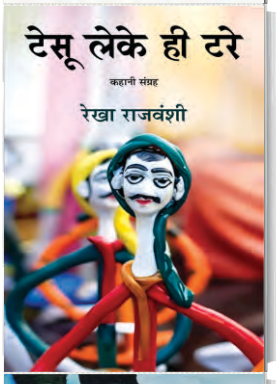

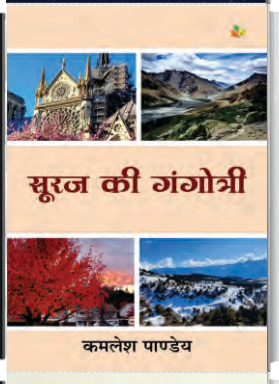

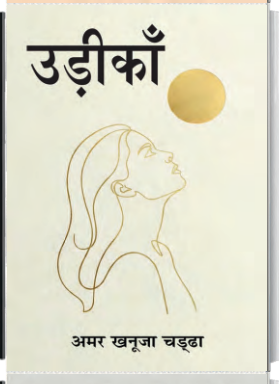

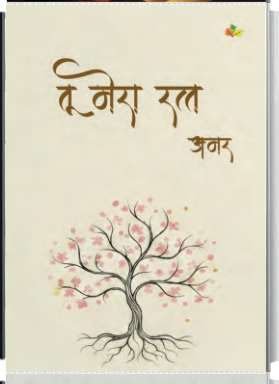

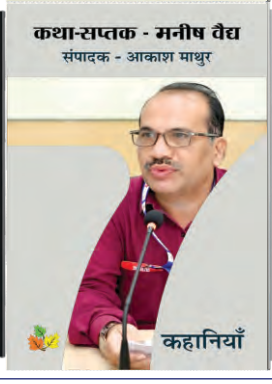

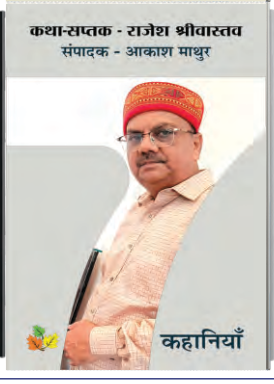

शिवना प्रकाशन एलएलपी, शॉप नं. एल 7-8, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
फ़ोन- 07562-405545, 07562-490372, मोबाइल- +91-9806162184 (शहरयार), व्हाट्सएप- +91-6265665580
ईमेल shivna.prakashan@gmail.com वेबसाइट www.shivnaprakashan.com

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका द्वारा मध्यप्रदेश के सीहोर में चलाए जा रहे आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना के तहत स्थापित प्रशिक्षण केन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम

सीहोर में चलाए जा रहे बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र पर शिवना साहित्य समागम में उत्कृष्ट कार्य हेतु बच्चियाँ पुरस्कृत। अतिथिगण सर्वश्री- अनिल पालीवाल, उमेश शर्मा, अशोक राय, राजेश चांडक, हितेन्द्र गोस्वामी, सुनील भालेराव, राजकुमार राठौर।

सीहोर में चलाए जा रहे बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र पर शिवना साहित्य समागम में उत्कृष्ट कार्य हेतु बच्चियाँ पुरस्कृत। अतिथिगण सर्वश्री- अनिल पालीवाल, उमेश शर्मा, अशोक राय, राजेश चांडक, हितेन्द्र गोस्वामी, सुनील भालेराव, राजकुमार राठौर।

सीहोर में चलाए जा रहे बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र पर शिवना साहित्य समागम में उत्कृष्ट कार्य हेतु बच्चियाँ पुरस्कृत। अतिथिगण सर्वश्री- अनिल पालीवाल, उमेश शर्मा, अशोक राय, राजेश चांडक, हितेन्द्र गोस्वामी, सुनील भालेराव, राजकुमार राठौर।

सीहोर में चलाए जा रहे बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र पर शिवना साहित्य समागम में उत्कृष्ट कार्य हेतु बच्चियाँ पुरस्कृत। अतिथिगण सर्वश्री- अनिल पालीवाल, उमेश शर्मा, अशोक राय, राजेश चांडक, हितेन्द्र गोस्वामी, सुनील भालेराव, राजकुमार राठौर।

If Undelivered Please Return to :
P. C. Lab, Shop No. 3-4-5-6, Samrat Complex Basement, Opp. Bus Stand, Sehore, M.P. 466001
Phone 07562-405545, 07562-490372, Mobile 09806162184, 08959446244 07828313926

स्वत्वधिकारी एवं प्रकाशक पंकज कुमार पुरोहित के लिए पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001 से प्रकाशित तथा मुद्रक ज़ुबैर शेख़ द्वारा शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एम पी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश 462011 से मुद्रित।